

an>

title: Situation arising out of recent incidents in institutions of higher education in reference to Jawaharlal Nehru and Hyderabad Universities.

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया (गुना) : अध्यक्ष महोदया, हर नव वर्ष देश के नागरिकों के लिए एक आशा की किरण लेकर आता है लेकिन पिछले 50 दिनों में जो घटनाएं हमारे देश में घटी हैं, चाहे आतंकवादियों द्वारा पठानकोट में घुसपैठ करके देश की एकता-अखंडता पर पूर्ण-विह्वल लगाने की कोशिश की गई हो, जिसमें सरकार की विफलताएं भी उजागर हुई हैं और चाहे किसी विश्वविद्यालय में एक मामूली छात्र को आत्महत्या करने के लिए इस सरकार द्वारा मजबूर किया गया हो, चाहे दूसरे विश्वविद्यालय में छात्रों के ऊपर राष्ट्रद्रोह का इल्जाम लगाया गया हो, इन घटनाओं से सरकार की मंशा साफ हुई है। आज यह मूल प्रश्न हम सभी के सामने है कि सरकार का क्या कर्तव्य है? सरकार का कर्तव्य लोकतंत्र के सिद्धांतों की हिफाजत करना और नागरिकों के कल्याण के लिए एक नई सोच विचारधारा को अर्जित करना है या कुछ और है? यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा यदि मैं यह कहूँ कि सरकार का यह उत्तरदायित्व नहीं बनना चाहिए, बल्कि यह सरकार का धर्म बनना चाहिए।

15.00 hours

हमने पिछले दो वर्षों में देखा है कि देश में असहिष्णुता का वातावरण बढ़ रहा है और पूरे देश में विरोधाभास को कुचलने का हर संभव प्रयास किसी भी तरह से किया जा रहा है। एक ऐसा वातावरण देश में निर्मित किया गया है जहां हर नागरिक और इंसान अपने आपको सुरक्षित नहीं समझता है। पिछले सत्र में हमने संविधान के निर्माता बाबा साहब अम्बेडकर की 125वीं जयंती मनाई थी। 26 नवम्बर हमने संविधान दिवस के रूप में मनाया था और बाबा साहब के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दर्शाती थी लेकिन आज मुझे हिंदी की एक कविता याद आती है कि "छाथी के दांत खाने के और, और दिखाने के और।" सदन में प्रवचन दिया गया कि संविधान के मूल्यों की सुरक्षा हमें करनी चाहिए और सदन से बाहर संविधान के अधिकारों को हर रोज़ बर्बात से कुचला जा रहा है और सरकार की सोच इससे प्रमाणित भी होती है। सरकार एक ही सोच प्रचारित करना चाहती है कि एक ही धर्म, एक ही संस्कृति और एक ही सोच इस देश में चलेगी जबकि हमारे देश की एक विरासत वसुधैव कुटुम्बकम है। पूरा विश्व एक परिवार है और उसमें यह संकीर्ण विचारधारा नहीं चलेगी। एक व्यापक दृष्टिकोण हमने अपनाना ही होगा और मैंने यह बात पहले भी कही है कि हमारा देश एक गुलदस्ता है, जिसमें हर जाति, हर धर्म के फूल की सुगंध पूरे विश्व में उजागर होती है और यही हमारे देश की विशेषता भी है।

प्रधानमंत्री महोदय ने कई बार देश के नौजवानों के बारे में संदर्भ दिया है। डेमोग्राफिक डिविडेंड की बात कही जाती है कि कैसे हम अपने नौजवानों को शिक्षित करें, कैसे हम अपने नौजवानों को कुशल करें। मैं सहमत हूँ कि अगर देश की कोई आधारशिला है तो वह युवा हैं। वही हमारी ताकत है लेकिन आज देश में युवाओं की क्या स्थिति है। महोदया, आपके और हमारे राज्य मध्य प्रदेश में व्यापम कांड हुआ है। पंजाब में ड्रग्स पूरी तरह से प्रादेशिक स्तर पर फैला हुआ है। एफटीडीआई की संस्था पर लोगों की आवाज को बंद किया गया है। रोहित वैमूला जी की आत्महत्या, उनकी दर्दनाक मौत और केंद्रीय मंत्री के आदेश के दबाव में आकर यह घटना घटी और वे मंत्री जिन्होंने संविधान की शपथ ली थी, सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग किया गया। ऐसा इसलिए किया गया कि अगर कोई विचारधारा आपसे या मुझसे भिन्न हो तो उस विचारधारा को कुचला जाना चाहिए, यही इस सरकार की सोच है। रोहित वैमूला जी की आत्महत्या के बाद यही बात सामने आती है कि सरकार की क्या सोच है। अंग्रेजी में एक कहावत है कि It is either my way or the highway. रोहित ने अपनी आत्महत्या के पत्र में एक वक्तव्य दिया था, उसे मैं कोट कर रहा हूँ।

"My birth is my fatal accident. I can never recover from my childhood loneliness. The unappreciated child from my past."

इस वाक्य को हमें अपने दिल में बार-बार दोहराना होगा। कार्ल सगान की तरह यह विज्ञान का लेखक बनना चाहता था। इनकी माँ दर्जी हैं और इनके पिता एक सुरक्षाकर्मी हैं। इन्होंने अपनी जीवन की कमाई के आधार पर अपने बेटे को हैदराबाद की सेंट्रल यूनिवर्सिटी में पीएचडी पूरी करने के लिए एडमिशन दिलाया था। लेकिन इस नौजवान ने एक गलती की और वह यह थी कि जो वह सोचता था, उसे व्यक्त करने का साहस उसने किया। वह एक जोशपूर्ण छात्र था। वह अनेक मुद्दों पर चर्चा करता था। बाबा साहब अम्बेडकर की चर्चा करता था, साप्ताहिक दंगों पर चर्चा करता था।

महोदया, यह बात सही है कि आंदोलन और झगड़े विश्व के किसी भी विश्वविद्यालय का एक महत्वपूर्ण अंग होते हैं लेकिन हमें एक ऐसा कुलपति चाहिए जो उस स्थिति को संभाल पाए और सुलझा पाए। पर इस कुलपति ने तो हर हद पार कर दी। रोहित के साथ चार छात्रों को निलंबित किया गया। केवल उनको निलंबित ही नहीं किया, बल्कि उनकी छात्रवृत्ति भी भंग कर दी। उसके साथ उनको हॉस्टल से भी बर्खास्त कर दिया, उनको बाहर टेन्ट में रहने के लिए मजबूर कर दिया। कॉलेज परिसर में भी उन लोगों का प्रवेश वर्जित किया गया। उस पर आर्थिक-सामाजिक दबाव डाला गया। यह इसलिए किया गया क्योंकि भाजपा और संघ परिवार की राजनीतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनी पड़ी। हिन्दू श्वास्त्रों को भी छिन्न-भिन्न कर दिया गया। उस कुलपति ने अधिकार और बहिष्कार के प्रिंसिपल्स का इस्तेमाल किया 'pitting the excluded against the entitled.' इसी सोच और इस विचारधारा में हमारी सरकार के केन्द्रीय मंत्रियों, यदि मैं कहूँ तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी, ने उसमें अनुचित दखलंदाजी की है। हमारे मंत्री जी श्री दत्तात्रेय साहब ने अपनी विद्वि में रोहित के बारे में क्या कहा?

I quote: "â€¦ casteist, extremist and anti-national â€¦"

एक नौजवान छात्र के बारे में ऐसा कहा। ... (व्यवधान)

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI): Madam, my only solemn request, is that the letter he is quoting â€¦. ... (Interruptions)

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA: I am not yielding. ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Whatever you want to say, you can say at the time of your reply.

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : अध्यक्ष महोदया, उसके बाद हमारी मानव संसाधन मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी जी ने चार महीनों में पाँच विद्विष्यों लिखीं कि जल्द से जल्द कार्यवाही होनी चाहिए। ... (व्यवधान) मैं इस सदन में यह कहने के लिए विवश हूँ कि क्या बाबा साहब अम्बेडकर की यह सोच चलाया राष्ट्रद्रोह करना है। इस प्रश्न का उत्तर हमें इस सदन में देना होगा। पूरे प्रशासनिक अमले का दुरुपयोग किया गया ताकि संघ परिवार की नीति और कार्यक्रम सफल हो पाए। असलियत यह है कि कुछ छात्रों के खिलाफ पूरा भारत सरकार का पड़ा टूट पड़ा। क्या हमने भारत के इतिहास में कभी भी यह देखा है कि एक विश्वविद्यालय की कार्य प्रणाली के आधार पर भारत सरकार का इतना दस्तक्षेप हो।

बाबा साहब अम्बेडकर जी ने हमें क्या सिखाया? उन्होंने कहा- "शिक्षित बनो, संगठित हो और अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज़ को उठाओ।" ... (व्यवधान) एक तरफ यह सरकार बाबा साहब अम्बेडकर जी के मूल्यों का प्रचार कर रही है और बाहर जाकर दलितों के ऊपर अत्याचार कर रही है। ... (व्यवधान) यह है इनकी कथनी और करनी में अंतर। इस सरकार की असलियत का पर्दाफाश धीरे-धीरे जरूर हो रहा है। मुझे आश्चर्य हुआ, हमारे प्रधानमंत्री जी साधारण तौर पर हर मुद्दे पर दृष्टि करते हैं, लेकिन इस नौजवान छात्र की आत्महत्या पर इन्होंने पाँच दिनों बाद अपनी तुप्पी तोड़ी। वह भी तब, जब यह एक विश्वव्यापी मामला बन गया। जब "मन की बात" का समय आया तो उन्होंने एक शब्द भी इस नौजवान के बारे में नहीं कहा। मैं भारती के उस ताल को तो हम उनकी माँ को वापस नहीं लौटा सकते हैं, लेकिन कम से कम उनकी आत्मा को शांति देनी होगी, तो इन मंत्रियों के विरुद्ध कार्यवाही होनी ही चाहिए।

हम चाहते थे कि ऐवशन लिया जाए, लेकिन ऐवशन की बजाए, मैं आश्चर्यचकित रह गया जब कैबिनेट में इस बात पर बहस हो रही है कि एक साधारण छात्र दलित है या नहीं? इसमें हर सरकारी तंत्र का इस्तेमाल किया जा रहा है। मुझे राजनीति में ज्यादा अनुभव नहीं है, अभी इसमें केवल 15 वर्ष ही हुए हैं। मैंने कभी यह नहीं सुना कि ... (व्यवधान) आप सुनने की क्षमता रखें और अपनी असहिष्णुता का परिचय न दें। ... (व्यवधान) मैंने कभी यह नहीं देखा कि नेशनल सिविलिटी एडवाइज़र कैबिनेट को रिपोर्ट दे रहे हैं कि इस देश का एक व्यक्ति, एक नागरिक दलित है या नहीं। एनएसए की रिपोर्ट आती है कि वह दलित नहीं है। उसके बाद हमारे मंत्रिण - विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी, सामाजिक न्याय मंत्री एवं मेरे प्रदेश से आने वाले थापर चंद गहलोत साहब, अनुसूचित जनजाति मंत्री जुएल ओसम साहब, सभी एक के बाद एक टीवी इंटरव्यू दे रहे थे कि रोहित दलित नहीं है, नहीं है, नहीं है। क्या यह मूल्य हमारे देश में एक नागरिक के जीवन का है कि यह आन्युमेंट

चल रहा है कि वह व्यक्ति दलित है या नहीं? अगर हम यह एक मिनट के लिए मान भी लें कि वह व्यक्ति दलित नहीं था, चाहे वह कड़ेरा जाति के थे, ओबीसी या जिस किसी वर्ग में आते थे, क्या उससे हमारे मंत्रियों के ...* पर कमी आएगी?... (व्यवधान) क्या हमारे देश में यही मूल्य-सिद्धांत रह गया कि जाति के आधार पर हम कहेंगे कि किसी व्यक्ति के जीवन की कीमत रहेगी या नहीं और हम शोक जता पाएंगे या नहीं? आज इस सरकार को इस पूंज का जवाब देना होगा।... (व्यवधान) मैडम, इनको सुनना पड़ेगा।... (व्यवधान)

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI : Madam Speaker, as a woman, I would like to say that the word '...' (Interruptions)

Sir, when you are addressing a female Minister, the least you can do is not to use that word in the context of a woman... (Interruptions)

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA : I am not yielding... (Interruptions)

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: However, if that is how you would like to do your politics, let it be done; and I will answer... (Interruptions)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया: अध्यक्ष महोदया, कल माननीय राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में कहा,

"Political Democracy cannot last unless there lies at the base of it, a social democracy. "

माननीय अध्यक्ष : अगर कोई गलत शब्द होगा तो मैं बाद में देख लूंगी।

â€¦ (व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया: आज यह वास्तविकता है कि दलित और अल्पसंख्यक छात्रों के विरुद्ध भेदभाव हमारे संस्थानों में हो रहा है। हम अगर हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी की बात करें, ... (व्यवधान) अध्यक्ष महोदया, हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में आज जब कोई भी विद्यार्थी, जो दलित हो, किसी प्रशासनिक मामले के लिए जाता है, उसे बाहर खड़ा रहने के लिए कहा जाता है। अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों को गाइड मिलने के लिए अधिक समय लगता है। An Assistant Professor of Mathematics at the university has said:

"These are not as suicides but 'institutional murders'. They are the fallout of discriminatory caste-based interactions in classrooms and hostels."

Sir, the professor says that he recollects how one professor at the university told a student from a marginalized community that he was not fit for mathematics and would be better off being an agricultural labourer like his parents. He also recollects that 'another SC student was told that a Central university was not the right place for him. Instead he should enroll into a State varsity.'

अध्यक्ष महोदया, रोहित ने साधारण वर्ग के आधार पर स्कॉलरशिप में प्रवेश लिया था।... (व्यवधान) सुन लीजिए, आपकी भी बारी आएगी।

माननीय अध्यक्ष : प्लीज, आप लोग बैठिए।

â€¦ (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप लोग बैठिए, यह वया हो रहा है।

â€¦ (व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : प्रशासनिक अमले का इंतजाम कभी नहीं किया गया था, यूनिवर्सिटी के आधार पर।... (व्यवधान) रोहित से दो प्रोफेसर्स के द्वारा पूछा गया कि क्या वह आरक्षित कोटे से आया था या साधारण कोटे से आया था? हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में यह कोई पहली घटना नहीं है। पिछले छः सालों में तीन दलितों पर अत्याचार हुए।... (व्यवधान) आत्महत्या की थी।... (व्यवधान) सुन लीजिए।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप लोग बैठिए।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : न्यायिक जांच बैठाई गयी थी और उस समय कहा गया था कि हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी दलितों के लिए उपयुक्त नहीं है। इसके बावजूद मानव संसाधन मंत्री श्रीमती स्मृति जूबिन ईरानी जी टी.वी. पर जाती हैं और कहती हैं:

"This is not a Dalit versus Non-Dalit issue."

हम कोई कामना करें, आशा करें, कोई एक्शन लिया जाए, वह तो अलग है, लेकिन सरकार ने इस घटना से अपना पूरा पल्ला झाड़ लिया। रोहित ने कहा था कि 'my birth is my fatal accident'. हम अपने मां-बाप को नहीं चुनते, हम अपनी जाति को नहीं चुनते इस देश में। लेकिन केवल इस सरकार के कार्यकाल में एक दलित के रूप में पैदा होना एक फेटेलिटी और एवरीडेंट है, जो एक व्यक्ति को अधिक असमानता और कूरता के साथ अपना जीवन जीने के लिए विवश कर देती है या समय के पहले मौत का रास्ता अपनाने पर विवश कर देती है।

विश्वविद्यालय का क्या उद्देश्य है, क्या यह उद्देश्य है कि हम अटेंडेंस दें, क्या यह उद्देश्य है कि हम परीक्षा दें! विश्वविद्यालय का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों का आदान-प्रदान होना चाहिए। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है कि यथास्थिति को चुनौती दी जानी चाहिए। लेकिन जिस तरीके से रोहित की आत्महत्या की घटना हुई, एफ.टी.आई.आई. में विद्यार्थियों को विरुद्ध एक्शन लिया गया, जिस तरीके से जे.एन.यू. की घटना हुई, जिस तरीके से आई.आई.टी. मद्रास में अम्बेडकर पेरीयार सर्कल को निष्कासित किया गया है, यह सरकार नौजवानों की आवाज़ को बंद करना चाहती है, इसमें कोई दो राय नहीं है।... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, जे.एन.यू. ने इस देश की एकता और अखंडता तथा विकास के लिए काम किया है और बहुत योगदान दिया है।... (व्यवधान) मेरे सांसद भाई इतने उत्तेजित क्यों हो रहे हैं, वह सुन लें और फिर अपने जवाब में जो भी कहना है, वह कहें। आप असाहिष्णुता का परिचय मत दो, कृपया मेरी बात सुन लें।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: आप ऐसा क्यों कर रहे हैं। मेरा सभी से निवेदन है कि इसमें राजनीति न करें। अगर विश्वविद्यालयों में कुछ हो रहा है तो सबको गम्भीरता से इस बारे में सोचना है। इस तरह से कमेंट नहीं करना चाहिए। यह कोई दलित या और किसी के बारे में नहीं, बल्कि सबके बारे में सबने सोचना है।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : अध्यक्ष महोदया, जब अनुशासनात्मक घटना के लिए एक उच्च स्तरीय जांच गठित हुई है तो क्या सरकार को उसके परिणाम के लिए इंतजार नहीं करना चाहिए? गृह मंत्रालय के आदेश पर दिल्ली पुलिस कैम्पस में वती गई और जिसे चाह्य, उसे अरेस्ट कर लिया। आंतरिक प्रक्रिया को ताक पर रखकर वह संस्थान को पूरी तरह से नष्ट करने की कोशिश की गई है।... (व्यवधान) नारे लगे हैं और उन नारों का समर्थन मैं समझता हूँ इस देश का कोई भी वासी नहीं कर सकता।... (व्यवधान) पहले आप सुनने की क्षमता तो रखो। मेरी बात सुनो, तब ही समझो।... (व्यवधान) मैडम, मैंने अभी अपनी बात समाप्त नहीं की है।... (व्यवधान) बिघड़ी जी, आप बैठ जाएं। चिल्लाने के लिए आपके पास बहुत समय है। आपकी क्षमता भी बहुत अधिक है, आपकी आवाज़ की क्षमता भी बहुत है।

अध्यक्ष महोदया, उन नारों का समर्थन मैं समझता हूँ कि इस देश का कोई वासी नहीं कर सकता। उसकी जितनी कड़ी से कड़ी आलोचना करें, वह कम है। लेकिन आठ छात्रों के नारों के कारण...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: सिंधिया जी की स्पीच के अलावा और कुछ रिकार्ड में नहीं जाएगा।

..(व्यवधान)*

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : आठ हजार छात्रों के विश्वविद्यालयों पर कलंक लगाना इससे बुरी बात इस देश में कोई नहीं हो सकती।...(व्यवधान) योगी आदित्यनाथ जी द्वारा किसी भी विश्वविद्यालय के अंग-अंग को राष्ट्रद्रोह का नाम देना, इससे ज्यादा कोई अनुचित बात नहीं हो सकती।...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया, वे शांत हो जाएं, तो मैं अपनी बात कहूँ।

माननीय अध्यक्ष: आप बैठ जाएं। बिहारी जी, शांत हो जाएं। इधर भी सब सक्षम हैं जवाब देने में।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया: अध्यक्ष महोदया, यह इतने जोर से चिल्ला रहे हैं कि कहीं इन्हें बीमारी न हो जाए।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: बिहारी जी, चिंता न करें, आपके मंत्री भी सक्षम हैं, जवाब देने में, वे जवाब देंगे।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : वह इतने जोर से चिल्ला रहे हैं कि कहीं कोई इन्हें कठिनाई न हो जाए। मुझे इनके स्वास्थ्य की चिंता है। आठ छात्रों के कथन के आधार पर एक विश्वविद्यालय पर कलंक लगाना, इससे दुःखद घटना नहीं हो सकती है। सरकार के सांसद योगी आदित्यनाथ जी ने क्या कहा, मैं उनको कोट करूँगा- It has become a habit there. "Running with grants provided from the tax paid by the people, JNU has become a blot on education. Such an institution should be closed down in the interest of the nation." हमारे गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने इस घटना के बारे में क्या कहा, and, I quote: "देश को सत्वाइ समझने की जरूरत है। जेएनयू की घटना को दृष्टिगत रखते हुए सरकार को सख्त सख्त का समर्थन चाहिए।" जब यह बात पढ़ी कि उनकी कोई ट्वीट नहीं है तो फिर पूरे देश को दिखाने के लिए चेहरा नहीं रखा। क्या देश के गृह मंत्री जी को कोई भी वक्तव्य देने के पहले जांच-पड़ताल नहीं करनी चाहिए? मैं यह भी कहना चाहूँगा कि सरकार का जेएनयू के प्रति यह व्यवहार केवल 9 फरवरी के नारों के आधार पर नहीं है। यह सरकार चाहती है कि इस संस्था की आवाज को बंद किया जाए। क्योंकि, जेएनयू के छात्रों ने भगवा आतंकवाद का मुद्दा उठाया था, जेएनयू के छात्रों ने दादरी का मुद्दा उठाया था, जेएनयू के छात्रों ने यूजीसी भवन के सामने बजट की कटौती के आवाज उठाया था और जेएनयू के छात्रों ने रोहित वेमुला का मुद्दा उठाया था, इसलिए उनकी आवाज को बंद करने की कोशिशें की जा रही हैं।...(व्यवधान) पूरा यह है कि...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मोहम्मद सलीम जी, आप क्यों बोल रहे हैं?

â€!(व्यवधान)

HON. SPEAKER: You are also instigating. You please keep quiet.

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : अध्यक्ष जी, उस जेएनयू को यह बंद करना चाहते हैं, जहां देश के विदेश सचिव एस. जयशंकर जी उस संस्था से आए हैं, निर्मला सीतारमण जी आसी हैं, नीति आयोग के चेयरमैन उस संस्था से आए हैं और श्री सीताराम येचुरी जी इस संस्था से आए हैं। उस संस्था के प्रति इनकी यह सोच और विचारधारा है। मुझे तो इतना आश्चर्य हुआ कि जब इन छात्रों के विरुद्ध सीडिशन का चार्ज लगाया गया, जबकि वास्तविकता क्या है? हम उन नारों की कड़ी आलोचना करते हैं, विरोध करते हैं।...(व्यवधान) इसमें कोई दो राय नहीं है।...(व्यवधान) आप मेरी बात सुन लीजिए, उसके बाद आपको समझ में आएगा।...(व्यवधान) मैं चील्ड नहीं करने वाला हूँ।...(व्यवधान) मैं आपके दबाव में आने वाला नहीं हूँ। आप मेरी आवाज को इस संसद में बंद नहीं कर सकते हैं।...(व्यवधान) जो मुझे कहना है, वह आपको सुनना ही होगा, यह मैं आपसे सम्मानपूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ।...(व्यवधान) आप मुझ से बुजुर्ग हैं, मैं आपसे सम्मानपूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ।...(व्यवधान) आप फिर से खड़े हो गए हैं?...(व्यवधान) उन नारों की हम जितनी आलोचना करें, कम है। लेकिन केवल नारे देना अपराधीकरण की श्रेणी में नहीं आता है, राजद्रोह की श्रेणी में नहीं आता है।...(व्यवधान) अभी मैं सबूत भी दूंगा।...(व्यवधान) सुप्रीम कोर्ट का केदारनाथ सिंह का एक जजमेंट है।...(व्यवधान) मैं चील्ड नहीं करने वाला हूँ, आप जितना भी चिल्लाएं।...(व्यवधान) मुझे अपनी आवाज उठाने का हक है और आप मेरी आवाज को बंद नहीं कर सकते हैं। आप जितना भी चाहें, लेकिन मेरी आवाज को बंद नहीं कर सकते हैं। जितना हक आपको है, उतना हक मुझे भी है।...(व्यवधान) आप मेरे साथ सहमत न हों, मुझे कोई कठिनाई नहीं है, लेकिन आप मेरी आवाज को बंद नहीं कर सकते हैं। आप मेरा विरोध करो, मुझे कोई कठिनाई नहीं, लेकिन आप मेरी आवाज बंद नहीं कर सकते हैं। यह हक मुझे मेरे देश के संविधान ने दिया है।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : यह क्या हो रहा है? आप लोग बैठ जाइए।

â€!(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज बैठिये, यह क्या हो रहा है? ज्योतिरादित्य जी, आप भी स्पीकर को संबोधित कीजिए, यह राजवाड़ा चौक की सभा नहीं है। आप उन्हें वर्यो संबोधित कर रहे हैं?

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया: सांसी मैडम, मैं सहमत हूँ, मैं आपके साथ सौ प्रतिशत सहमत हूँ। केदारनाथ सिंह के मुकदमे में उच्च न्यायालय के पांच जजों का फैसला है कि राष्ट्रद्रोह मतलब Sedition only if there is 'incitement to violence or public disorder' साबित हो सके, नहीं तो सिडिशन नहीं हो सकता और इसके साथ कान्ट्रीट्यूशन बैंक के तीन जजमेंट्स हैं - इंदिरादास वर्सेज स्टेट ऑफ आसाम, अनूपबहन वर्सेज स्टेट ऑफ आसाम एंड बलवंत सिंह वर्सेज स्टेट ऑफ पंजाब। केवल शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करना, जिसकी हम निंदा करेंगे, आप करेंगे, हम करेंगे, यह पूरा सदन करेगा, इसमें कोई दो राय नहीं है। लेकिन राष्ट्रद्रोह और सिडिशन में यह मामला नहीं आ सकता, भाजपा के कई वकील हैं, जो स्वयं इनको कह देंगे कि यह सिडिशन में नहीं आ सकता। इसके बाद महोदया मैं पूछना चाहता हूँ कि दिल्ली पुलिस ने कन्हैया को सिडिशन के मामले में आरोपी क्यों बनाया, इसलिए आरोपी बनाया, क्योंकि कन्हैया आरएसएस की विचारधाराओं के साथ सहमत नहीं है और इसलिए भी क्योंकि कन्हैया इलैगल में एबीवीपी के प्रत्याशी को हराकर अध्यक्ष बना, इसलिए उसके विरुद्ध यह चल रहा है।

माननीय अध्यक्ष : बार-बार किसी संस्था का नाम लेना आवश्यक नहीं है, आरएसएस का नाम लेना आवश्यक नहीं है।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : हम कन्हैया का नाम ले सकते हैं। राष्ट्रवाद के मामले में परिभाषा हमें कौन सिखायेगा। आपकी सोच और हमारी सोच में भिन्नता हो सकती है।...(व्यवधान) अध्यक्ष महोदया, आपकी सोच और विचारधारा तो हमारे ऊपर पूरी तरह से लागू होती है, लेकिन हमारी सोच में भिन्नता हो सकती है। जैसे कि मैं कहूँ कि जो साक्षी महाराज जी ने कहा कि नाथूराम गोडसे देशभक्त है, मैं कह सकता हूँ कि वह राष्ट्रद्रोह के मामले में आना चाहिए। कन्हैया के ऊपर आपने राष्ट्रद्रोह लगा दिया, लेकिन यहां राष्ट्रद्रोह लगाने के लिए आप तैयार नहीं हैं, जिसने हमारे राष्ट्रपिता का कत्ल किया, उसे राष्ट्रभक्त कहा जाता है, उसमें कोई कठिनाई नहीं है। इसलिए हमें यह बात सुनिश्चित करनी होगी कि कन्हैया ने जो कहा और बिना सबूत उसे अरेस्ट किया गया। जो वीडियो दिखाया गया है, उसमें छेड़छाड़ की गई है और जी न्यूज के उस रिपोर्टर विश्व दीपक ने स्वयं इस्तीफा दिया है और उसने स्वयं कहा है -

"the video which had no 'Pakistan Zindabad' slogans in it, we played it repeatedly to spread madness. How did we establish that Kanhaiya and his associates were chanting slogans when all we heard were voices coming from the darkness? Our biases made us hear Bhartiya Court Zindabad as Pakistan Zindabad."

जिस व्यक्ति के विरुद्ध कोई सबूत नहीं है, उसे आपने राष्ट्रद्रोह में अरेस्ट कर लिया, कोर्ट में पेशी की जा रही है, पुलिस की बीस गाड़ियों का काफिला है। पुलिसकर्मी सब बैठे हुए हैं, वह निकलता है गाड़ी से, पत्रकारों को पीटा जाता है, उसे पीटा जाता है, वकीलों को पीटा जाता है और पुलिस मूकदर्शक के रूप में खड़ी हुई है, साइलेन्ट स्पैक्टेटर्स, मूकदर्शक के रूप में खड़ी हुई है और इसके पीछे जो लोग ...*, जो भाजपा के समर्थक हैं, वे क्या कहते हैं, वे कहते हैं

...* पैट्रोल बम्ब भी लेकर आऊंगा मैं, कुछ भी मुकदमा लगे, मर्डर का भी लगेगा, छोड़ूंगा नहीं मैं। मैं जेल जाऊंगा, अगर मैं अरेस्ट हुआ तो मैं कन्हैया वाली जेल में जाना चाहता हूँ, साते को वहीं

जाकर मारूंगा, सच बताऊं पुलिस हमें फुल सपोर्ट कर रही थी।"

यह उनका कोट किया हुआ है। जिस व्यक्ति के विरुद्ध सबूत नहीं हैं, उसे आप राष्ट्रद्रोह में अरेस्ट कर तो और जो व्यक्ति लोगों को पीटें इस प्रजातंत्र के स्तंभ कोर्ट में, उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं, कल रात तक जब उनको अरेस्ट किया गया और फिर उन्हें बेल दी गई। परंतु वह जो छात्र है, वह अभी भी जेल में पड़ा हुआ है और इन लोगों को बेल दी जाती है।

अध्यक्ष महोदया, भाजपा के विधायक, ... *ने तो कमाल कर दिया। ...*

सीपीआई(एम) के एक कार्यकर्ता को जमीन पर पटक-पटक कर मारा गया और वह वया कहते हैं, वह कहते हैं...

माननीय अध्यक्ष : किसी का भी नाम नहीं जायेगा, जो यहां मौजूद नहीं हैं।

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : वे कहते हैं कि अगर बंदूक होती तो मैं गोली भी मार देता। ... (व्यवधान) कोई मॉ को गोली देगा तो वया उसे मारेंगे नहीं? आज भाजपा की सरकार इन लोगों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं कर रही है। साक्षी महाराज जी वया कहते हैं कि इन राष्ट्रद्रोहियों के खिलाफ तो सीधा फांसी का फंदा या पुलिस की गोली होनी चाहिए, आजीवन कारावास तो बहुत कम रहेगा, नहीं तो गलत बातें होती रहेगी। इसके साथ अनेक प्रश्नों से सरकार के विधायकगण, उनमें से एक **श्री** *राजस्थान से भाजपा के विधायक कहते हैं कि राहुल गांधी देशद्रोही है। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : किसी का नाम नहीं जाएगा, अनेक विधायक कहिए।

श्री (व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : वे कहते हैं कि **श्री** *देशद्रोही है, उनको गोली से उड़ा देना चाहिए, जो भारत माता की ओर उंगली उठाए। ... (व्यवधान) महोदया, इस संसद में एक सांसद के विरुद्ध ऐसे शब्द उपयोग किए जाएं और सरकार मूकदर्शक के रूप में खड़ी हुई है। ... (व्यवधान) वया यह हम लोगों का लोकतंत्र है? वया ये हमारे नियम हैं, वया ये हमारी परंपरा हैं। आज परंपराओं की बात की जाती है और कहा जाता है कि जो कांग्रेस का स्वर्णिम इतिहास है, राष्ट्रभक्ति का, हमारे प्रधानमंत्रियों इंदिरा जी और राजीव जी, दोनों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है। सरदार बेअंत सिंह, जो पंजाब के मुख्य मंत्री थे, उन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया है। वी.सी. शुक्ला जी ने अपने जीवन का बलिदान दिया है और आज यह सरकार हमको राष्ट्रभक्ति की सोच और विचारधारा देने वाली है। ... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, यह सरकार जो **श्री** *की विचारधारा की उत्तराधिकारी है और 52 वर्ष आरएसएस के कार्यालय में देश का तिरंगा झंडा नहीं लगा, एक आत्महत्या हुई और कुलपतियों की मीटिंग बुलाई गई कि हर सेंट्रल युनिवर्सिटी में 207 फुट ऊंचा भारत का झंडा फहराना चाहिए। महोदया, यह वया मज़ाक है? ... (व्यवधान) दिल्ली में अफ़ज़ल के प्रदर्शनकारियों के विरुद्ध राष्ट्रद्रोह का मुकदमा और यहां जम्मू कश्मीर में सरकार बनाने के लिए जिस पीडीपी ने कहा कि अफ़ज़ल गुरू की फांसी अन्याय है, उनके साथ हाथ मिला कर यहां सरकार बना रहे हैं। ... (व्यवधान) यह कहां का कथन है?

महोदया, जिस पूर्व की सरकार ने आतंकवादियों को सरकारी प्लेन में बिठा कर कंधार छोड़ा, वही मसूद अज़हर पठानकोट का मास्टरमाइंड है। अब ये लोग हमें राष्ट्रभक्ति का उत्त्वारण देने। महोदया, अंत में मैं यही कहना चाहता हूँ कि हर साल नए नारे निकलते हैं। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मैंने बोल दिया है कि कोई नाम नहीं जाएगा।

श्री (व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : पिछले साल डिजिटल इंडिया और मेक इन इंडिया था। इस साल स्टार्ट-अप इंडिया और स्टैंड-अप इंडिया है। असलियत है कि आज हमारे नौजवान को सम्मान चाहिए। Live and let live in India. प्रधान मंत्री जी ने 4 डी का मंत्र दिया। D for Democracy; D for Demography; D for Demand; and D for Deregulation. डैमोक्रेसी के मामले में अपने विचार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कुचली गई। डैमोग्राफी के मामले में हमारे नौजवान सड़क पर खड़े हैं। डिमांड के मामले में किसान आत्महत्या कर रहा है और डीरिग्युलेशन में विश्वविद्यालय पर शिकंजे पर कस कर उसकी पूरी स्वतंत्रता खत्म की जा रही है। आपका नारा सबका साथ, सबका विकास था। आज देश का नागरिक विवश हो कर सड़क पर खड़ा है, पूछ रहा है कि किसका साथ और किसका विकास?

धन्यवाद।

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर): अध्यक्ष महोदया, एक आवाज़ उस नौजवान की, जब उसने शहादत से पहले एक ब्लाग लिखा। कैप्टन पवन कुमार, मात्र 22 वर्ष आयु, लेकिन जाने से पहले अंतिम लाइन जो लिख कर गए थे, अपने फेसबुक पर जो लिखा कि किसी को रेज़र्रेशन चाहिए, तो किसी को अज़ादी भाई, हमें कुछ नहीं चाहिए भाई, बस अपनी रज़ाई। सीमा पर बैठा वह नौजवान देश की सेवा कर रहा था। दूसरी ओर तांस नायक हनुमथप्पा जिन्होंने भारत माँ के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, उनको पाया तो बर्फ की रज़ाई में पाया गया। ये वे नौजवान हैं, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन दिया, जिन्होंने तिरंगे के लिए अपनी कुर्बानी दी, जो इनके लिए मात्र एक नारा है, एक झंडा है, वह अपने देश के लिए मर मिटने के लिए तैयार होता है, तो वह देश का फौजी होता है। वह उनका 22 साल का इकलौता बेटा था। बाप के दिल में वया आई होगी, मैडम मैं आपसे पूछना चाहता हूँ? जिसने टीवी के सामने आकर पूरी दुनिया को कहा कि मेरा इकलौता बेटा था, देश के लिए जीना-मरना चाहता था, देश के लिए शहीद हुआ है, मुझे उस पर गर्व है, गर्व है, गर्व है।

महोदया, पूरे देश को उसके ऊपर गर्व है, लेकिन इनके ऊपर लज्जा आती है, क्योंकि आप उनके घर तो नहीं जा पाए, वे भी जेएनयू के... (व्यवधान)

SHRI MOHAMMAD SALIM (RAIGANJ): How can you put it against the Opposition? ... (Interruptions)

SHRI K.C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): Madam, this should not be allowed. ... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए।

श्री (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप इधर बोलिए।

श्री (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, जेएनयू की डिग्री उनको मिली थी।... (व्यवधान) मैडम, क्योंकि यहाँ पर जेएनयू का नाम लिया गया, अगर जेएनयू की बात यहाँ पर की जा रही है तो सत्त्वादेश के सामने आनी चाहिए।... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record except the speech of Shri Anurag Thakur.

...(Interruptions)â€¦*

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : यह केवल जेएनयू को बदनाम करने का प्रयास किया गया।...(व्यवधान) जेएनयू में माओवादी विचारधारा को समर्थन करने वाले हो सकते हैं, अतनावादी को समर्थन करने वाले वहाँ पर होंगे।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ऐसा नहीं होता है। आप बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: I will see the records.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Please sit down.

â€¦(व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : लेकिन यही कांग्रेस के नेता कैप्टन पवन कुमार के घर तक नहीं पहुँच पाए, लेकिन देश को तोड़ने वालों के पास जेएनयू में यहीं चले गए थे।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : बैठिए-बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, आखिर ऐसा क्या हुआ?...(व्यवधान) मैडम, क्या हुआ 9 फरवरी को?...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज बैठिए। कोई अनकांस्टीट्यूशनल नहीं है।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आई विल सी दी रिकार्ड। प्लीज बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : जहाँ श्रीनगर में 22 फरवरी को 48 घंटे हमारे फौजी सैनिक भारत के लिए लड़ते हैं, भारत राष्ट्र के लिए लड़ते हैं, वहाँ पर कांग्रेस के नेता राजनीति उन लोगों के लिए करते हैं।...(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Are you yielding?

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Are you yielding to them?

...(Interruptions)

SHRI ANURAG SINGH THAKUR : Madam, I have not taken anyone's name. ...(Interruptions)

HON. SPEAKER: He has not taken anyone's name.

...(Interruptions)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, ये स्वयं समझदार हैं।...(व्यवधान) क्या मैंने किसी का नाम लिया है?...(व्यवधान) ये अपने आप...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : किसी का नाम नहीं लिया है, आप बैठिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, अगर आप पोस्टर देखेंगे।...(व्यवधान) ये उस दिन के कल्चरल इवनिंग के इशतहार हैं।...(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : ये चील्ड नहीं कर रहे हैं। मैं क्या करूँ?

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: He is not yielding.

...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आपने भी चील्ड नहीं किया था, इन्होंने भी नहीं किया। मैं क्या कर सकती हूँ?

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अगर उन्होंने कुछ गलत बोला होगा तो आई विल सी दू इट। I will see the records.

â€¦(व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, जो इन्टॉलरेंस की बात करते हैं, जो थोड़ी देर पहले कह रहे थे कि इनकी आवाज बन्द नहीं की जाती, अगर आपकी आवाज बन्द नहीं तो मेरी आवाज भी बन्द

नहीं की जा सकती।... (व्यवधान) हम आम आदमी रजवाड़ा परिवार से नहीं आए हैं, लेकिन हमारी आवाज भी बन्द नहीं की जा सकती। हम भी इस सदन के सदस्य हैं।... (व्यवधान)

SHRI MOHAMMAD SALIM (RAIGANJ): Madam, please see the record. ... (Interruptions)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, यह 9 तारीख को क्लवर्टल इवनिंग के नाम पर क्या-क्या लिखा गया। लिखा गया कि 'Against the judicial killing of Afzal Guru and Maqbool Bhat!'

लोकतंत्र के इस मन्दिर में जहाँ मोदी जी चुनकर आते हैं तो वहाँ पर शीश झुकाकर, उसका वन्दन करके अन्दर आते हैं, जिसकी सुरक्षा के लिए दिल्ली पुलिस के जवान, हमारे यहाँ के माली और पार्लियामेंट के सुरक्षा गार्ड शहादत दे देते हैं और जो उसको अंजाम देने वाला अफजल गुरु है, उसके नाम पर जो बड़ा-बड़ा प्रोग्राम 9 तारीख को करते हैं, उनके साथ जाकर आपके नेता सड़े हो जाते हैं।... (व्यवधान)

SHRI K.C. VENUGOPAL (ALAPPUZHA): You are doing it with PDP in Kashmir. ... (Interruptions)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : आपको यह तय करना होगा कि आप अफजल गुरु के साथ हैं, आप संसद पर हमला करने वालों के साथ हैं या संसद को बचाने वालों के साथ हैं।... (व्यवधान) आपको यह तय करना होगा।... (व्यवधान) यह तय करना होगा कि जान लेने वालों के साथ या जान बचाने वालों के साथ हो, यह कांग्रेस पार्टी को तय करना होगा।... (व्यवधान)

महोदया, देश जवाब चाहता है।... (व्यवधान) आज दूध का दूध और पानी का पानी हो जाना चाहिए।... (व्यवधान) आज देश जवाब माँगना चाहता है।... (व्यवधान) मैं भावुक इसलिए भी हूँ कि मेरे दादा फौजी थे।... (व्यवधान) मेरे पिता जी ने इसी सदन में वन रैंक वन पेंशन का मुद्दा सबसे पहले उठाया।... (व्यवधान) हमारी सरकार ने वन रैंक वन पेंशन के मुद्दे को भी आकर पूरा किया है। हमने देश के फौजियों के लिए, देश की सेना के लिए अपनी जान न्योछावर करने वालों के लिए भारतीय जनता पार्टी ने करके दिखाया है। राष्ट्रवाद की बात की जाए तो मैं वापस उसी मुद्दे पर आता हूँ। आखिर 9 फरवरी को ऐसा क्या हुआ? आखिरकार यह मशाल जुलूस किसके लिए? अफजल गुरु कौन था? मैं आपसे सवाल पूछता हूँ। कहीं गए? वते गए क्या? ... (व्यवधान) अभी तो मेरे सवाल ही शुरू नहीं हुए। अब मैं जवाब किससे माँगूँ? (Interruptions) * / *

HON. SPEAKER: Nothing will go on record, except the speech of Shri Anurag Singh Thakur.

... (Interruptions)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर: मुझे आपके माध्यम से यह सवाल सदन से पूछना है। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अनुराग जी एक मिनट बैठिये, मेरा आप सबसे निवेदन है कि यह सेंसिटिव इश्यू आप सबने वर्ता के लिए चुना है। इसलिए सबको एक एक की बात सुननी पड़ेगी। जिस मैम्बर को मैं कहूँगी, केवल उनकी बात रिकार्ड पर जाएगी। I am sorry, आप अपने बारे में जवाब दे सकते हैं मगर no interference. किसी और की बात रिकार्ड पर नहीं जाएगी। जो बोलेगा, केवल वही बात रिकार्ड पर जाएगी। Please don't try to do this. आपने विषय चुना है। सबको मालूम था कि सेंसिटिव इश्यू है, यह होना है। अब थोड़ा सुनना पड़ेगा। आपकी जब बारी आएगी तो You can give your reply. अगर कोई गलत बात बोली जाएगी तो मैं रिकार्ड से निकाल दूँगी। I will go through the record, if there is anything objectionable.

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : मैडम, 9 तारीख के वे इशतहार बताते हैं और यह पृथ्वी देश के सामने खड़ा होता है कि अफजल गुरु कौन था। यह सवाल आज देश जानना चाहता है और मैं कांग्रेस अध्यक्ष से आपके माध्यम से पूछना चाहता हूँ कि क्या अफजल गुरु आतंकवादी था या नहीं था? जिसकी शहादत के नाम पर प्रोग्राम आर्गनाइज़ किया गया, वहाँ पर राहुल गांधी उस डीएसयू के लोगों के साथ क्यों खड़े थे, देश यह सवाल पूछना चाहता है। इस लोकतंत्र पर हमला करने वालों के साथ आपका नौजवान नेता क्यों खड़ा था, इसका जवाब देश पूछना चाहता है, इसका जवाब आपको देना होगा। इस सवाल से आप भाग नहीं सकते। इस पर लिखा है - 'अफजल, तुम्हारे अरमानों को हम मंजिल तक पहुँचाएँगे।' कौन से अरमान थे अफजल के, कौन है अफजल गुरु, यह देश जानना चाहता है, जिसको फौसी देने के लिए आठ साल तक इंतज़ार करना पड़ा 2014 के चुनाव से पहले। ... (व्यवधान) तय आपको करना है। मैडम, यह जो प्रोग्राम आर्गनाइज़ करने वाले थे, यह संस्था डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स यूनियन जो संस्था है, आखिर यह कौन सी संस्था है? मैडम, मुझे इतना जरूर पता है कि आखिरकार डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स यूनियन संस्था क्या है, यह सवाल भी देश के सामने खड़ा होता है। आखिर जिनके साथ जाकर राहुल गांधी जी कंधे से कंधा लगाकर बगैर सोचे, किक मारकर वहाँ पर मोटरसाइकिल पर पहुँचे, सीसी, मोटरसाइकिल नहीं, गाड़ी पर पहुँचे थे। जब वहाँ पर पहुँचे तो वहाँ पर जाकर किनके साथ बैठे डीएसयू के साथ। डीएसयू क्या है? अगर आप 18 फरवरी 2014 का पृथ्वी देखें जो ए.टी.नाना पाटील ने लोक सभा में पूछा और आर.पी.एन.सिंह उस समय गृह राज्य मंत्री थे। इन्हीं की पार्टी के थे। शायद अब इस सदन में नहीं हैं। उसमें पृथ्वी पूछा गया था कि ऐसी कौन कौन सी संस्थाएँ हैं जो नक्सलवादियों को समर्थन करती हैं?

उसके जवाब में उन्होंने कहा : On occasions, during operations by security forces, the CPI Maoists underground cadre shift to softer areas including urban areas looking for safer hide-outs. On such occasions, the over-ground front organization provides safe hide-outs to the armed cadres. They also adapt at dissemination of propaganda and disinformation to demonise the State and the security forces. The list of the active frontal organization of the CPI Maoist operating in the country is annexed.

उसमें क्या है, हर जगह डी.एस.यू. से लेकर उन संस्थाओं के नाम हैं, जिनके साथ जाकर राहुल गांधी जी जे.एन.यू. में बैठे थे। ... (व्यवधान) मैडम, एक तरफ इनकी सरकार का ये पत्र है, मेरा नहीं है, इन्हीं की सरकार के समय गृह राज्य-मंत्री ने दिया है और हो सकता है, राहुल जी, ज्योतिरादित्य जी 15 साल से सांसद हैं, केवल 14वीं, 15वीं और 16वीं लोक सभा के सदस्य के रूप में मैंने भी सदन को देखा है। सलीम भाई, आप उन पांच सालों में नहीं थे, आप चुनकर नहीं आये थे, आप 14वीं लोक सभा के सदस्य नहीं थे, मुझे याद है, उस समय क्या हुआ था। While the recent programme of Afzal Guru was organised by the activists of DSU, Jawaharlal Nehru University Students Union (JNUSU) President, Kanniya Kumar, वाइस प्रेसीडेंट ए.एस.आई. से हैं और एक और वाइस प्रेसीडेंट हैं, ए.आई.एस.ए. से हैं, ये कौन सी संस्थाएँ हैं? कम्युनिस्ट विचारधारा की माइवसस्ट से, बाकी सबसे जुड़ना, आखिर ये क्या करते हैं?

जे.एन.यू. की ग्राण्ट क्या पिछले डेढ़ साल में कम हुई? मैं चाहूँगा, स्मृति जी उस समय भी जवाब दें, हमने न किसी का कोई पैसा कम किया है, न कोई सुविधाएँ कम की हैं, लेकिन देश के टैक्स पेयर का पैसा किसी को देश के खिलाफ भड़काने के लिए खर्च करना है तो क्या यह करना चाहिए या नहीं करना चाहिए, मैं इस पर अपनी बात नहीं कहूँगा, आपके माध्यम से मैं सदन के सामने यह सवाल छोड़ना चाहता हूँ। टैक्स पेयर पूछता है कि पैसा मेरा काटते हो, सब्सिडी वहाँ पर देते हो, लेकिन तिरंगे झंडे को अपमानित करने वाले, देश के सैनिकों को अपमानित करने वालों को क्या वहाँ बिठाकर, इकट्ठा करके रखोगे। मैडम, यह नहीं चलेगा और यही नहीं, अगर आप इसके बाद देखें, वहाँ पर नारे क्या लगे थे, नारे लगे 'कश्मीर की आजादी तक, जंग रहेगी। भारत की बर्बादी तक, जंग रहेगी।' आगे क्या कहा, सुनिये, अभी तो 6-7 हैं, मैं 25 में से 6 सुनाऊँगा। 'बन्दूक के दम पर लेंगे आजादी, और किसकी आजादी, गो इंडिया-गो बैक। इंडियन आर्मी मुर्दाबाद।... (व्यवधान) चैन से नहीं बैठेंगे।' मैडम, आगे सुनिये, अगर इनमें से भारत के पक्ष में कोई भी एक व्यक्ति है, अगर ये भारत के पक्ष में हैं और अगर सदन पर हमला करने वालों को शहीद कहा जाता है और उनके पक्ष में क्या नारे लगाये जाते हैं, 'चैन से नहीं बैठेंगे, भारत की बर्बादी तक।' ये नारे लगे। 'भारत के टुकड़े होंगे, इंशा-अल्लाह, इंशा-अल्लाह।' और आगे नारा लगा, 'अफजल गुरु, मकबूल बद्-जिन्दाबाद-जिन्दाबाद' नारे लगे। 'किताबे अफजल मारोगे, घर-घर से अफजल निकालेंगे।' क्या ये सदन के सदस्य कोई और पार्लियामेंट, सदन पर अटक देखने के लिए, देश में और आतंकवादियों को बढ़ावा देने के लिए तैयार हैं? मैडम, अगर इसी को फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेशन कहा जाता है, अभिव्यक्ति की आजादी कहा जाता है तो दुर्भाग्य है, यह अभिव्यक्ति की आजादी नहीं है। कोई भी अपने देश को तोड़ने के लिए, ऐसी देशविरोधी ताकतों को आगे आने का कोई मौका नहीं देगा। आपने कहा, उन्होंने भी कहा कि 'भारत के टुकड़े होंगे, इंशा-अल्लाह, इंशा-अल्लाह।' मैडम, ये भारत के टुकड़े होने का इन्तज़ार कर सकते हैं, हम अपने टुकड़े करवा देंगे, लेकिन भारत के टुकड़े नहीं होने देंगे।

मैडम, यह केवल सदन में कहने की बात नहीं है।... (व्यवधान) अगर आप इसी सदन की जुलाई, 2010 की रिकॉर्डिंग निकालें। उस समय कश्मीर में पथराव चल रहा था। उसमें दो हजार से ज्यादा सैनिक घायल हो गए। तब भी ये लोग सता में थे। आप लोग उस समय सता में थे। दो हजार सैनिक घायल हो गए और आपकी सरकार ने कुछ नहीं किया। लेकिन, मैं विपक्ष में था। मैं भारतीय जनता युवा मोर्चा का अध्यक्ष था। 'इंडिया फर्स्ट' का नारा देकर मैंने पूरे देश का भ्रमण किया।... (व्यवधान) कोलकाता से कश्मीर की 'राष्ट्रीय एकता यात्रा' की ओर मुझे आपकी सरकार ने गिरफ्तार किया।... (व्यवधान)

मैंडम, इनकी सरकार ने मुझे भारत में तिरंगा झंडा फहराने के लिए गिरफ्तार किया। केवल मुझे ही नहीं, बल्कि सुषमा जी, अरुण जेटली जी को, जो विपक्ष के नेता थे, हमें जम्मू की जेल में 26 जनवरी को गिरफ्तार करके डाला गया। क्या ये करेंगे कश्मीर की बात?

मैंडम, मैं आपके माध्यम से सोनिया जी से पूछना चाहता हूँ कि जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में नाम तो नेहरू जी का है।... (व्यवधान) आज़ादी के लिए हज़ारों नौजवानों ने अपनी कुर्बानी दी। देश का पहला प्रधान मंत्री बनने का मौका मिला, तो यह जवाहर लाल जी को मिला। हमें इससे कोई दिक्कत नहीं है। देश ने आपके परिवार को बहुत लम्बा मौका दिया। उसी यूनिवर्सिटी में, जिसका नाम देश के पहले प्रधान मंत्री के नाम पर है, वहां उन्हीं के परिवार का सदस्य जाता है और देश विरोधी ताकतों के साथ जाकर बैठता है।... (व्यवधान) बड़ा दुःख होता है।... (व्यवधान) पूरा देश सोचता होगा कि इन्हें साठ वर्ष सत्ता में रहने के लिए दिया।... (व्यवधान) साठ वर्षों तक जिस परिवार ने राज किया, उनके लिए 'फैमिली फर्स्ट, पार्टी नेक्स्ट, नेशन लास्ट' है। यह इनका नास है। हमारे लिए 'नेशन फर्स्ट, पार्टी नेक्स्ट, सेल्फ लास्ट' है। यह हमारा नास है।

अध्यक्ष महोदया, मैं एक बात आपके माध्यम से जरूर कहना चाहता हूँ। मैं सोनिया जी और राहुल जी को आपके माध्यम से कहना चाहता हूँ कि भारत सरकार और भारत में अन्तर है।... (व्यवधान) भारत सरकार और भारत में अन्तर है। आप भारत सरकार की आलोचना कीजिए। दिल भर कर आलोचना कीजिए। मंत्री की आलोचना कीजिए, व्यक्ति की आलोचना कीजिए, हमारी नीतियों की, हमारे कार्यक्रमों की आलोचना कीजिए।... (व्यवधान) लेकिन, हमारे भारत की आलोचना मत कीजिए, मेरे भारत की आलोचना मत कीजिए।... (व्यवधान) मैं अपने भारत की आलोचना नहीं सहेगा।... (व्यवधान)

मैंडम, वर्ष 2010 में दांतेवाड़ा में सी.आर.पी.एफ. के 76 जवान शहीद हुए। मेरी कंस्टीट्यून्सी के दो जवान शहीद हुए। उसकी पत्नी की पेट में बच्चा था। वह रो रही थी। इन्हें नहीं पता, उसके ऊपर क्या बीती। सी.आर.पी.एफ. के 76 नौजवान दांतेवाड़ा में मारे गए। पूछिए उनके परिवारों के ऊपर क्या बीती होगी? उनके परिवार गम में थे।... (व्यवधान) लेकिन, यही डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स यूनियन और ये बाकी कम्युनिस्ट संगठन, यहीं पर जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में जन्म मना रहे थे दांतेवाड़ा में मरने का।... (व्यवधान)

मैंडम, दांतेवाड़ा के शहीदों के मरने पर, उनकी शहादत पर जन्म मनाया जाता है। याकूब मेमन, अफ़ज़ल गुरु, मक़बूल भद्र, इनको शहीद दिखाया जाता है।... (व्यवधान) क्या यही इन्तेंतेंस हैं? आप बैठिए।... (व्यवधान)

मैंडम, इसी सदन में कांग्रेस सरकार के एक पूर्व मंत्री ने कहा और यूपी. के चुनाव में कहा कि बाटला हाउस कांड के समय सोनिया जी उन नौजवानों के मरने पर फूट-फूट कर रोयी थीं।... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : प्लीज़, आप बैठिए। प्वायंट ऑफ़ ऑर्डर हो जाने दीजिए। क्या प्वायंट ऑफ़ ऑर्डर है?

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA (GUNA): Hon. Speaker Madam, I have a Point of Order. Rule 353- 'No allegation of a defamatory or incriminatory nature shall be made by a member against any person unless the member has given (adequate advance notice) to the Speaker and also to the Minister concerned so that the Minister may be able to make an investigation into the matter for the purpose of a reply: Provided that the Speaker may at any time prohibit any member from making any such allegation if he is of opinion that such allegation is derogatory to the dignity of the House or that no public interest is served'...

माननीय अध्यक्ष : आप बैठिए न।

â€¦ (व्यवधान)

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA: Hon. Speaker Madam, the fact that he has made a derogatory allegation against the Vice President of the Congress Party that he was present to support anti-national activity is completely against what the truth is. ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: There is no point of order. I am sorry.

... (Interruptions)

SHRI JYOTIRADITYA M. SCINDIA: Hon. Speaker, the very fact that he has made derogatory allegation is furthest from the truth. It must be expunged from the record.

HON. SPEAKER: Everybody has spoken.

... (Interruptions)

HON. SPEAKER: That I will see.

... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : मैं बता रही हूँ न। एक मिनट, आप सुनिए। आप बैठ जाइए।

â€¦ (व्यवधान)

HON. SPEAKER: The first thing is, there is no Point of Order.

â€¦ (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : एक मिनट, समझ रही हूँ न। नो प्वायंट ऑफ़ ऑर्डर, एक बात यह है। मैंने पहले ही कहा कि सेंसेटिव ईश्यू है। आपने भी कई सारे लोगों के नाम लिए। सदन में मौजूद ..

â€¦ (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : एक मिनट। Now you will have to see.

â€¦ (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : कई सारे लोगों के नाम लिए गए हैं। अनेक बार यह होता है और उन्होंने सर्कमस्टैंसेज की बात की कि जहां वे गए थे, वहां सर्कमस्टैंसेज ऐसे थे, इसलिए there is no Point of Order.

...(Interruptions)

SHRI ANURAG SINGH THAKUR: Thank you Madam Speaker. Through you, I want to know from Mr. Rahul Gandhi, if 1975 emergency defined Congress Party's democratic values, does he not find a parallel between Shrimati Indira Gandhi and Hitler? ये फ्रीडम ऑफ स्पीच की बात करते हैं। ... (व्यवधान) इमरजेंसी के समय देखा गया, मीडिया के मित्रों को जेल में बंद कर दिया गया, नेताओं को जेल में बंद कर दिया गया। ... (व्यवधान) आम आदमी के जीने के लिए किस तरह का माहौल खड़ा कर दिया। आज वही लोग इन्टेलिजेंस की बात करते हैं, फ्रीडम ऑफ स्पीच की बात करते हैं तो दुख होता है सोनिया जी, दुख होता है। ... (व्यवधान)

पत्रकार मित्रों को तो पता ही है, जो आज ब्लैक आउट भी करते हैं, उनको शायद वर्ष 1975 की बात याद नहीं है, इमरजेंसी के समय को भूल गए। ये जो आज फ्रीडम ऑफ स्पीच की बात करते हैं, शायद आपने वह समय नहीं देखा। ... (व्यवधान) अभिव्यक्ति की आजादी की बात करते हैं सोनिया जी ... (व्यवधान) चलो मैं नाम नहीं लेता। ... (व्यवधान) पूर्व मंत्री ने एक सभा में कहा बाटला हाउस कांड में पुलिस की गोली से जो आतंकवादी मारे गए, उस पर सोनिया जी बहुत रोई। ... (व्यवधान) यह मैंने नहीं कहा, इनके मंत्री ने कहा है, पहले मैं रिकार्ड दिखाऊंगा। अब मुझे यह पूछना है कि क्या इस्पेक्टर एम. एल. शर्मा जिन्होंने शहादत दी, उनके घर आप गई या नहीं गई? ... (व्यवधान) लेकिन दूसरे के नाम पर आंसू जरूर निकालते हैं। ... (व्यवधान) यह इसे दिखाता है। ... (व्यवधान) जब इस्पेक्टर एम. एल. शर्मा की बात आती है तो राहुल जी भी उनके यहां नहीं जा पाए, लेकिन उनके घर पर गए, जिनके ऊपर आतंकवादी होने के आरोप ही नहीं लगे, बल्कि उनको मार गिराया गया। इसलिए तय आपको करना है कि आप अफजल गुरु के साथ हैं या संसद के साथ हैं, भारत के लोकतंत्र के साथ हैं। अफजल गुरु आपके लिए आतंकवादी हैं या आपके लिए शहीद हैं, यह तय आपको करना है। देश आपसे जवाब पूछता है। गांधीवादी विचारधारा होगी या माओवादी विचारधारा का समर्थन करते हो। ... (व्यवधान)

16.00 hours

यह तय करना है कि किसके साथ हैं? आप जो माओवादी सोच को, अलगाववादी सोच को, जेएनयू में समर्थन करते हैं, जो भारत के खिलाफ रोज भड़काते हैं, जो भारत के पैसों को खर्च कर रहे हैं, उसे खारज भारत के ही झंडे और फौजी के खिलाफ बोलते हैं, आप उन देशद्रोहियों के साथ हो या देशभक्तों के साथ हो। हम राष्ट्रवादी हैं, हम माओवादियों के साथ कभी नहीं हैं। ... (व्यवधान) आपकी कथनी और करनी में अंतर है। आप कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, हम उस तरफ नहीं जाना चाहते।

अध्यक्ष महोदया, जेएनयू के बाहर पुलिस खड़ी है, मुझे यह पूछना है कि क्या जेएनयू के अंदर पुलिस नहीं जा सकती है? मेरे मन में यह प्रश्न उठ रहा था। ... (व्यवधान) श्रीता कौल जी के समय एक सवाल पूछा गया, कॉलेज की सरकार के समय एक सवाल पूछा गया और प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि हां, उस समय माहौल ऐसे थे कि वहां पर पुलिस को भी अंदर जाना पड़ा और 370 से ज्यादा विद्यार्थियों को गिरफ्तार करना पड़ा, लेकिन आज उसी जेएनयू में कोई देशद्रोह का काम करता है, विद्रोह करता है, कोई भारत को तोड़ने, खत्म करने की बात करता है, तो कोई कारण नहीं कि पुलिस को रोकना चाहिए, उन देशद्रोहियों, विद्रोह करने वालों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। ... (व्यवधान) यह मेरा कहा हुआ नहीं है। ... (व्यवधान) मैं आपकी सरकारों का पूरा रिकॉर्ड निकाल कर लाया हूँ कि आपके सत्ता के समय, आपके आर.पी.एन. सिंह जी कहते थे कि डीएसयू सीपीआई(माओइस्ट) फूट है, जो वहां पर रह कर माओवादियों को सह देता है, समर्थन देता है, उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाता है, उसी माओवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए राहुल गांधी जी उनके साथ जा कर खड़े होते हैं, तो यह प्रश्न विन्ध खड़ा करता है। ... (व्यवधान) वह वयों उनके साथ खड़े हुए हैं, डीएसयू, एआईएसएफ और एआईएसए के साथ, इन कम्युनिस्ट विचारधारा के साथ वयों खड़े हैं? ... (व्यवधान) देश बार-बार सवाल पूछ रहा है। ... (व्यवधान) मुझे आश्चर्य इस बात का हुआ। ... (व्यवधान) पता नहीं राहुल जी सत्ताई जान कर गये थे या सत्ताई नहीं जान कर गये थे। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अनुराग जी, आप एलिमेंशन नहीं लगाइए। You can ask question.

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : मैडम, मेरा इतना आग्रह है कि पहले इस देश के खिलाफ उस यूनिवर्सिटी में आवर्जें उठती थीं। ... (व्यवधान) जहां पर माओवाद, अलगाववाद को कुछ लोग उस विचार को बढ़ावा देते थे। हमें यह तय करना है कि हमें माओवाद, अलगाववाद को बढ़ावा देने वाले लोगों के साथ खड़े होना चाहिए, नहीं होना चाहिए, या उनके खिलाफ जो बोलते हैं। ... (व्यवधान) आप उनके खिलाफ आरोप लगाते। ... (व्यवधान) अगर एबीवीपी ने इस कार्यक्रम के बारे में वहां वी.सी. को इन्फॉर्म किया, तो इससे बड़ा देशभक्ति का काम और कोई नहीं किया कि वहां पर जाकर बताया है। रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है कि अन्याय करने वाले से ज्यादा अन्याय सहने वाला गलत होता है। ... (व्यवधान) आप विचार से सहमत हैं। ... (व्यवधान) अगर आप विचार से सहमत हैं तो एबीवीपी ने वही किया। अगर वहां पर कोई देश के खिलाफ काम कर रहा था तो उसके बारे में वीसी को इन्फॉर्म किया है। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अनुराग जी आप अपनी बात पूरा करें।

... (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : आपका बोलने का समय आयेगा। क्योंकि राहुल जी सदन के बाहर बोल रहे थे कि सदन में बोलने का मौका नहीं दिया जायेगा, बिल्कुल बोलने का मौका दिया जायेगा। वह बोलें, हम उनकी बात सुनने के लिए तैयार हैं।

माननीय अध्यक्ष : आप स्पीकर को संबोधित कीजिए और अपना भाषण पूरा कीजिए।

â€ (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : महोदया, आज देश और हम सब के सामने प्रश्न यह है कि जिस व्यक्ति के नाम पर वहां पर प्रोग्राम हो रहा था, उसका नाम अफजल गुरु है। ... (व्यवधान)

श्री ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया : अरैस्ट करो। ... (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : सिंधिया जी कह रहे हैं कि उसे अरैस्ट करो। उनको फांसी हो गई है, उनको कहां से अरैस्ट करें। ... (व्यवधान)

मैडम, वहां कश्मीर की समस्या की बात उठाई जाती है। ... (व्यवधान) कांग्रेस के पूर्वता उसे अफजल गुरु जी कहते थे। ... (व्यवधान) जो आतंकवादी है, उसे शहीद का दर्जा दिया जाता है। जो कश्मीर की समस्या नेहरू जी की ही दुई है, 67 वर्षों से देश उसे भुगत रहा है। देश जवाब मांगना चाहता है। आपने कश्मीर की समस्या को 67 वर्षों तक समस्या बनाकर रखा है। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। हम उसे अभिन्न अंग मानते हैं। आप मानते हैं या नहीं, मैं आपसे सवाल पूछना चाहता हूँ। Is Kashmir an integral part of India or not? ... (व्यवधान) सदन ने पास किया है, लेकिन जेएनयू की स्टूडेंट यूनिशन कहती है कि नहीं है। उसके साथ जाकर आप खड़े होते हैं। कन्हैया के पक्ष में आप बोलते हैं, क्या आप उसी विचार को फिर बढ़ावा देते हैं जो नेहरू जी उस समय स्पेशल स्टेट्स के लिए कह गए थे। आज स्थिति क्या है। जो लोग कहते हैं कि देश के टुकड़े-टुकड़े कर देने, राहुल जी, कौन से टुकड़े पर राज करना चाहेंगे, यह बता दीजिए। किस टुकड़े का इंजारे कर रहे हैं। इतना दर्द है आपको कि हम सत्ता में आ गए। हम सत्ता में सेवा करने के लिए आए हैं। आप देश के टुकड़े करने पर आ गए हैं, हमें इस बात का दुःख है। ... (व्यवधान) उन ताकतों का समर्थन करते हैं। ... (व्यवधान)

मैडम, मैं अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ। ... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing is going on record.

...(Interruptions)â€¦*

श्री अनुराग सिंह ठाकुर : अगर देश के 16 टुकड़े नहीं होने देना गलत है तो हां, हम गलत हैं, अगर देश में ही देश के खिलाफ नारे देने वालों के खिलाफ बोलना गलत है तो हां, हम गलत हैं। अगर इस देश की संसद बचाने वाले उन शहीदों के खिलाफ अन्याय होने देना गलत है तो हम गलत हैं। अगर आतंकवादी और सैप्रेटिस्ट मूवमेंट के खिलाफ लड़ना गलत है तो हां, हम गलत हैं। अगर देश का नाम खराब नहीं होने देना गलत है तो हां, हम गलत हैं। लेकिन हम यह कोई गलत काम नहीं करेंगे जिससे देश के टुकड़े-टुकड़े हो जाएं, न हम उन लोगों के साथ खड़े होंगे जो इस देश को बर्बाद कर दें। हम राष्ट्रवादी विचारधारा के साथ हैं, माओवादी विचारधारा के साथ नहीं हैं...(व्यवधान)

मैं अंत में वह स्लोगन नहीं मारूंगा -'I am Gandhi. I am not a Maoist'. मैं कहूंगा कि मैं राष्ट्रवादी हूँ और सदा राष्ट्रवादी रहूंगा। इस देश के लिए लड़ूंगा, देश के लिए खड़ा रहूंगा। धन्यवाद।

PROF. SUGATA BOSE (JADAVPUR): Madam Speaker, I rise to speak in this highly charged and sensitive debate as someone who has been a teacher at universities for three-and-a-half decades. I hope that my colleagues in this august House will have the patience to listen to me. This is after all a forum for debate and discussion, as the President reminded us only yesterday.

Just over a month ago, a dalit research scholar at Hyderabad Central University, Rohith Vemula tragically took his own life. The death of a bright young dalit scholar is not new in Indian universities. The Thorat Committee that was appointed in 2007 to investigate the growing number of suicides among students in elite educational institutions discovered that of the 23 suicide cases 19 were dalits, two tribals and one Muslim. This alarming figure should have raised several questions of academic justice and freedom that our nation needed to seriously ponder.

Rohith Vemula left us a poignant message when he chose to leave this unfair world. In "the only letter" that he was going to write, he told us: "I always wanted to be a writer - a writer of science. Like Carl Sagan I love science ... stars." Rohith today is not dead. He lives up in the Heavens as a star "of purest ray serene" to serve as a beacon light to posterity.

Rohith's tragedy should have stirred our collective conscience, including that of our Government. Unfortunately, we have a heartless Government that refuses to listen to the cries of despair coming from the marginalized sections of our society. Instead of assuring social justice to all, the ruling party wishes to use the student unrest in our universities to claim a monopoly on nationalism and tar all of their critics with the brush of "anti-nationalism".

Madam Speaker, I am not a communist. In fact, I won this seat in the Lok Sabha by defeating a prominent communist candidate. But I stand today in support of the right to freedom of expression by young students who may be inspired by Marx as well as Ambedkar. Madam Speaker, I am a nationalist. I believe in a kind of nationalism that instils a spirit of selfless service in our people and inspires their creative efforts. But I know that nationalism can be a truly Janus-faced phenomenon and I deplore the brand of nationalism espoused by Members of the Treasury Benches that I find narrow, selfish and arrogant.

Following the unrest in Hyderabad, there were incidents that took place in Jawaharlal Nehru University, a University named after our great first Prime Minister. Earlier this month at one or two events on that campus very disturbing slogans were raised and deeply troubling posters were put up. We unequivocally condemn those slogans and posters. However, we strongly oppose the attempt being made to portray the entire university as a hub of anti-national activities and the onslaught of State forces on academic freedom. We were horrified to witness the scenes of students, teachers and journalists being assaulted within the court premises of Patiala House. It was not the students, but the black-coated storm-troopers affiliated with the ruling party who defiled and desecrated the image of Mother India.

The reverberations of the JNU incidents were felt in my home State, especially in Jadavpur University. There too unfortunate slogans were heard in the streets around the campus. But by contrast with what happened in the nation's Capital, the West Bengal state administration led by Kumari Mamta Banerjee and the university administration knew how to defuse tension and to not unnecessarily escalate a crisis. It knew how not to over- react. After all, the idea of India is not so brittle as to crumble at the echo of a few slogans.

You cannot be a true nationalist if you are opposed to freedom. It is not a crime to seek freedom from caste oppression, freedom from class exploitation, freedom from gender discrimination. We must give our students and youth the freedom to think, the freedom to speak, the freedom to be idealistic, and, yes, the freedom to make mistakes, and learn from them. What must be avoided at all costs is the criminalisation of dissent...(Interruptions).

I heard the speech given by Kanhaiya Kumar on You Tube...(Interruptions). I agreed with many things that he said. I disagreed with some of the things that he said. I agreed with him when he extolled Ambedkar's commitment to Constitutional rights and Constitutional morality. I agreed with him when he expressed admiration for our great revolutionaries like Bhagat Singh, Asfaquallah, Sukhdev and Rajguru. He, of course, said that the RSS took no part in our freedom struggle. There too he was right...(Interruptions) but as a teacher I would have liked to have a discussion with him about history and I would have pointed out to him that even the Communists had actually taken part in the freedom struggle but also betrayed the freedom struggle at crucial moments during the 1942 movement and during the Azad Hind Movement led by Netaji Subhash Chandra Bose. So, we condemn the vigilantism of self-appointed protectors of the nation who are trying to create a climate of fear.

PROF. SAUGATA ROY (DUM DUM): Did the Communists not betray the 1942 Movement? ...(Interruptions)

SHRI KALYAN BANERJEE (SREERAMPUR): Communists were anti-nationals and they were not there in the freedom movement ...(Interruptions) You are not the Master of the House...(Interruptions) You are behaving as if you are the custodian of the House...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Shri Kalyan Banerjee, you are disturbing the Member from your own Party. He is speaking very well. Please take your seat.

PROF. SUGATA BOSE: Madam, Speaker, as I have said, I stand for the right to free expression of my Communist friends and they will be speaking in this House soon afterwards. But we condemn the acts of vigilantism by self-appointed protectors of the nation which foments a climate of fear and I

believe that students, teachers and university personnel must all be permitted to express opinions freely even if they conflict with the Government's political stances and the Government must end the witch hunt for anti-nationals and the shameful scape-goating of university students. Why? It is because we believe that this witch hunt is meant to distract the nation from issues necessary to the nation's development such as employment opportunities and poverty alleviation. We insist that no group within the Indian polity or in its Diaspora is the univocal spokesperson for the nation. History shows us that State-sponsored or State-condoned campaigns against, so called, anti-nationals leads to authoritarian rule and the destruction of democratic principles. If universities and students are attacked, then the legacy of anti-colonial freedom struggle and of democratic reconstruction is gravely undermined.

Madam, Speaker, we learn our lessons in nationalism from great figures like Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru and Subhash Chandra Bose and those of us who are from Bengal are also inspired by what we have been taught about patriotism and nationalism by figures like Swami Vivekananda, Rabindranath Tagore, Deshbandhu Chittaranjan Das, Bipin Chandra Pal and Aurobindo Ghosh. I was wondering whose definition of nationalism might be acceptable to my friends in the Treasury Benches. I thought that at least I would try by citing before them the example of Aurobindo.

The issue of Kashmir kept coming up in the speech given by Shri Anurag Thakur. Now, it is incumbent on all of us who are the elected representatives of the Lok Sabha to give a greater sense of belonging to the Union of India among the people of Jammu and Kashmir and all of our far-flung States. The issue is about what kind of Indian Union do we want.

What did Aurobindo say about this? Aurobindo touched upon 'the secret of the difficulty in the problem of unifying ancient India'. And he cited ancient texts. He said that the *rishis* from the Vedic age onwards, propounded 'the ideal of the Chakravarti, a uniting imperial rule, uniting without destroying the autonomy of India's many kingdoms and peoples' from sea to sea'. The ruler was meant to establish a suzerainty. The 'full flowering' of this ideal, Aurobindo found in 'the great epics'. The Mahabharata narrates the legendary and quasi-historic pursuit of this ideal of empire which even 'the turbulent Shishupala' is represented as accepting in his attendance at Yudhishthira's *dharmaic* Rajasuya sacrifice. The Ramayana too presents 'an idealised picture of such a Dharmarajya, a settled universal empire'. It is, in Aurobindo's words, 'not an autocratic despotism but a universal monarchy supported by a free assembly of the city and provinces and of all the classes that is held up as the ideal'. He goes on to say that according to his ideal, unification 'ought not to be secured at the expense of the free life of the regional people or of the communal liberties and not therefore by a centralised monarchy or a rigidly unitarian imperial State'.

Now we are not a monarchy any more. We are a democracy but the nationalism that is being talked about from the other side of the House represents centralised despotism and it is talking about a rigidly unitarian imperial State.

I mentioned Rabindranath Tagore. Tagore composed our National Anthem. But he was also a powerful critic of nationalism. He knew that nationalism could be both a boon and a curse. He wrote beautiful patriotic songs during our Swadeshi movement. But then he also saw that nationalism could lead to the carnage of war in Europe during the First World War. And that is why, when he travelled the world in 1916, he first went to Japan and then the United States of America, he gave lectures on nationalism and it was a powerful critique of nationalism that we find in those lectures. These lectures were published in a little book titled 'Nationalism' by 'MacMillan' in 1917.

I sometimes fear that those who are defining nationalism so narrowly will end up one day describing Rabindranath Tagore, the composer of our National Anthem, as anti-national if they read some of the sentences in his book on nationalism. ...(*Interruptions*)

We always had different visions of nationhood and it is really a debate and discussion about what should be an ideal form of the Union of India that has animated the thought of all of the great figures that I have talked about.

Chittaranjan Das of course had debates with Rabindranath Tagore but they were respectful towards each other. Deshbandhu Chittaranjan Das felt that you could have a nationalism where you are very proud of Bengal, your region, but you can still be a very proud Indian nationalist at the same time. All of this of course has to flower in the garden of internationalism.

I know that Shri Anurag Thakur tried to quote Netaji Subash Chandra Bose even though he confused the two great Bengali luminaries, Netaji and Rabindranath Tagore, the patriot and the poet. When I said that the nationalism that they represent is narrow, selfish and arrogant, I was, in fact, quoting from Netaji Subhash Chandra Bose. He spent a number of years in exile from 1933 to 1936 in Europe. As he was leaving and coming back to India to be imprisoned here, he pointed out that the new German nationalism that he had witnessed in Europe was narrow, selfish and arrogant.

Then, in 1937 when Japan invaded China and at that time the Indian National Congress sent a medical mission to China, at that time too Netaji Subhash Chandra Bose said that we must pursue national fulfilment in every direction, but not at the cost of imperialism, and not at the price of self-aggrandisement. So, we must understand that nationalism can have a liberating aspect. That is what inspired generations of our freedom fighters. But nationalism in its narrow form can also be extremely oppressive. This is a topic and a concept on which we ought to be able to have healthy debates.

The President speaking to us yesterday pointed out that this Government is trying to repeal many obsolete laws. There are many colonial era laws that need to be done away with from our Statute Book. I venture to suggest that the law on sedition is one of them. This was a law that was deployed to persecute our freedom fighters. We ought to be able to have a discussion with our children, with our students, with our youth. We ought not to be subjecting them to trumped up charges of sedition based on very dubious evidence, based on morphed visual evidence. We ought not to be doing this to our students and to our youth today.

I have said what I have wanted to because it is not always necessary to make a long speech in order to stand for academic freedom. Free our universities, free our students, let our youth dream a glorious future for our country. I have mentioned that Tagore wrote this beautiful little book on nationalism. At the end of the book he printed an English rendering of a Bengali poem that he had composed on the last day of the 19th century. It says:

"The last Sun of the century sets amidst the blood-red clouds of the West and the whirlwind of hatred. The naked passion of self-love of

nations, in its drunken delirium of greed, is dancing to the clash of steel and the howling verses of vengeance. Keep watch India. Let your crown be of humility, your freedom the freedom of the soul. Build God's throne daily upon the ample bareness of your poverty. And know that what is huge is not great and pride is not everlasting."

From this poem, I would like to simply underline three phrases. Let us not be deluded by the naked passion of self-love of nations, let our freedom be the freedom of the soul and let us remember the admonition of the great sentinel that what is huge is not great and pride is not everlasting.

Thank you very much.

SHRI TATHAGATA SATPATHY (DHENKANAL): I am a troubled man today because as Members of the highest temple of democracy we are supposed to be giving solutions to the people of this country.

But we see the impatience; we see the carelessness; we see the arrogance; and we see their attitude of one sidedness. When this whole nation is watching us that what solutions do these leaders put up before the nation during these discussions, these very delicate discussions, concerning the youth, concerning the democracy, concerning terrorism. Here, we are a bunch of people shouting and screaming at each other, and unable to actually address the real problems. It is sad, and while sitting here, and patiently listening to all sides, I am heartbroken to say that the youth of this country does not deserve us. We are the most undeserving set of people to be in this House today.

We were supposed to carry out this discussion tomorrow, Madam. I do not know what was the great hurry of mudslinging from both sides. One side demands, and the other side accepts that we had to move it earlier. I am not interested in taking sides with any of these Parties. I am interested to hear, and I wish to sit till the end of these discussions to hear who has a word of solace, who proves that he or she has a point of solution to the problems that the nation is facing today.

Is it only votes that matter? Is it only us and them? Are we not simplifying matters by breaking the country up into two parts – us and them? If you love your country, you love me. If you don't love me, you don't love the country. So by dividing the country in this manner, we are creating a bunch of people whose petty, political ambitions are to be assuaged, are to be satisfied at the cost, a heavy cost to the country. I would like to quote Voltaire, who said: "I disapprove of what you say, but I will defend to the death your right to say it."

The Government refused the help of the Pakistan army. They said that they have easier access to Siachen; they will reach our post quicker; and they will save our soldiers. The Government refused. And for six days, the young men of our Army were under 25 feet of snow. There was one braveheart – that is the word being used – one brave soldier with tenacity and love for his motherland, who survived. He was brought to the hospital. Then I do not know whom amongst us he saw, that he gave up his last breathe. It is sad for this nation that we are not able to recognise these brave people.

I am not standing up to glorify Afzal Guru. I believe in democracy honestly. I believe that modern human intellect till the 21st century has not, as yet, thrown up any better system of governance if we see across the world any better system of governance than democracy. I know; we all know; we are all parts, a little molecules in this whole system. We all know that there are lots of discrepancies, lots of shortcomings and disappointments. Even we are disappointed with ourselves, with our own performances.

But yet, we all recognize that today modern man has not yet evolved and brought about a better system of governance than democracy. So, when you have a scoundrel by the name of Afzal Guru who dares to come and attack this temple which is sacrosanct, there can be but killings and there can only be hanging which is the result that we saw. The very system that he wanted to destroy, that system allowed him to breathe for 11 years, 1 month and 11 days after he was nabbed for this dastardly attack. That very system allowed him to go on appeal from one court to the other court till the Supreme Court; that democracy allowed him to go on a clemency petition to the President which also elongated his lifespan. The man that scoundrel did not have that much of understanding how great this system is and the Parliament is. There should be no mercy shown for people of that level. Absolutely I am certain about that. Yet, there are those amongst us who glorify a person like Afzal Guru and, directly or indirectly, they are willing to stand shoulder to shoulder with those very people who say that we want to break up this country. ...(*Interruptions*) Hang on, please wait, have patience, it is coming. ...(*Interruptions*) They have no shame to align themselves and go to the university. Unfortunately Sir, you, your Government, have shut down the water supply for the last six days. ...(*Interruptions*) You have stopped water supply to the JNU Campus. ...(*Interruptions*) Don't say no; you are aware of it, don't say no. ...(*Interruptions*)

Madam, I would like to bring back the discussion on track. In this whole pell-mell of confusion, in our desperateness to politicize on one side Rohit Vemula issue, nobody said that whether he is Backward or whether he is Scheduled Caste or Dalit or an Upper Caste Brahmin, that does not matter, he was a young man of India. Nobody is bothered about that because these people want to politicize on that and those people, sitting there, they want to politicize on the 'us and them' issue and, so nobody is better Madam. They are all on equal footing. We lost sight of this critical anti-India movement because you lost sight, you forgot that trying to propagate, trying to help a bunch of students with political ambitions, a bunch of non-students who entered the university premises, trying to support their political ambitions, you lost track of the greater picture as to how, within a campus, an anti-India movement is being built up, a campus that is funded by the tax-payer of this country.

Then, on the other hand, if you look at the very country that they were idolizing and now you are idolizing, the US, if you look back, a couple of months ago, in the University of Missouri, the African-American students, the coloured students, in that university raised slogans against the US and the words that they used were 'discreet racism', how their faculty, their fellow students, everybody was a racist and how they were punished for that. It has happened in the US and the Government tolerated it. It spread throughout many universities. The Government there tolerated and handled it with kid gloves. This problem in the JNU could have been handled better. This is not the first year that they are doing it. After the hanging

in 2014 of Afzal Guru, in 2015 also a similar documentary screening, a similar discussion was held in the JNU. But at that time, this bunch of young people who are now for some political recognition, they did not exist in the JNU. The so-called Leftists who raised slogans against India, they were present. And because they were larger in number, there was nothing that the Government could do. But this time through, when a small, little spider went up and got one single post, then the Government got worried and then the Government suddenly thought of nationalism. So, when I think of nationalism, I remember Benito Mussolini, Italy; I remember Adolf Hitler and his national socialists. That is nationalism for me. But if you ask me, as an Indian, I am a patriot. I love my country. But then I cannot ask you or anybody else that if you love your country, you love me. I have no rights for that. Nobody owns this country. This country is owned by all of us. All of us are temporary; all of us are here for a short while; but this country is for all of us.

When frauds, dressed as lawyers, attacked students, beat up professors, beat up journalists, the police – the face of the Union Government because this was Delhi Police – stood as a mute spectator. Today, that is why, because of your mal-intentions, people are questioning your veracity, your honesty. It is not because you are Indians; nobody questions you on that front. Nobody questions your love for the country. But people question your intentions.

The educated in India is now in double minds and you put them in that situation. They were very clearly in your favour at the initial stages. When people saw those doctored television broadcasts, they all supported you. But your actions damaged your own cause. The way the police was seen standing as mute spectator, the way that the Commissioner started speaking, the way the hon. Home Minister started quoting tweets of all things, tweets are gossips and your label somebody as a terrorist because of some tweets. Terrorism is something that is punishable by death. So when you made these mistakes, you turned the country upside down, you confused those same people who wanted to support you, please remember that these acts of yours have created a severe loss of confidence on the establishment amongst the youth and the students.

I would also request you to remember that the Government or the system of governance should welcome criticism. When your faults are thrown up at your face, you have an opportunity to rectify it. When you shy away from looking at your own faults, you do not realise what is happening till 2019 hits you from the head. Then it will be too late. This country needs action now, not police action. You cannot deal with this country, with the students of this country, with the youths of this country by beating them up with goons, black shirts, grey shirts, the Schutzstaffeln and the police. You have to deal with them as a civilized society and a civilized Government.

Madam, I will speak just a few more words. Unfortunately, we are all aware that the story does not end here. The story, actually, starts here. How does it start? Where lies the problem? It is not so much Afzal Guru who actually bothers you. Let me be very honest. That 'us' and 'them' divide, *khaki* or *non-khaki*, that also does not really bother you. You are in seat of power. What bothers you is the appalling economic system in this country and the appalling economic situation in this country. Your banks have collapsed. The Rupee is dipping 6.6 per cent in a few days time. On February 23rd it was Rs. 68 to a Dollar. By yesterday, it had reached Rs. 70 to a Dollar.

I also love travelling abroad. Given an opportunity, I would travel any time. But despite that I keep in touch with my country, with my State and with my constituency. I do not forget my nation when I travel abroad. The State Bank's record is damned by the Punjab National Bank. The Punjab National Bank's NPAs have been outdone by the Bank of Baroda's NPAs. If we see bank-by-bank, it is not bank nationalisation that is to blame, it is the present day administration that is to blame.

HON. SPEAKER: Please conclude now.

...(Interruptions)

SHRI TATHAGATA SATPATHY : I would beseech your attention Madam. A Bench headed by the Chief Justice of India in the Supreme Court recently asked the Government lawyer. I am quoting the Chief Justice's words:

"People are owing thousands of crore to the public banks; it is a big fraud. Top ten public sector banks have written off Rs. 40,000 crore alone in 2015. It is all there in newspaper reports. Public financial institutions are lending money despite knowing no returns; What are you doing about it? "

So, this is a kind of situation. ...(Interruptions) This is not a tweet. This is from the Supreme Court. ...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Tathagata Satpathy ji, conclude your speech now.

...(Interruptions)

SHRI TATHAGATA SATPATHY : Yes. These economic mishandlings, the total callousness and the total inaptness of this Government has disillusioned the youth of this country, has disillusioned the students of this country. They do not think the future of this nation is safe in the hands of these people or those people. They throw them out. Now, they are waiting for their opportunity to deal with them. The country is under dire economic stress. The Government should make their citizens honestly aware of what their responsibilities are. You cannot hide under the fuel excise. Just because the petrol prices are low, you are making some money out of it. That is a temporary benefit. Eventually, when this boomer ends, you may not be around but the country will be around.

I would suggest that the time has come that the Government of the day comes clean and tells the people what the situation is. Let us not hide behind smoke screens of agitations for reservations and student troubles. All those are the things of the past which these people used and failed. Let us not replicate their moves. Find new ways. Be honest with the citizens. Come out clean and tell the citizens what you expect from them. Thank you.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण) : अध्यक्ष जी, मैं बहुत दुःख और कष्ट से आज बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ। व्यथित हूँ, क्योंकि दर्दभरी घटनाएं इस देश में होती जा रही हैं। एक दिन नहीं, रोज़ाना हम देख रहे हैं कि आतंकवादियों के हमले हो रहे हैं और जवान शहीद हो रहे हैं। रोज़ाना नागरिकों पर हमले हो रहे हैं। देश में जो घटनाएं हो रही हैं, हर एक व्यक्ति जो यहां बैठा है, उसको अंतर्मुख होकर उसको देखना चाहिए।

मैंने सभी माननीय सदस्यों के भाषण सुने। कुछ विद्वतापूर्ण थे। कुछ विषय को लेकर अलग ढंग से बात कर रहे थे। जवाहर ताल युनिवर्सिटी में जो हुआ, उसके पहले तेलंगाना में हैदराबाद युनिवर्सिटी में जो घटना हुई, उससे हमें दर्द पहुंचा है। एक जवान बच्चा, रिसर्च करने वाला, पीएचडी करने वाला, आत्महत्या करता है, यह अच्छी बात नहीं है। जब जवाहर ताल युनिवर्सिटी की बात आयी तो मैं बहुत गर्व से उसकी तरफ देख रहा था। वर्ष 1969 में उसकी स्थापना हुई। इस युनिवर्सिटी में बहुत सारी फैकल्टी हैं। जवाहर ताल युनिवर्सिटी में डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स फेडरेशन, एआईएसएफ और इसी तरह की तीन चार छात्रों के संगठन हैं। अफ़ज़ल गुरू की तीसरी बरसी पर वहां सांस्कृतिक संख्या का आयोजन हुआ। यह मुझे वाकई दर्द देता है कि अफ़ज़ल गुरू के लिए आप सांस्कृतिक संख्या करते हैं और उसमें नारे लगाते हैं- "हम वया चाहें आज़ादी। हक हमारा, आज़ादी। लड़कर लेंगे, आज़ादी। कश्मीर मांगें, आज़ादी।" जवाहर ताल युनिवर्सिटी में आप पढ़ने के लिए आए हैं और वहां इस तरह के नारे लगा रहे हैं। हम सारे लोग फ़्रीडम की बात करते हैं।

मुझे समझ में नहीं आया कि हम स्कूल और कॉलेजों में क्यों जाते हैं? हम किस की आज़ादी मांग रहे हैं? हम वहां पढ़ने के लिए आए हैं। यदि हम वहां पढ़ने के लिए आए हैं तो पढ़ने की बजाय हम अलग विषय की तरफ जा रहे हैं। आगे चलकर उन्होंने वहां कहा- "कश्मीर की आज़ादी तक जंग रहेगी जंग। भारत की बर्बादी तक जंग रहेगी जंग।" इससे वया आप लोगों को सदमा नहीं लगता है? हम डेमोक्रेसी की बात करते हैं। यह संगठन मकबूल भद्र की बात करता है। उस मकबूल भद्र की मैं आज आपको याद दिताना चाहता हूँ। 14 सितम्बर, 1966 में पाकिस्तान के साथ हथ मिलाकर मकबूल भद्र ने पुलिस पर हमला किया। इंस्पेक्टर अमरचंद मारा गया। मकबूल भद्र ने वर्ष 1971 में इंडियन एयरलाइंस विमान का अपहरण किया। उसका मुख्य संवाहन भी मकबूल भद्र ने ही किया। वर्ष 1976 में भारत की फौज ने उसे पकड़ लिया। 3 फरवरी, 1984 को जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट, उनके ऊपर मुकद्दा चलता रहा। उसे फांसी की सजा हुई। फांसी की सजा होने के बाद उन्होंने राष्ट्रपति को माफी के लिए अर्जी दी। वर्ष 1984 में रवींद्र म्हात्रे जी कांस्युलेट में काम करते थे। उनका अपहरण कर लिया गया और यह मांग की गयी कि मकबूल भद्र को छोड़ दो। इंदिरा गांधी जी उस समय देश की प्रधानमंत्री थीं। उन्होंने कहा कि हम आतंकवादियों के सामने नहीं झुक सकते हैं। चार दिन बाद मकबूल भद्र के लोगों ने रवीन्द्र म्हात्रे की हत्या की और रास्ते पर उसका शव फेंक दिया। चार फरवरी को उसकी हत्या करने के बाद तीन दिन के अंदर उस वक्त प्रधान मंत्री, श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने जो अर्जी राष्ट्रपति महोदय के सामने दी थी, उन्होंने राष्ट्रपति जी से विनती की कि आप अर्जी पर फैसला दीजिए, फैसले के मुताबिक राष्ट्रपति ने उसकी अर्जी मान्य नहीं की और 11 फरवरी को मकबूल भद्र को फांसी दी गई। 1984 में उसे फांसी दी गई और आज तक वे लोग मकबूल भद्र को भूते नहीं हैं, जबकि हम रवीन्द्र म्हात्रे को भूल गये।

हम सियाचिन की बात करते हैं, हम हनुमनथप्पा को भूलेंगे, हम पठानकोट की हत्या को भूलेंगे, लेकिन आज़ादी के नाम पर, डेमोक्रेसी के नाम पर छात्र कुछ भी नारे लगायें, उनका हम समर्थन करेंगे। मुझे बहुत बुरा लग रहा है, आप उनका समर्थन करते हो। आप किस बात का समर्थन कर रहे हो, इसमें राजनीति चल रही है। देश में एक नई सरकार आई, हां ठीक है, सरकार से भी कुछ गलतियां होती हैं। मैं यह नहीं कहता हूँ कि आप उसकी आलोचना न करें, आप उसकी जरूर आलोचना करें, लेकिन देश की अखंडता पर अगर कोई आंच आती है तब हम सबको मिलकर उसके खिलाफ लड़ना चाहिए। लेकिन वह नहीं हो रहा है, आज हम बता रहे हैं कि तुमने वया किया, हमने वया किया। हम यहां दोनों की लड़ाई देख रहे हैं। मुझे बहुत बुरा लग रहा है, मैं बहुत व्यथित हूँ। जवाहर ताल नेहरू यूनिवर्सिटी में जो हादसा हुआ, वह क्यों हुआ?

इसके बाद मैं दो-तीन महत्वपूर्ण चीजें बताना चाहता हूँ कि यह कहां से शुरू हुआ। ये सारी घटनाएं नवसतवाट से जुड़ी हुई हैं, लेपिटस्ट हैं, लेपिटस्ट होना कोई गलत नहीं है, लेकिन लेपिटस्ट होकर देश की अखंडता पर आंच लाना गलत है। यह कब हुआ, जब रशिया डाउन हुआ और वाइना ने पूंजीवाद स्वीकारा तो पता चलने लगा कि वया करें। आज यह जो पूरा अड्डा बना है, वह माओवादियों का अड्डा है। जवाहर ताल यूनिवर्सिटी अलगाववादियों का अड्डा बन गया है। गृह मंत्री जी से मेरी प्रार्थना है, वया हमारी इंटेलिजेंस कमजोर पड़ रही है? पठानकोट में भी अटैक हुआ। जवाहर ताल नेहरू यूनिवर्सिटी में हमने बच्चों को पकड़ वया लिया, सेडिशन के ऊपर अभी डेफिनिशन चल रही है। हां सही बात है कि सेडिशन का जो मुद्दा था, वह मुद्दा जब अंग्रेजों की सरकार थी तो जो लोग देश के लिए लड़ रहे थे तो उन सबके ऊपर सेडिशन लगाया जाता था। सब पर 124(अ) धारा लगाई जाती थी। उसे लेकर हम आज इस तरह से कर रहे हैं। युवा इस देश की ताकत हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे मुम्बई में इशरत जहां का एक हादसा हुआ था। आपको याद है, वह लड़की मारी गई, वह किसलिए आई थी, यह सबको पता है। तब सारी सरकार के लोग उसके पीछे खड़े रहे, कोर्ट तक गये। आज हेडली के द्वारा पता चला कि इशरत जहां प्रधान

मंत्री की हत्या करने के लिए आई थी और आप लोग हर चीज पर राजनीति खेलते, आपने इशरत जहां के ऊपर भी राजनीति खेली। हमारे यहां मझारुआँट में एक विधायक हैं, उनके घर पर तुरंत जाकर एक लाख रुपये देकर आए और जाकर रोये कि इशरत जहां को मारा गया। आज पता चलता है कि इशरत जहां कौन थी।

महोदय, यह जो हुआ है, किसी ने पूछा कि राट्टातिक का पैमाना वया है, आज अभी नये-नये पूछ रहे हैं। मैं जानबूझकर एक बात आप सभी से कहना चाहता हूँ कि यह जो अलगाववाद चल रहा है, इसे थोड़ा गंभीरता से लेने की जरूरत है। हिंदुस्तान के टुकड़े हुए हैं, उसकी नींव कहां है, मैं बताता हूँ। मैडम, केब्रिज में 15, हब्रैस्टन रोड के एक घर में रहमत अली ने 28 जनवरी, 1933 में पहली बार एक पर्चा निकाली और पर्चा में लिखा था कि पाकिस्तान नाम का एक अलग देश क्यों बनना चाहिए। किसी के भी मन में उस वक्त यह आया नहीं होगा कि आगे चलकर कोई ऐसा सोच भी रहा है और वह भी लंदन में सोच रहा था। आखिर पाकिस्तान बना और आज ये लोग जो कश्मीर के बारे में बोल रहे हैं, मैं प्रार्थना करता हूँ कि धारा 370 पहले रद्द करें, तब जाकर कुछ होगा।

17.00 hours

यह हिम्मत बढ़ रही है न कि कश्मीर-कश्मीर और कश्मीर, यह धारा - 370 पहले रद्द करें, तब जा कर कुछ होगा। आज कल जो हो रहा है, यह उसकी नींव है। ये सारे मावर्सवादी लोग यहां पर आए हुए हैं। माओवादी लोगों का गठन वहां हुआ है। जवाहर ताल नेहरू युनिवर्सिटी मतलब देश के खिलाफ लड़ने वालों का एक बड़ा संगठन वहां खड़ा हुआ है। अच्छा हुआ, कभी-कभी बुराइयों में भी कुछ अच्छी चीजें होती हैं, यह बुरा हुआ है, लेकिन एक अच्छी चीज हुई है। अब हमें सावधानी बरतनी चाहिए। हमारे सुभाष चंद्र बोस कहते थे कि तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा। आज़ादी बिना त्याग से नहीं मिलती है, खींच कर लेनी पड़ती है, यह भी सुभाष चंद्र बोस जी ने कहा था। यह भी ऐसे ही है। कश्मीर को खींच कर लेना पड़ेगा। अभी वह आज़ादी से ऐसे मिलने वाली नहीं है। जब कश्मीर को खींच कर लेंगे, तभी ये सारी चीजें खत्म हो जाएंगी। यहां आ कर अफ़ज़ल गुरू के नारे लगाओगे, यहां आ कर मकबूल भद्र के नारे लगाओगे। कल को तो कसाब के भी नारे लगा सकते हैं। पता नहीं बोलेंगे कि कसाब को भी ऐसे ही मारा होगा। इसलिए मैं इस विषय को ले कर प्रार्थना करता हूँ कि आगे चल कर जेएनयू में ये जो मुरितम कट्टरपंथी या जो आतंकवादी और ये माओवादी ये दोनों जवाहरताल नेहरू युनिवर्सिटी में इकट्ठे हुए हैं, उनकी जांच की जाए और जो लोग इस देश के खिलाफ देश के टुकड़े करने की बात करें, उनके टुकड़े पहले किए जाएं, ऐसी मांग में करता हूँ।

आज मुझे याद आता है कि हमारे बाला साहिब ठाकरे अगर होते तो सुनते भी नहीं, उन्होंने जय हिंद का नारा दिया। उस जय हिंद में हम अखंडता चाहते हैं। हर प्रांत के लोग हैं। अपनी भाषा में बोलें, अपने प्रांत के लिए रहें, लेकिन देश की अखण्डता पर किसी भी तरह आंच नहीं आने देंगे। इतना ही कह कर मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ। जय हिंद।

माननीय अध्यक्ष : प्लीज़ अब सभी अपनी बात दो-दो मिनट में खत्म करें क्योंकि अभी ज्यादा समय नहीं रह गया है।

श्री मुत्तायम सिंह यादव (आज़मगढ़) : अध्यक्ष महोदय, मैं संक्षेप में ही अपनी बात कहना चाहता हूँ, सारे भाषण हो चुके हैं। जहां तक जवाहर ताल नेहरू युनिवर्सिटी के छात्रों का सवाल है, इन छात्रों के बहाने इस विश्वविद्यालय को निशाना बनाया गया है। जहां तक जवाहर ताल नेहरू विश्वविद्यालय की बात करें तो यह एक बहुत ही प्रतिष्ठित और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का विश्वविद्यालय है। जब 47 साल पहले इस विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी, तब से बड़े योग्य प्रशासक और विद्वान वहां से निकले हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी ख्याती प्राप्त की है। जहां तक दूसरे विश्वविद्यालय की तुलना है, इसको अधिक साधन-सुविधाएं प्राप्त हैं। आज की राजनीति में इस विश्वविद्यालय से निकले छात्र नेता हैं, जैसे प्रकाश कश्यप, सीताराम येचुरी, डी.पी. त्रिपाठी जैसे नेता भी यहां से निकले हैं। इस तरह ऐसे नेता हर दल में होंगे, उधर भी होंगे, हमारी तरफ भी रहे हैं। वैचारिक बहस और बोलने की आज़ादी और प्रगतिशील चिंतन यहां की विशेषता रही है। पहले भी

विश्वविद्यालय को निशाना बनाया गया था, लेकिन पूरे विश्वविद्यालय को देश विरोधी नहीं कहा गया था। पहली बार इसको देशविरोधी विश्वविद्यालय कहा गया है, जो घटना पहले हुई थी, वह पता है, लेकिन किसी ने देशविरोधी नहीं कहा। अब जहां तक अफज़ल गुरु पर आरोप था कि संसद पर जो आतंकवादियों ने हमला किया था, उसकी योजना में वह शामिल था। सुप्रीम कोर्ट ने उसको फांसी दे दी थी। देश की सबसे बड़ी अदालत के फैसले का सम्मान हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। जो फैसला हमारे सुप्रीम कोर्ट ने किया हो, उसको सभी को मानना चाहिए और मानना पड़ेगा। उस फैसले को चुनौती नहीं दी जा सकती है।

9 फरवरी की रात में जेएनयू में जो घटना घटी है, जो नारे लगे हैं, उस बारे में छापा कुछ और है और दिखाया गया कुछ और है। उसको ले कर गंभीर मतभेद हैं। लेकिन उसकी पूरी जांच होनी चाहिए। देश विरोधी नारे लगाने वालों को माफ नहीं किया जा सकता, मैं इसका समर्थन करता हूँ, लेकिन वहीं यह भी जरूरी है कि निर्दोष छात्रों को और पूरी तरह से विश्वविद्यालय को देश विरोधी की धारा के अन्तर्गत नहीं लिया जा सकता। विश्वविद्यालय के सारे छात्र देश विरोधी हो गए, विश्वविद्यालय देश विरोधी हो गया, ऐसा नहीं कह सकते हैं। यह सरकार की जिम्मेदारी है और इनकी तरफ से कोई न कोई ऐसा बयान आना चाहिए। आम जनता में यह संदेश जा रहा है कि सब के सब देश विरोधी हो गए हैं। यह बात चर्चा में है, लेकिन सरकार की तरफ से कोई बोल ही नहीं रहा है। सरकार की तरफ से बोला जाना चाहिए, हम लोग तो बोल ही रहे हैं। सरकार की तरफ से कोई सधा हुआ बयान आना चाहिए, जिससे इस विश्वविद्यालय का सम्मान बना रहे। सरकार को हमारी यह सलाह और राय है। 9 फरवरी की रात को जेएनयू में जो घटना घटी थी, जिसमें नारे लगे थे, उसके बारे में मैंने बताया ही दिया है, जो छापा और दिखाया गया है, उसको लेकर गंभीर मतभेद हैं। उसकी पूरी जांच होनी चाहिए कि देशद्रोही नारा लगाया गया है या नहीं। अगर देशद्रोही नारा लगाया गया है तो बड़ी से बड़ी सजा जो आप दे सकते हैं, वह दीजिए। लेकिन अब कितना सच, कितना गलत है, दो तरह की बातें हैं, हमारे सामने तो दो तरह की बातें चर्चा में आई हैं, आपके सामने भी कुछ आई होंगी, तो इस सम्बन्ध में पूरी जाँच आपको कर लेनी चाहिए। आपको यह जाँच कराने में देर नहीं करनी चाहिए, जल्दी जाँच कर लेनी चाहिए कि क्या सही है और कितना गलत है। जो दोषी हैं, उनको तो खैर माफ नहीं किया जा सकता है। यह हमारा विश्वविद्यालय है। हम ज्यादा लम्बा-चौड़ा नहीं बोलना चाहते हैं, हमने तीन बातें बोली हैं, अन्य लम्बे-चौड़े भाषण हो ही गए हैं, अपनी तीन बातें हमने आपके सामने रख दी हैं। इन्हें शब्दों के साथ हम अपना भाषण समाप्त करते हैं। धन्यवाद।

HON. SPEAKER: Now, Dr. Ravindra Babu. You take only three minutes and not more than that, please.

DR. RAVINDRA BABU (AMALAPURAM): Hon. Speaker Madam, thank you for giving me this opportunity.

Madam, this most unfortunate incident happened in Hyderabad Central University leading to the death of a Dalit scholar who has reached the top position of Ph.D and he committed suicide. We have totally forgotten the issue. We have totally forgotten the plight and sorrow of the parents of the student. What dreams they must have dreamt about him when he was sent to the Central University? We have totally forgotten to pay tributes to that person and pay any condolence or show any sympathy to his parents. That is the most unfortunate incident that happened in the Hyderabad Central University.

Coming to Jawaharlal Nehru University, there is a popular saying about Jawaharlal Nehru University that whatever JNU thinks today, India thinks tomorrow. JNU is known as the most intellectual hub....(Interruptions)

SHRI KALYAN BANERJEE : What West Bengal thinks today, India thinks tomorrow.

DR. RAVINDRA BABU : That is fine. That adds to my observation. Therefore, JNU used to be the hub of most of the intellectual discussions and debates. So many times so many people used to go there, both before and after the election of the Students' Union. There has never been any acrimonious incident. There used to be a very healthy debate. For the first time after Afzal Guru was hanged, a controversy has arisen, and that too he had been hanged after following the due process of law for an activity which has been proved beyond doubt. There is no question of any discussion. There is no question of any postmortem after that. But unnecessarily, there is a controversy which has arisen in the minds of the students. We, being the elders, being the Parliamentarians and responsible people, instead of understanding the mentality of those students who are participating, are unnecessarily invoking sedition Act against the students. I think it is too harsh a measure on such an incident. If at all sedition Act needs to be invoked, there are people as Mr. Tathagata Satpathy mentioned. How many banks, one bank after the other, have declared NPAs? Everybody is competing. There are economic frauds committed by people who are belittling the country, who are embezzling the country's money outside, making India emasculated and economically weak. Those are the people who need to be invoked sedition clause and not the students. Students are very innocent. They are like our children. If there is any wrong understanding; if they are going on a wrong route, we are here to correct them, bring them on the correct path and tell them that this is what is correct. We cannot do it by punishing them. By punishment, they will become hardcore criminals. Let us not do that.

Our universities are the centres for excellence. We feel proud of them. IITs, IIMs, JNU, etc. – we are very proud of all our institutions. There has always been unity in diversity. Ambedkar ji always believed in that. If anybody who criticizes India has to be labelled as anti-national, then Ambedkar also needs to be labelled as anti-national because he is the one who burnt the *Manusmriti* book in the public. He denounced Hinduism by saying that Hinduism has caste discrimination.

We, being a tolerant society in India, we love India, we love the unity in diversity. Let us spread the spirit of nationalism; let us have the nationalism first. That is why I strongly believe that we should be tolerant for different views expressed by anybody. Ultimately, we are all Indians; we are all Indians; we are all Indians. Jai Hind! Jai Telgu Desham!

SHRI KONDA VISHWESHWAR REDDY (CHEVELLA): Madam Speaker, thank you for giving me this opportunity. The University of Hyderabad, where the spark called Rohith Vemula got extinguished, is in Chevella, which is my parliamentary constituency. I am a member of the Court of the University of Hyderabad. So, I have a few insights. Madam, I would appreciate if you give me two-three minutes extra.

The last letter of Rohith Vemula says:

"Don't get angry on me. I have no complaints with anyone. I have always wanted to be a writer. My birth is a fatal accident. There was no urgency. But I am always rushing desperate to start a life and I would not be around when you read this letter."

He was boycotted, his scholarship was withheld and he was suspended. Probably, the country lost another Carl Sagan itself.

Madam, the institutions have become insensitive. Every stakeholder in an institution is important – the students, the teachers, the staff, the parents

and the local society, the local community where the University is, as well as the Central Government and the HRD Minister. But I think the behaviour of the Vice Chancellor (VC) and the administration now in this Government as well as the VCs in the past Government – I had the opportunity to interact with three other VCs in the past Government – is same. Regardless of the Government the VCs of Central Universities say they are accountable for nobody except the Ministry in Delhi. I think that has to change.

Madam, in the same constituency next to Hyderabad University there is the Indian School of Business. Some of the Universities in India and abroad go out of the way to involve local communities, take opinion and integrate themselves with the culture and become sensitive to the issues. That is not happening. We are not even doing the mandatory.

On 4th December, we got a two month's notice, that is, one month's notice in November saying that 4th December we will have a Court meeting of the University of Hyderabad. I and two other MPs are members of that and we requested for it to be postponed. They would not even answer. We requested it because the Parliament Session was going on. If they are not sensitive to us and the local community, I doubt, they will be sensitive to the students. We did not even get a written letter.

The autonomy of the institutions is being destroyed and that is the main culprit. Like I said, it was happening in the previous Government. The appointments to the boards are made without proper feedback and it is only the elitists who are in the administration. But I think that those allegations are true. If you look at the senior most officers from the VC onwards, they are all elitists and I think they have lost touch with the students.

Madam, we have heard of many adventure tourism, we have heard of medical tourism, we have heard of culture tourism. But we invented a new thing. It is called 'political tourism'. The hub of political tourism was my constituency. Every party of every kind, especially those who are against the Ruling Party have made it a political tourism destination. Do we need to politicize this issue? I, being in the centre of the house, have the benefit of speaking objectively.

This is not the first suicide. There were nine other suicides, including the ones committed by Senthil Kumar and Raju in the same university, Balraj and so on. Why is this happening now? It is because of political opportunism. I would not want to blame this side of the House or that side of the House. I would blame equally both of them. They are not focussing on the solution and the diary. The issue is being politicised.

Madam, at the same time, we had the elections to the Municipal Corporation of Hyderabad which were held ten days later. Being in my constituency – our political rivals and friends in the Parliament are here – it was a great opportunity for us to politicise that incident, but our Chief Minister, Shri K. Chandrasekhar Rao, emphatically told that 'being your constituency, you go there once, but do not sit in the dharna and never talk about it in the GHMC elections.' We have swept Telangana. If there was an Achilles' heel for our party, it was Hyderabad. Despite it being so important for us to win, our Chief Minister and our leader, Shri K. Chandrasekhar Rao, had emphatically mentioned to us not to politicise it. Not once did we broach this issue. That was the constituency where we had zero corporators and now we have 100 per cent of the corporators without politicising this issue. We have won 100 per cent of the corporators there. That is the statesmanship that we require. That is what we require from both sides of the House. On the issue of the impending GST Bill, we also need some bipartisanship.

Every once in a while we have to confront these issues. There are various causes and reasons attributed to Rohit Vemula's case – nationalism, casteism, dalit issue, secularism etc. Just as secularism cannot be the patent right of the Congress, nationalism cannot be the patent right of the BJP. I think, being in the centre of the House - as they say that when two elephants fight, it is the grass that suffers – I would say that we are not the grass; we are the voice of the country. I think, that is very important that we understand what is required and that bipartisanship system is required.

Madam, in some democratic countries, for chewing gums, they are caned in public. In other democratic and developed countries, for saying 'lotless' and 'Yakub Memon should not be jailed or hanged', they would have gone to rendition camps, but our level of tolerance should be much higher.

Madam, I think, both my friends, Shri Anurag and Shri Scindia, raised the word देशद्रोही, लेकिन देशद्रोही हमारे कानून में ही नहीं है। We do not have sedition laws. The closest is Section 124A. There are two solutions. One is autonomy of the institutions. Secondly, we should have laws which are not ambiguous. The closest to sedition laws is Section 124A where the subjective words which can be interpreted any which way they want are hatred and things like that. We should have definitive laws. Hopefully, in the coming sessions, we make definitive laws.

Lastly, it was Carl Sagan who said that we make our world significant by the courage of our questions and the depth of the answers. Rohit Vemula has asked us a question and we need to find the courage and the wisdom to find the solution.

Thank you.

HON. SPEAKER: Now, Shri M.B. Rajesh will speak.

You have only three minutes to speak. I am giving you one minute more from my side.

SHRI M.B. RAJESH (PALAKKAD): Madam, please give me ten minutes.

HON. SPEAKER: No. Sorry.

SHRI M.B. RAJESH (PALAKKAD): Madam, we are discussing this important issue at a time when the campuses across the country are boiling in an unprecedented outrage and protest. Tens of thousands of students are coming out on the streets to fight an undeclared emergency imposed by the Government against the universities and campuses.

Madam Speaker, two incidents have shaken the conscience of the entire nation. One is a suicide. It is, in fact, an institutional killing of Rohit Vemula, a brilliant student who wanted to become another Carl Sagan. He belonged to Hyderabad Central University. The second incident is of sending Kanhaiya Kumar, the elected President of JNUSU, to jail.

Rohith Vemula is a Dalit student and Kanhaiya Kumar belongs to an extremely poor family whose mother is an *Anganwadi* teacher and whose family is surviving on a meagre income of Rs. 3,500 per month. What does it mean? This means that they do not want Dalits and deprived sections of students / youth belonging to Dalits and deprived sections to be in Universities. *Eklavyas* continue to lose their thumbs. This is continuously happening.

Rohith Vemula was suspended due to continuous pressure exerted by two Union Ministers and when the Union Ministers sent 8 letters in a period of three months and when the Vice-Chancellor refused to take action against Rohith Vemula, a brilliant student, then they removed the Vice-Chancellor and a stooge was appointed in the Chair of Vice-Chancellor and he took action against Rohith Vemula. Unable to withstand the pressure that brilliant student ended his life by committing suicide. Hence, I said that this is not merely a suicide, but it is an institutional murder.

Yesterday, I saw his mother and brother. They were in Delhi. Have you done justice to that family? Have you done justice to his mother? She has sought justice and she came to Delhi seeking justice. You have not done justice, but not only that you have added salt to the wounds by making insulting statements against Rohith Vemula. Even the Union Ministers have made insulting statements against Rohith Vemula.

Now, they are targeting JNU, and even before JNU they targeted IIT, Chennai – a small debating forum called Ambedkar Periyar Study Circle. It was targeted; Delhi, IIT was targeted; and Pune, FTII was targeted. The students of FTII were accused as drug addicts and anarchists. The students of Chennai, IIT were accused as extremists. So, everybody who questions / challenges their ideological hegemony is being branded either as anti-national or drug addicts and anarchists. This is happening in our country.

JNU has always been their prime target. They wanted to appoint one of their close man as Vice-Chancellor or Chancellor whatever it is, but they could not do it. Now, they are branding an entire University as anti-national. Which is this University? It is a University, which has made immense contributions to all walks of our nation's life. Your Foreign Secretary is an alumnus of JNU and at least four dozen Government Secretaries under this Government ...(*Interruptions*)

SHRI K.C. VENUGOPAL: It includes their own Minister.

SHRI M.B. RAJESH : Yes, but I do not want to name that Minister.

Anyway, more than four dozen Government Secretaries are alumnus of JNU. ...(*Interruptions*) Even the man who is steering the 'Make in India' is also from JNU; the Chief of Anti-Terrorist Division of RAW; and your CBI, Director are all from JNU.

HON. SPEAKER: Now, conclude your speech. There are so many people from that University.

...(*Interruptions*)

SHRI M.B. RAJESH: Madam, we were targeted by them. Now, we have to counter it.

Pawan Kumar, who laid his life bravely fighting the terrorists in Jammu and Kashmir recently, is also an alumnus from JNU. How can you brand such a prestigious University as centre of anti-nationals?

HON. SPEAKER: The University is not anti-national, but some persons may be. Please conclude now.

SHRI M.B. RAJESH : Do they have an iota of evidence to brand a University as a centre of anti-nationals and put the President of JNUSU behind bars? Yes, I can tell you that there has been fabrication of evidences and there have been photoshopping. In just a single week, there were four instances of photoshopping and fabrication of evidences.

The first was the so-called tweet which turned out to be a fake tweet, and the Home Minister was quick to believe what the Lashkar-e-Toiba leader has said and he accused them of having terror links. What is the credibility of the Home Minister then? Secondly, there was photo-shopping of a photo of Kanhaiya Kumar with the background of a divided map of India. That was also photoshopped. There was a morphed video. Have you got any answers? Can you tell us who conspired to fabricate such a video? Who are the beneficiaries of that video? On the basis of a morphed video, you are putting a promising student leader and an elected President of the Students Union behind the bars. There was again another fabrication. The National Human Rights Commission told us that a statement was fabricated -- the Police forced Kanhaiya Kumar to make a statement. So, there were these four instances of fabrication of evidences in a single week. Now, you are accusing all students as anti-nationals. ...(*Interruptions*) I can give you a lot of such instances. ...(*Interruptions*)

THE MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT, MINISTER OF HOUSING AND URBAN POVERTY ALLEVIATION AND MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI M. VENKAIAH NAIDU): Mr. Rajesh, who said it? We have our own students in the University. You are an educated man. ...(*Interruptions*)

SHRI M.B. RAJESH: I am talking about JNU.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Can you yield for a minute? Nobody can brand the entire University or all the students as anti-nationals. People who have put up a poster and held an event called "The Country Without A Post Office". It means, नाम निशानी नहीं है, ऐसा पोस्टर पुट अप किया। उसमें लिखा है, "Against the Brahminical cannibal collective conscience; against the judicial murder of Afzal Guru and Maqbool Bhat; in solidarity with the struggle of the Kashmiri people for their democratic right for self-determination." This is what the poster says. People are saying that this is anti-national. Why are you sympathising with those people? You are not an anti-national. Nobody called you an anti-national. Nobody can give a certificate as to whether one is a nationalist or an anti-national. You are trying to take cover under the students. Students are nationalists. Some fellows, who have been inspired by the Maoist ideology, are trying to mislead them, misguide them and put them into difficulties. That is the situation.

Nobody can say anything against the Jawaharlal Nehru University. It is a great University. We want that University to flourish from where great people have come. However, some people are now doing these things. Please do not try to divert the attention. Nobody is indulging in morphing. Morphing is being done by those people who are involved in the first instance and, subsequently, they have changed their stance. That is the evidence. Do you want to see the photographs? Everything is there. If any morphed photographs are there, then we can take action against them. We have the photographs with names, who have participated in the demonstration; who are the persons who were there; and what were the slogans that they have raised. All these things are on record. Let the University come out with its report. There is an inquiry going on. But do not make sweeping comments.

You are a very hard-working Party worker and there is nothing wrong in that because so are we. We are also Party workers. But you cannot say before the House that every student is being branded as an anti-national. No fool on the earth can say such things, I can tell you. Secondly, whether you are a nationalist or not, people will decide. How can one brand the entire institution as anti-national? We have no such intention. It is a wrong perception. Please do not try to mislead the people.

SHRI M.B. RAJESH: I am happy that the hon. Minister, Shri Venkaiah Naidu, has clarified the position, but he should advise his own MLAs and leaders on this. What did your Rajasthan MLA say? I do want to quote him: "जब छात्र आपका विरोध कर रहे हैं, आप विरोध के बारे में कह रहे हैं। आपके एमएलए ने कहा। One of your National Secretaries wanted one Member of Parliament to shoot his daughter because she is an anti-national. So, please advise your own leaders, your own MLAs and MPs on this.

Madam, I am coming to the last aspect. Now, we are also being targeted or branded as anti-nationals. Now, you are creating a divide between 'nationals' and 'anti-nationals', or 'nationalists' or 'anti-nationalists'. We are thankful for giving us an opportunity to expose you. Who are anti-nationals? I would like to say that we would rather allow our bodies to be cut into pieces than allowing the country to be cut into pieces.

We have bravely fought throughout these years in Kashmir, in Assam, in Punjab. We have fought the extremists and terrorists in Kashmir. Many of our comrades have become martyrs. Hundreds of our comrades have become martyrs fighting extremists in Punjab. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Please conclude.

SHRI M.B. RAJESH: This is an important and emotional issue. Many of our comrades have become martyrs fighting Khalistan extremists in Punjab, in Assam. We have got a glorious history of freedom struggle. Harkishan Singh Surjeet, the legendary communist leader, at the age of 16 years, braving the bullets of British, hoisted the National Flag, the Tricolour in Hoshiarpur Collectorate. The British Government had put a prize of Rs. 50,000 on the head of Shri EMS Namboodiripad during the freedom struggle. Shri A.K. Gopalan was the first Leader of Opposition. He was still in jail when the country attained Independence on 15th August, 1947. That is the legacy of the Left; that is the legacy of the Communists. Our legacy is that of Bhagat Singh, Sukhdev, Chandrashekhar Azad, Raj Guru and Kishori Lal were with us. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Now, Shri Varaprasad Rao.

Now you have to conclude.

...(*Interruptions*)

SHRI M.B. RAJESH: What is your tradition? I do not want to create any problems here. ...(*Interruptions*) Can you give me a single name...(*Interruptions*) who had not sought clemency from the British... (*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Now conclude. I am sorry.

Shri Varaprasad Rao.

...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: I have taken his name. Now, nothing will go on record.

...(*Interruptions*)â€! *

HON. SPEAKER: It is all right. I am sorry.

...(*Interruptions*)

SHRI VARAPRASAD RAO VELAGAPALLI (TIRUPATI): Madam Speaker, I thank you very much for giving me this opportunity. I also thank my Party and my leader Shri Jaganmohan Reddy. I wish that the discussion should have been made into two parts. You are very kind to repeatedly say that this issue is extremely sensitive. But what happened in Hyderabad is altogether a different one. It is based on the caste whereas in JNU it is on the national issue. So, altogether these are two different issues.

I would like to stress on what happened in Hyderabad. As many people said Rohith Vemula was literally driven to commit a suicide. Let us see the reasons as to how it happened. I would also request the Government here to ensure that such things should not happen at least in future. He was selected on merit. He was one of the brightest boys. He has come from a very poor family, a *dalit* family where his father had deserted his wife, that is, his mother. They were living in poverty. The Vice Chancellor, Shri Appa Rao – let me quote it because it is an open secret – had earlier a bad

history. As the Warden, he had suspended several *dalit* students from the mess. The second person who is involved in the suspension here is Shri Vipin Shrivastava, who is the Chairman of the Executive Council. He also had a bad history as far as *dalits* are concerned. When this person was the Dean of the Physics Department, he did not allow or did not allocate for one or two years a P.hD guide to a *dalit* student Senthil Kumar. As a result, he also had committed suicide. This time the same person Shri Vipin Shrivastava was the person for suspending these students.

The Hyderabad University since its inception from 1972 or 1973 – I repeatedly request the hon. Minister of HRD -- that there is not a single representative of the *dalit* in the Executive Council which decides the policy. Please listen, we have the right to speak here. ...(*Interruptions*)

Madam, the problems of SC people are extremely peculiar. We have been suppressed for centuries, we are poor people and poverty is the common thread for all of us, we do not have any social status, we do not have any political power. Therefore, the Government on its own should provide that security for us so that such things do not happen again.

Hon. Central Minister who is stationed in Hyderabad is an extremely graceful person, there is no doubt about that. He is a very seasoned politician. In his innocuous letters he used certain words that suspension is a small punishment. But he forgot that behind the suspension, the issue is very serious. For six months he was not given the JRF fellowship and there was no money with him to live outside. Living outside the campus costs at least Rs.15,000 to Rs.20,000. Students were barred from the library. Where would they go? And where would they go when the mess is closed for them? And hon. Minister says that suspension is a small punishment. Yes, it is so in normal cases. But when it comes to dalits, it is a question of their life. Therefore, before Ministers act in such a way, they should kindly take the backgrounds of the dalits into consideration.

And, definitely there is involvement of RSS here. ...(*Interruptions*) Kindly listen to me. This information is in the papers. There is nothing secret here. Every political party has its own student political wing. For example, when I studied in 1973, the hon. Minister Mr. Venkaiah Naidu, who is sitting here, was our leader for ABVP. We had never witnessed such kind of incidents. It was purely student versus student and union versus union kind of thing. There was no political interference at any time. Therefore, the Government should keep in mind that when students fight it is after all a storm in the cup. Why should the Government react? If the JNU students had pasted some posters out of sympathy for Jammu and Kashmir, not in favour of Afzal Guru or anybody, it is ...(*Interruptions*) Listen. Let us get back to the history. Repeatedly we have betrayed them. Wherever there is a majority of the Muslims, we are supposed to give it to the other side. We have not given it. Thereafter we have promised a referendum and we have not done it. Therefore, some students, I am not supporting it, kindly listen, â€

Madam, universities have a certain freedom of expression. The students have their rights. Why should we react to that? Why should the Government react to that? After all it is ABVP vs FSI or some other union or Maoists and we should leave it to them. Therefore, I repeatedly request that Government should not involve itself in issues like this.

I would request the hon. Minister of HRD to kindly look into the dalits issue in a different manner. I request her to see that a dalit representative is put up on Executive Councils where there is none now.

HON. SPEAKER : Please conclude now.

SHRI VARAPRASAD RAO VELAGAPALLI : Madam, one last point. This is extremely important. We are not speaking on political grounds.

Now the Government has announced a judicial probe into the incident. The Government should see that at least such things are not repeated. A pucca machinery should be put in place whereby dalits and the weaker sections could be protected in the long run.

Thank you very much.

श्री विराम पासवान (जमुई) : अध्यक्ष महोदय, आज इस विषय पर चर्चा के दौरान कई मत प्रकट किए गए। पक्ष-प्रतिपक्ष की अपनी-अपनी मजबूत सीमाएं होती हैं, सभी लोगों ने जो कुछ कहा उसमें मैं ज्यादा जोड़ना नहीं चाहता। अभी सदन में बैठे जितने भी युवा सांसद हैं, उनको इस जिम्मेदारी का अहसास जरूर होना चाहिए कि उन्हें अपनी पार्टी या पक्ष या विपक्ष की आवाज बनाने से ज्यादा जरूरी है कि वह युवाओं की आवाज बनें, युवाओं के मन में डेरें सवाल हैं। आज वे उन सवालों के समाधान से ज्यादा इस बात को गौर को सुन रहे होंगे कि क्या उनके सवालों को हमारी संसद में उठाया जा रहा है या नहीं या कहीं पर निगाहें और कहीं पर निशाना की तरफ पर युवाओं को निशाना बनाकर अपनी सियासत की जा रही है।

मेरे जेहन में एक सवाल कौंध रहा है कि आखिर भारतीय समाज की विचार यात्रा का ऐसा कौन सा मोड़ है जहां एक युवा को इतना मजबूर कर दिया जाता है कि वह अपनी जिनदगी से मजबूर होकर छार मान लेता है। हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी के स्कॉलर ने व्यवस्था से निराश होकर आत्महत्या कर ली, वहीं दूसरी ओर देश की एक प्रसिद्ध यूनिवर्सिटी आजकल चर्चा में है क्योंकि विषय देशविरोध से जुड़ा हुआ है। मेरी समझ से परे है कि देशविरोध की भाषाओं पर चर्चा या बहस की जरूरत की संभावना ही क्यों होनी चाहिए, जो गलत है वह गलत है, अगर देश में देशविरोधी नारे लग रहे हैं, चाहे विभाजनकारी तत्व जेएनयू के हों या किसी अन्य यूनिवर्सिटी में छात्र राजनीति का सहारा लेकर अपनी इन्टेंशन साधने की कोशिश कर रहे हैं तो वह गलत है और उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। देशद्रोह की भावना महज एक भटकान नहीं है, यह एक अक्षम्य अपराध है। भारत की माटी में पला-बढ़ा शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसकी ऐसी मानसिकता होगी किंतु अगर ऐसे तत्व हमारे समाज में हैं तो हमारा तंत्र सक्षम है कि वह उन्हें समाज से हटा सके, निपटा सके। हमें इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि बोलने की आजादी का मतलब देश के दुश्मनों की आवाज बनना नहीं है, इस बात को कतई बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। ऐसे मसलों को गंभीरता से डेंडल करना बहुत जरूरी है। मैं जातपात की राजनीति में अपने आपको नहीं उलझाना चाहता। आज दुखा इस बात का होता है कि ऐसी चीजों का राजनीतिकरण किया जाता है।

मुझे युवा होने के नाते ही दो मिनट अधिक दे दीजिए। प्रशासनिक स्तर पर मिसहैंडलिंग की वजह से कई बार सामान्य बातें छात्र राजनीति और बाद में राष्ट्रीय राजनीति का मुद्दा बन जाती हैं जिसका परिणाम होता है कि देश के सामने जो सही मुद्दे हैं जिसके ऊपर हमें चर्चा करनी चाहिए, उससे भटकर अन्य मुद्दों पर अपना समय व्यर्थ कर देते हैं। यहां पर किसकी गलती है यह भी जानने की जरूरत है। पिछले दिनों हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में जो कुछ हुआ उसमें हमारी पार्टी के सांसद और दलित सेना प्रकोष्ठ के नेतृत्व में श्री रामचन्द्र पासवान जी वहां गए थे। वहां से आने के बाद उन्होंने जो जानकारी दी, उसके बाद मेरे जेहन में एक ही सवाल उठता है कि रोहित के साथ जो कुछ हुआ, क्या इस सदन में बैल कोई भी सदस्य उसे सही ठहरा सकता है? उनकी मां को जिस दर्द और पीड़ा से गुजरना पड़ रहा है उसे हम सब मिलकर उनके दर्द को कम कर सकते हैं? मैं विनम्रता से इस बात को कबूल करता हूं कि अगर थोड़ी संवेदनशीलता से इस मुद्दे को डेंडल किया जाता तो नतीजे कुछ और होते।

मैं केन्द्र की सरकार को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने हमारी न्यायिक जांच की मांग को स्वीकार किया। अब स्वतंत्र एजेंसी के माध्यम से इसकी निष्पक्ष जांच होगी। मैं इस बात के लिए धन्यवाद देता हूं कि टाइमबाउंड जांच के आदेश दिए गए हैं। रिपोर्ट सामने आने के बाद दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। सबसे ज्यादा पीड़ा मुझे इस बात को सोचकर होती है कि आत्महत्या में अगर उनकी दलित पृष्ठभूमि कारण है तो समाज की ऐसी विचार यात्रा से मुझे भी असंतोष है। छात्र राजनीति किसी भी लोकतंत्र की बुनियादी ताकत होती है। कोर्स की किताबों से मिले ज्ञान के अलावा स्टूडेंट पॉलिटिक्स के जरिए राजनीतिक व्यवस्था का व्यावहारिक ज्ञान हमें मिलता है वह सही मायनों में छात्र की पूर्णता देता है। छात्रों द्वारा व्यवस्था को चुनौती देना या उसकी

ताकत बनना यह हमेशा की बातें रही हैं, लेकिन व्यवस्था की जिम्मेदारी रही है कि वह छात्रों को देश निर्माण के कार्यों में जोड़े। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपकी बात पूरी हो गयी है।

श्री विद्याम पासवान : मैडम, आप घड़ी देखकर एक मिनट और दे दीजिए। मैं जेएनयू के कई पूर्व और कई मौजूदा छात्रों के सम्पर्क में रहा हूँ। दूसरे प्रदेशों की तरह हमारे बिहार से भी कई छात्र जेएनयू जाते हैं और उनमें से कई शोध के कार्यों में लीन हुए, कई सिविल सेवा में गये, कई शिक्षक बने, अध्यापक बने और यहां पर कई नेता भी मौजूद होंगे, जो जेएनयू से आये होंगे।

मैडम स्पीकर, मुझे जेएनयू पर गर्व है और मुझे उम्मीद है कि अधिकांश सदस्य मेरी इस भावना से सहमत होंगे, जब मैं कहता हूँ कि मुझे जेएनयू पर गर्व है। हमें ऐसे मुद्दों पर राजनीतिकरण करने से बचने की जरूरत है। मैं अपने राजनेताओं और राजनीतिक दलों से आग्रह करूंगा कि जब ऐसे विषय हों, तो हमें अपने आपको छात्र राजनीति से जितना हो सके, उतना दूर रखना चाहिए, क्योंकि हमारे छात्र अपना भला-बुरा सोचने के लिए सक्षम हैं। वे अपनी गलतियों से सीखने के लिए सक्षम हैं। वे हमारे देश का भविष्य हैं। वे गलती करेंगे, तो सीखेंगे। लेकिन जब हम उसमें राजनीतिकरण करते हैं, जब हम ऐसे मुद्दों को फोटो ऑपर्युनिटी बनाते हैं, जैसे हमारे कुलीन साथी ने अभी कहा कि हम पोलिटिकल डेस्टीनेशन बना देते हैं। टूरिज्म के तौर पर लोग जाते हैं, फोटोज़ सिंवाते हैं, तो यह गलत है।

अंत में, मैं अपनी पार्टी की तरफ से और एक युवा सांसद होने के नाते अपनी जिम्मेदारी को बखूबी समझते हुए इस सदन से आश्वासन चाहता हूँ कि देश में जो लोग घुन लगाने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें समाप्त करना चाहिए लेकिन साथ में घुन के साथ गेहूं न पीसे, इस बात को भी हमें सुनिश्चित करना चाहिए। धन्यवाद।

श्री तारिक अनवर (कटिहार): अध्यक्ष महोदया, हैदराबाद में रोहित वेमुला के साथ जो हुआ, वह हमारे विश्वविद्यालय और अन्य शिक्षण संस्थानों में तबे समये से हो रहा है और हमारे समाज में वर्षों से हो रहा है, सदियों से हो रहा है। भारत में वर्ण व्यवस्था की जो कूरता है, वह दुर्भाग्य से हमारे समाज का एक हिस्सा बन गयी है। रोहित जैसे लोग हर क्षण इसके शिकार होते हैं। रोहित की आत्महत्या और उससे जुड़े हुए अनपहचानों ने छात्र युवा आन्दोलन को राष्ट्रव्यापी बना दिया है। हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के दो छात्र समूह थे। अखबारों में जो खबरें आयीं, उसके द्वारा हमें जो जानकारी प्राप्त हुई, उसी के आधार पर मैं कहना चाहता हूँ कि हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय में दो समूह थे। चूंकि एक समूह को वहां के वाइस चांसलर और मानव संसाधन विकास मंत्रालय का समर्थन था। यही कारण था कि रोहित की रिसर्च फेलोशिप को रोक दिया गया। एक रिसर्च स्कॉलर, जिसकी मां गांव में दर्जी का काम करती हो, कपड़े सिल कर अपने परिवार का पालन-पोषण करती हो, वह बिना फेलोशिप के अपना रिसर्च कैसे पूरा कर सकता था। कहा जाता है कि केन्द्रीय मंत्री के इशारे पर कुलपति ने रोहित और उसके साथियों पर सख्त कार्रवाई का एलान कर दिया। इस बीच नितांत गरीब परिवार से आने वाले रोहित के दिता-दिमाग में क्या चल रहा होगा, इसका अंदाजा हम यहां बैठकर नहीं लगा सकते। इसी कणमकण में शायद उसने आत्महत्या का फैसला कर लिया। एक केन्द्रीय मंत्री के द्वारा छात्रों के विवाद में ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : सबको स्टोरी मालूम है, इसलिए आप कुछ सॉल्यूशन निकालें, तो ज्यादा अच्छा होगा।

â€¦ (व्यवधान)

श्री तारिक अनवर : मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ। एक समूह का भरपूर पक्ष लेना और दूसरे को राष्ट्रविरोधी और जातिवादी बनाना, शायद मैं समझता हूँ कि रोहित की आत्महत्या की पृष्ठभूमि यहीं से तैयार होती है।

अध्यक्ष महोदया, जहां तक जेएनयू का सवाल है, यहां गृह मंत्री मौजूद हैं, शिक्षा मंत्री भी मौजूद हैं। मैं समझता हूँ कि जेएनयू के मामले में जिस प्रकार से सारी कार्रवाई हुई, उसमें कुछ जल्दबाजी दिखायी गयी, क्योंकि वहां कुलपति हैं, दूसरे लोग भी हैं। यह बात तय गयी कि कुलपति द्वारा एक इन्वॉयरी कमेटी बनायी जायेगी उसकी रिपोर्ट आने तक कम से कम पुलिस एक्शन से पहले इंतजार किया जाना चाहिए था, लेकिन बहुत जल्दबाजी दिखाई गई। इस वजह से जेएनयू के छात्राटल बिगड़ गए। आज हम सब इसे अपनी आंखों से देख रहे हैं, केंद्र सरकार सक्रिय हो गई है, घेराबंदी की जा रही है और जेएनयू को देशद्रोह का केंद्र साबित करने की कोशिश हो रही है। यह बात सभी लोगों ने कही है कि 9 फरवरी को जेएनयू में जो कुछ हुआ, वह एक शर्मनाक घटना थी। इसकी हर हिंदुस्तानी निंदा करेगा। देश के खिलाफ नारा लगाने वालों को माफ नहीं किया जा सकता है। जो भी कानून के अंतर्गत कार्रवाई हो सकती है, की जानी चाहिए। यह कहां का इंसाफ है कि जो लोग दोषी नहीं हैं, उनको भी प्रताड़ित किया जा रहा है। छात्र संघ के अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने जो पत्र पुलिस को सौंपा था, मैं उस पत्र का कुछ अंश कोट करना चाहता हूँ, उसमें लिखा है - "मैं भारत के संविधान में विश्वास करता हूँ, मेरा यह सपना है कि इसकी पूर्तावना को लागू करने में अपना हर संभव योगदान कर पाऊं। मैं भारत की एकता और अखंडता को मानता हूँ एवं इसके विपरीत किसी भी असंवैधानिक कार्य का समर्थन नहीं करता हूँ।" यह कन्हैया कुमार, जो जेएनयू के छात्र अध्यक्ष हैं, का बयान है। सरकार को कोई फैसला लेने से पहले कम से कम इस बात को जरूर ध्यान में रखना चाहिए। हैदराबाद में जो रोहित वेमुला के साथ हुआ, वह हम सबने देखा है। अगर इस तरह की कोई घटना होती है तो कोई अच्छी बात नहीं है।

अंत में मैं इतना ही कहूंगा, सरकार और राजनीतिक हस्तक्षेप इन व्यवस्थाओं को कितना बेअसर बना देती हैं, हम इस मामले में अच्छी तरह देख सकते हैं। जो काम कुलपति स्तर पर निपट जाना चाहिए था, उसमें दिल्ली पुलिस से लेकर देश के गृह मंत्री और सब उलझे पड़े हैं। हैदराबाद विश्वविद्यालय और जेएनयू के छात्र, रोहित और कन्हैया के साथ जो घटना हुई है, उसे ध्यान में रखना चाहिए और जल्दबाजी में कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे छात्रों के भविष्य पर असर पड़े।

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Madam, before the Minister respond to some of the issues, as an individual I am so disappointed that some people are trying to divert both the main issues and trying to make some sort of political points against each other.

The first point is, Madam, what happened in Hyderabad University, Rohith Vemula incident is unfortunate, condemnable and the Government has appointed an Inquiry Committee to get into this entire gambit and come out with its findings. If anyone has got any other issue they should also refer it to the Committee and the Committee can go into that.... (Interruptions)

The point which I want to bring to the notice of the House is, because I also have some connection with the city, in the Hyderabad University, Shri Jagdish Prasad Yadav, Ashima Dhawan, MSc Biotechnology, from backward class, died. Senthil Kumar, Ph.D student, Scheduled Caste, died. Keshava Charry, M.Phil, OBC, died. Balaraju, OBCâ€¦

PROF. SAUGATA ROY : Did all of them commit suicide?

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Yes, they committed suicide. I am trying to raise a serious issue. Try to bear with me. I am just coming to that, Sir. In the Hyderabad University itself so far 12 students have committed suicides and they belonged to weaker sections, poorer sections. This is happening since long from 2006, 2007, 2008, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014 to 2016.

So we have to understand the background as to why these things are happening. Why are social disharmony and discrimination there in the seat of learning? Who is responsible for this? Should the society in general not ponder over this subject and then come to some conclusion? Should the academic community and particularly the administration of the Universities not ponder over this issue and come to some conclusion? Then the

political leadership of the country are trying to make it a political issue and trying to tar somebody as pro-Dalit or anti-Dalit and score a political point is not good. As Mr. Chirag was saying, some are making it a political yatra and then going there and getting garlanded also. Somebody died there and how can anybody has a garland, I am not able to understand. Why I am saying this? We are trying to divert the attention from the main issue.

The main issue is, what the circumstances are which are forcing the students to commit suicide. That is the issue which has to be focussed. I only hope that the inquiry which has been ordered and the academic community in general will come out with solutions. Some people have mentioned not only in this University but in different Universities also, he gave a number. I am not going into that. That is one issue. All of us, should really feel ashamed if there is a social discrimination and on the basis of which such things are happening.

Secondly, what has happened there also and what sort of slogans were given, that also should be understood. It has nothing to do with Rohit. The slogans were – Yaqoob Memon, festival to commemorate, etc. The clashes were happening there. The Universities are meant for academic excellence, pursuance of studies, perusal of Ph.Ds. or not meant for such festivals and fight among people. Should we keep quiet and say that they are free and is Independent India we should allow such things to happen? This is the point I wanted to raise before this House.

Thirdly, today we are discussing about JNU. As I told you earlier, nobody is saying that JNU is anti-national. But definitely certain anti-national activities are happening at the behest of an organisation which is allied with Maoists. It is because the Maoist Organisation, PDSU and RSU are banned and as they are banned, they have taken a new avatar and then acting as Democratic Students Union. In the name of Democratic Students Union, they are doing such things. My blood is boiling. I do not know why other people are not getting agitated on this issue. I am happy that Tariq Anwarji has just now said that nobody can condone those slogans and those utterances. I had thought that the entire House would speak with one voice which would have sent a good signal. But if you speak in different terms and try to justify that and then try to connect it to dissent, then you are sending a wrong signal to encourage such tendencies and divisive tendencies among the students.

I am not going into the details of what is happening. The heading of the poster says: 'A country without a post office'. Is India without post office? The entire world is looking towards India under the great leadership of Shri Narendra Modiji today. The world wants to invest in India. I am a Minister of Urban Development and I can tell you that 36 countries have approached me in the recent past saying that they want to invest in India because this is the best place and also it is a hope for investment. That is the mood. The world is respecting India and some people are putting up posters saying: 'A country without a post office', 'against the judicial killing of Afzal Guru and Maqbool Bhatt, in solidarity with the struggle of Kashmiri people, etc.'

I would like to say to my friends from Congress to please discuss this quietly and clarify your position also. That will be useful to you in the long term. We may score political points against each other. Jyotiraditya said something and Anurag has to counter it. What I am asking is, should we not speak with one voice and condemn this action. The programme was 'Join us for a cultural evening'. A permission was sought from the University. The permission was given because initially this Afzal Guru and other things were not there. Some cultural programme goes on and विचार-मंथन होता रहता है जे.एन.यू. में। That has been the practice of that University and that is speciality of that University also. We have no problem on that count. Let the best thing come out of that *vichaar manthan*. When the University came to know of this at 3 o'clock, as per our information, the University withdrew the permission because the backdrop which was put there was about Afzal Guru, Maqbool Bhatt, etc. This happened on 9th February. The permission was withdrawn but these people went ahead without permission and started raising all these slogans and making all these speeches.

18.00 hours

It is unfortunate that some of my colleagues without knowing what is happening there, what is the purpose, who are the organisers, what is their intention, what is their background had joined there and expressed solidarity with those students. What is the solidarity? I can understand that after the arrest of Kanhaiya one can debate whether sedition charges against him should be there or not. I will come to that a little later. I am not defending it. I am not defending it either way. My point is that instead of knowing the background as to what has happened and what has been happening over the years, some people went there and expressed solidarity and then tried to make it as a battleground to fight against the Government of India instead of fighting against anti-national forces and instead of nipping it in the bud, some people tried to express solidarity with those people who are eulogising Afzal Guru. Who is Afzal Guru? I was there in the Parliament that day along with the Home Minister. If he had succeeded, what would have happened to the hon. Members of Parliament? None of us would have existed that day. We may have belonged to any Party. Such a fellow who is an anti-national, who is inspired by Pakistan and a person who is involved in this...(*Interruptions*) This is not the charge of Venkaiah Naidu. The Sessions Court, the High Court, the Division Bench, the Supreme Court after exhaustive long years of trial have decided on this case.

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यो, छह बज रहे हैं। अगर सदन की सहमति हो तो इस चर्चा को पूरा करने तक सदन का समय बढ़ा सकते हैं।

अनेक माननीय सदस्य : जी, हां।

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: I am under little emotion. Forget about political differences. We have our own differences. Everybody has got his own emotions but we should not create commotions unnecessarily. We have to check the commotion by controlling our emotion and to put in motion is our mission. All of us should understand this.

Madam Speaker, what was the slogan given? अफजल गुरु जो आपने अधूरा काम छोड़ा है, हम उसे पूरा करेंगे। "What is that *adhura kam*? The *adhura kam* was not being able to blast the Indian Parliament. That is the work that has been left behind. It is the time that we should remember the great people who saved all of us, including me and all other colleagues, the senior Members of Parliament – Late Jagdish Prasad Yadav, Security Assistant, Rajya Sabha Secretariat; he was given Ashok Chakra posthumously, Matwar Singh Negi, Security Assistant, Rajya Sabha Secretariat, Kamlesh Kumari, Constable, Central Reserve Police Force, Nanak Chand, Assistant Sub-Inspector, Delhi Police, Ram Pal, Assistant Sub-Inspector, Delhi Police, Om Prakash, Head Constable, Delhi Police, Vijayender Singh, Head Constable, Delhi Police, Ghanshyam, Head Constable, Delhi Police, Deshraj, Gardener, Central Public Works Department. An ordinary gardener who was working in the Parliament garden, they all come to our rescue. I salute their memory and the martyrdom they have. It is because of them that we are alive here. These people are saying such things today. Whether they are

guided properly or misguided or whatever it is, some people may say that they are misguided and they are youngsters and all, but I do not think so. They have been indoctrinated in such a manner that they believe that power comes through the barrel of a gun. That is not acceptable at all. That is why the Communist Party got separated from the CPI(ML). The CPI has got separated from the CPI(ML). The CPI(ML) had given this slogan and they are working according to that.

18.04 hours (Shri Hukmdeo Narayan Yadav *in the Chair*)

So, keeping that in mind, any sympathy with such people like Afzal Guru or Maqbool Bhat or Yakub Memon and all is nothing but clear anti-national; nothing but against the unity, integrity, security and sovereignty of the country. I would not like to take much time. I would like to quote Dr. Bhimrao Ambedkar because some people have quoted Netaji Subhash Chandra Bose and Rabindranath Tagore citing nationalism. What is nationalism? It is thinking about the nation; the nation includes people; people includes all caste, communities, religions and sects. This is nationalism. This is my understanding. If some people have got more knowledge because of their studies in some great universities, I do not know. We have all studied in street schools because we are ordinary people and the regime at that time did not provide us with such great opportunities. You can use liberal phrases. Can anybody be liberal with such anti-national activities? Can Indian Parliament be a silent spectator when such things are happening? Is it not the duty of all the elected representatives from all sides to speak in one voice; to rise in one voice and condemn and segregate the handful of people and not thousands of people? Double of thousands of people have also held demonstration. ...(*Interruptions*) You know what is acting. You have acted for 50 years.

On 25/11/1949, Dr. Ambedkar predicted what is likely to happen. He predicted it in 1949. Speaking in the Constituent Assembly at the time of the concluding discussion on the Constitution, he said:

"Here I could have ended. But my mind is so full of the future of our Country that I ought to take this occasion to give expression to some of my reflections thereon. On 26 January 1950, India will be an independent country. What would happen to her Independence? Will she maintain her Independence or will she lose it again? This is the first thought that comes to my mind. It is not that India was never an independent country. The point is that she once lost the independence she had. Will she lose it a second time? It is this thought which makes me most anxious for the future. What perturbs me greatly is the fact that not only has India once before lost her independence, but she lost it by the infidelity and treachery of some of her own people. In the invasion of Sind by Mahommed-Bin-Kasim, the military commanders of King Dahar accepted bribes from the agents of Mohammed-Bin-Kasim and refused to fight on the side of their King. It was Jaichand who invited Mohammed Ghori to invade India and fight against Prithvi Raj and promised him the help of himself and the Solanki Kings. When Shivaji was fighting for the liberation of Hindus, the other Maratha noblemen and the Rajput Kings were fighting the battle on the side of the Moghul Emperors. When the British were trying to destroy the Sikh Rulers, Gulab Singh, their principal Commander, sat silent and did not help to save the Sikh kingdom. In 1857, when a large part of India had declared a war of Independence against the British, some stood and watched the event as silent spectators.

Will history repeat itself? It is this thought which fills me with anxiety. This anxiety is deepened by the realisation of the fact that in addition to our old enemies in the form of castes and creeds we are going to have many political parties with diverse and opposing political creeds. Will Indians place the country above their creed or will they place creed above the country? I do not know. But this much is certain that if the parties place creed above the country, our Independence will be put in jeopardy a second time and probably be lost forever. This eventuality we must all resolutely guard against. We must be determined to defend our Independence with the last drop of our blood."

This is what Dr. Babasahib Ambedkar has said. This is what is required to be thought by every Indian, this side or that side, irrespective of party affiliations. We may have ideological differences. We had and we will have them. In a democracy, differences will be there. But at the end of the day, as far as the question of integrity and unity of the country is concerned, nobody can compromise, nobody can be lenient, nobody can be soft about such activities also.

I want to say that we, the Government, feel that we cannot compromise on India's security and safety and also compromise on the sovereignty of India. India is one. Ideologically we may discuss that your ideology is right and our ideology is wrong. That is for the people to decide as to whose ideology is wrong and whose ideology is right. But the final point is, India is one country.

Indian Parliament passed a Resolution during the period of Shri Narasimha Rao that not only Jammu and Kashmir but also Occupied Kashmir (PoK) is also part of India. That is the Resolution passed by the Indian Parliament unanimously, by all the parties.

श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद) : आप उसे जाकर ले लीजिए, सर और मसले को खत्म कीजिए। ... (व्यवधान)

श्री एम. वैकैर्या नायडू : ठीक है, जो सुझाव उठोने दिया, उससे मैं बहुत खुश हूँ, यदि जरूरत पड़ी तो जाएं और उनको साथ लेकर जाएं। ... (व्यवधान)

श्री असादुद्दीन ओवैसी : देशभक्त तो आप हैं, जनता ने यह जिम्मेदारी आपको दी है, हमको नहीं दिया है। ... (व्यवधान)

श्री एम. वैकैर्या नायडू : देश की एकता और अखण्डता एक व्यक्ति का, एक पार्टी का, एक नेता या एक प्लान का विषय नहीं है, यह सब भारतीयों का विषय है, जो करना है, सब लोग मिलकर करेंगे। ... (व्यवधान)

Madam, I just want to conclude by saying – I am sorry, Madam has converted and Sir has come – please understand the background of what is happening in universities; what happened in Hyderabad; what happened in Jadavpur. I do not want to repeat that. ... (*Interruptions*) I am worried because Jadavpur is in India. Otherwise, I would not have worried at all. I am worried because I am an Indian. ... (*Interruptions*) What happened in Jadavpur? What is happening here? ... (*Interruptions*) West Bengal is not an independent island. It is part of India and it is a pride part of India. What is happening in Jawaharlal Nehru University? A handful of people, who are in the periphery, who are not in the mainstream are misleading. Some are misleading and some are being misled. So, try to understand the factual position. Let us try to stand with the nationalist forces and then see to it that these forces which are trying to weaken India are nipped in the bud. This is the need of the hour. This is the call of the nation. If anybody has

got any other view, like the people who are sitting in the studios and making some commentaries sympathizing with Dawood Ibrahim, Afzal Guru, let them see the public opinion. In the on-line survey also, 99 per cent is on one side and only one per cent is on the other side. This has to be understood by all. (Interruptions) Shri Karunakaran, you need not get disturbed. ... (Interruptions) We are handling this situation firmly because it is a delicate matter. People do not want to enter the university. People do not want to hand over those people. It is the responsibility of people who are there, who are saying that they do not agree with them, they should identify them. ... (Interruptions) What happened in Patiala Court is totally condemnable. Nobody can accept that. Nobody can take law into their own hands, whether it is MLA belonging to this party or that party. That is totally wrong. There is no second opinion about that. But do not try to divert the attention from the main issue as some people are trying to do. ... (Interruptions) You are talking about our Maharaj. I can talk about hundreds of Maharajas of yours who have made such nonsensical statements earlier also. So, let us not get into that. He was civil enough to say that day अगर किसी के मन को कुछ दुख पहुंचा हो तो मैं उसके लिए खेद व्यक्त करता हूँ। ... (व्यवधान) ऐसा उन्होंने कहा है। Action will be taken against people and is being taken. If you have any suggestion and if you have evidence, please come out.

I wish that Shri Kanhaiya Kumar, who is a youngster should have come forward as President of the Students Union saying that, 'Sir, I was not one of them, but I went there to see. These are the people who were present'. Who were the people present there? It is all open. All these photos are there. ... (Interruptions) By defending them, you will be offending the national sentiments. ... (Interruptions) Who is innocent? Is Afzal Guru innocent? Is Maqbool Bhat innocent? Is Yakoob Memon innocent? ... (Interruptions) Please remember the sacrifices made by our jawans here, by our security forces here. Please remember the sacrifice made by Shri Hanumanthappa, Shri Unni from Kerala, and then the sacrifices made by ten soldiers who were martyred by the Kashmir avalanche recently protecting the nation at extreme weather conditions, like Havaladar Elumalai, S. Kumar, Lance Naik Hanumanthappa, Shri G. Ganesan and Shri Ramamurthy. If Kashmir is negotiable why should these people go there and sacrifice their lives coming from that part of the country? That is a question that one should ask to himself. So, please understand. Let us not try to politicize this. Let us confine to the main issue and then try to speak as one nation as far as anti-national activities are concerned.

Thank you.

श्री महिलकार्जुन स्वड़णे (गुलबर्गा) : सभापति जी, वेंकेया नायडू साहब ने बार-बार इधर अंगुली करके यह बताया... (व्यवधान) आप बैठ जाएं, हमें आपका पूरा इतिहास मातूम है। उन्होंने यह बताया कि कांग्रेस वाले एंटी नेशनल तत्वों को सपोर्ट कर रहे हैं, अफज़ल गुरु को सपोर्ट कर रहे हैं, मकबूल बट को सपोर्ट कर रहे हैं... (व्यवधान) पहले आप ही बोल लीजिए, मैं बाद में कहूंगा। यह जो बार-बार अपूर्यक्ष रूप से इस पार्टी को बदनाम करने की कोशिश हो रही है, मैं उसकी निंदा करता हूँ। हम एंटी नेशनल फोर्सेज का कोई भी रहने दो, चाहे वह यूनिवर्सिटी में हो, चाहे प्रोफेसर हो, चाहे लेक्चरर हो या कोई भी हो, अगर वह देश के खिलाफ काम करता है तो पहले उसे हेंग करो, हम आपके साथ हैं। लेकिन मैं पूछना चाहता हूँ कि आपके पास 80,000 कांस्टेबल्स हैं, पुलिस है और आप यहां पर रहते हैं, इसके बावजूद भी आठ-दस बच्चे जो गड़बड़ कर रहे हैं या एंटी नेशनल एक्टिविटीज कर रहे हैं, क्यों आप उन्हें ढूँढ़ नहीं निकाल पाए? यह किसकी गलती है, क्या यह हमारी गलती है? आपकी यह जिम्मेदारी है, आप उन्हें ढूँढ़ने के बजाए, उन्हें शिक्षा देने के बजाए, सारे लोगों को बदनाम कर रहे हैं। एक तरफ स्टूडेंट्स को बदनाम कर रहे हैं, दूसरी तरफ पॉलिटिकल पार्टी पर धब्बा लगाने की कोशिश कर रहे हैं।

माननीय सभापति : कृपया भाषण न दें, आपने अपनी बात कह दी है अब सदन की कार्यवाही आगे चलने दें।

श्री महिलकार्जुन स्वड़णे : मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या आप ही देशभक्त हैं, बाकी नहीं हैं। जैसे अभी आपने डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर कोटेशन यहां पर कोट किया। वही कोटेशन जब यहां 124 साल के उपलक्ष्य में डिवेट हुई थी, मैंने पूरी कोटेशन यहां कही थी। Till the last drop of our blood, we will defend. That is our case. But how are you treating Vemula? How are you treating Rohit? That is more important. उसके लिए आपके पास क्या जवाब है? उस कमेटी में आपने एक दलित सदस्य के नहीं रखा।

माननीय सभापति: आपकी बात पूरी हो गई, भाषण मत दें। अब कृपया बैठ जाएं।

श्री महिलकार्जुन स्वड़णे : आपने जो कमेटी गठित की है, उसमें एक भी दलित को नहीं रखा है, तो उसे क्या न्याय मिलेगा? इसलिए मैं आपके माध्यम से अपील करता हूँ कि आप पॉलिटिकल पाइंट स्कोर करने के लिए, दूसरी पॉलिटिकल पार्टीज पर धब्बा लगाने की कोशिश मत कीजिए। वे टॉलरेट नहीं करेंगी। अगर कोई हमें मिताने की कोशिश करेगा, तो हम कभी नहीं मितेंगे। हमें मातूम है, इस देश के लिए आपके पास जो देशभक्ति है, उससे बढ़कर हमारे पास है। हमारे लोगों ने तो देश के लिए कुर्बानी दी है और आप हमें सिखा रहे हैं। अफज़ल गुरु को क्या आपने फांसी दी थी? आप पी.डी.पी. के साथ दोस्ती करके वहां सरकार बना रहे हैं।

श्री एम. वेंकैरया नायडू : आपने पहले उनके साथ मिलकर वहां राज किया और रास्ता दिखाया।

श्री महिलकार्जुन स्वड़णे : आप स्पेशल प्लाइट लेकर आतंकवादी को छोड़ने गए थे और हमें देशभक्ति का पाठ पढ़ा रहे हैं।... (व्यवधान) हमसे आपको देशभक्ति का पाठ नहीं सीखना है।

माननीय सभापति: ठीक है, अब आप बैठ जाएं। श्री जय प्रकाश नारायण यादव, समय का अभाव है इसलिए आपको दो मिनट में अपनी बात समाप्त करनी है।

श्री जय प्रकाश नारायण यादव (बाँका) : सभापति जी, मैं पांच मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा। सदन में दो अति संवेदनशील मामलों पर बहस हो रही है। एक तो हैदराबाद की घटना जो रोहित वेमुला से सम्बन्धित है और दूसरी जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से सम्बन्धित है।

सबसे पहले तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि हम लोगों की रग-रग में देशभक्ति छिपी हुई है। देश की आजादी की लड़ाई में हम सब शामिल होकर लड़े हैं। लेकिन जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में जो हुआ, जहां देश के गृामीण परिवेश के बच्चे पढ़ने आते हैं, दलित, शोषित और गरीब आते हैं, जो ज्ञान का हब है, बड़ी साजिश और चालाकी के साथ वहां के इश्यू को डाइवर्ट किया जा रहा है। वहां पर विद्यार्थी परिषद और आप भगवा ध्वज फहराना चाहते हैं। यह कभी नहीं होने दिया जाएगा, हम इसे जानते हैं।

राष्ट्रीयता का कोई ठेकेदार नहीं हो सकता है। यह लोग केसरिया झण्डा फहराना चाहते हैं। तिरंगा किसी के लिए मजबूरी हो सकता है, लेकिन हम लोगों के लिए तिरंगा जरूरी है। हमें किसी से सर्टिफिकेट लेने की जरूरत नहीं है। इसीलिए अपमानित किया जा रहा है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय प्रगतिशील छात्रों का ज्ञान का मंदिर है। वहां जान-बूझकर इश्यू को डाइवर्ट किया जा रहा है। बाबा साहेब अम्बेडकर की 125वीं जयंती मनाई गई और यह कहा गया कि बाबा साहेब हमारी राष्ट्र की धरोहर हैं। बाबा साहेब ने कभी कहा था कि हमारा जन्म तो हिन्दू धर्म में हुआ है, लेकिन मैं दूसरे धर्म में मरना चाहता हूँ। आज भी आजादी के इतने वर्षों के बाद रोहित वेमुला आत्महत्या करने पर मजबूर है। आज भी दलितों पर, गरीबों पर अत्याचार बढ़ा है। छात्र आत्महत्या करने पर मजबूर हैं। इसलिए समय रहते सत्ताधारी लोग चेत जाएं। भारतीय जनता पार्टी चेत जाए कि यह अन्याय है। चाहे जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की बात हो या हैदराबाद यूनिवर्सिटी की घटना हो या जाधवपुर विश्वविद्यालय की घटना हो, आज जो भारतीय जनता पार्टी का सेट अजेंडा है और आरएसएस का सेट अजेंडा है, उसे लागू करने जा रहे हैं। हमारा मुल्क बड़ा है इसलिए सात जन्मों तक भी बीजेपी और संघ का अस्मान पूरा नहीं होने दिया जाएगा। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय जो छात्रों का हब है, वहां प्रगतिशील छात्र पढ़ते हैं और कन्हैया बिहार का नौजवान है। हमें उस पर गर्व है। कानून अपना काम कर रहा है लेकिन हमारे कन्हैया कुमार को जानबूझ कर साजिश के तहत उसे फंसाया जा रहा है इसलिए आज की तारीख में जो भी आप उनके खिलाफ साजिश कर रहे हैं, वह काम पूरा नहीं

हो सकता है। अंत में न्याय सामने आएगा।

18.23 hours (Hon. Speaker in the Chair)

श्री असादुद्दीन ओवैसी : मैडम, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। टैगोर ने कौमपरस्ती की मुखातिफ की, गांधी ने आवाजी कौमपरस्ती की बात की और दोनों ने हुबुलवतनी को कौमपरस्ती पर तरज़ीह दी। बीजेपी की तरफ से कौमपरस्ती की बात हो रही थी। मैं उनसे यह जानना चाहता हूँ क्योंकि यह लोग दुकान खोल कर बैठे हैं, वया यह कौमपरस्ती का सर्टिफिकेट देंगे? वया कांग्रेस कौमपरस्ती का सर्टिफिकेट देगी? मैं बीजेपी से पूछना चाहता हूँ कि नागालिम, नागा एकोर्ड वया हैं? वह नागा लिम कहते हैं और हिन्दुस्तान को नहीं मानते हैं। आपने उनसे हिन्दुस्तान में बात नहीं की, सिंगापुर में बात की। आप बताइए कौमपरस्त कौन हैं? पंजाब के चीफ मिनिस्टर ने वर्ष 1984 में हिन्दुस्तान के कंस्टीट्यूशन को जलाया, आप उनकी टाइड कर रहे हैं। कौमपरस्त कौन हैं? तीसरी बात आप अफ़ज़ल की बात करते हैं, जो नारे जेएनयू में लगाए गए हैं उसको नहीं मानता हूँ। मैं उससे मुतफिक नहीं हूँ, मगर शीनगर में जुममे के दिन नारे लगाए जाते हैं। वया आप शीनगर को बंद कर देंगे। पीडीपी की आप टाइड क्यों कर रहे हैं? कहां गयी आपकी हुबुलवतनी, कहां गयी आपकी कौमपरस्ती, कहां गए आपके भारत माता के वह नारे, कहां गयी आपकी हिन्दुस्तान से मोहब्बत, जब पीडीपी ने अफ़ज़ल गुरु को शहीद करार दिया था, ट्रैवस्टी ऑफ जस्टिस कहा था। आप उसकी बात नहीं करते हैं।

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि अफ़ज़ल मसला नहीं है। कश्मीर में वया हो रहा है, वया आप इस पर तवज्जो देंगे? यहां कांग्रेस के लोग जब फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेस की बात कर रहे थे, मैं इनकी इस बात को नहीं मानता हूँ। इन्हीं के दौर में अफ़ज़ल को फांसी दी गयी थी। वह कानून का फैसला था। मगर अफ़ज़ल की बेवा को उससे मिलने नहीं दिया गया? क्यों नहीं अफ़ज़ल की लाश को उसकी बेवा के हवाले किया गया? कांग्रेस पार्टी भी उतना मुनविस है, सेडिशन की जब बात आती है, महासद्द में आपने सेडिशन लगाया, आज आप लगा रहे हैं। मैं बीजेपी से चैलेंज करके कह रहा हूँ, वया कन्हैया पर आप इल्जाम साबित कर पायेंगे और अगर नहीं कर पायेंगे तो वया आप सियासत से दस्तबदर हो जायेंगे। कन्हैया पर कोई इल्जाम नहीं है, वह झूठा इल्जाम है, नारे नहीं लगाये गये, पुलिस की रिपोर्ट है।

मैडम, अब मैं रोहित की बात कहना हूँ, रोहित का कत्ल नहीं होता, अगर दत्तात्रेय खत नहीं लिखते। रोहित की मौत नहीं होती, अगर मोहतरमा स्मृति ईरानी उस पर एवशन नहीं लेती। रोहित का कत्ल एक इशदतन कत्ल है। रोहित को इन्साफ नहीं मिल सकता।

आखिर में मैं अपनी बात मुकम्मल कर रहा हूँ, मैं आपसे यह बात कह रहा हूँ कि कांग्रेस की हुकूमत रही तो यह कहते हैं कि हमारी लिबरल आइडियोलोजी है। बीजेपी की हुकूमत रही तो सावरकर की, गोलवालकर की, दीनदयाल उपाध्याय की आइडियोलोजी रही। आप दोनों आइडियोलोजी की बात कब तक करोगे? हिन्दुस्तान का दस्तूर कहां गया, वया खाक में चला गया? हिन्दुस्तान के दस्तूर पर आप अपनी आइडियोलोजी थोप रहे हैं, हम मरगलों पर थोप रहे हैं। अगर मैं सावरकर की, दीनदयाल उपाध्याय की इस आइडियोलोजी की मुखातिफ कर रहा हूँ, अगर मैं बागी हूँ तो मुझे अपनी बग़ावत पर फ़ला रहेगा। मैं आपसे बग़ावत करता रहूंगा, मुत्क से नहीं करता रहूंगा। मैं इसीलिए आपके जरिये हुकूमत से कह रहा हूँ कि दलितों को इन्साफ आपसे नहीं मिल सकता, क्योंकि आप एंटी दलित हैं। अगर कोई नारा लगाता है कि मैं मनुवादी के खिलाफ हूँ, मैं फिरकापरस्ती के खिलाफ हूँ तो इसमें कौन सी बड़ी बात है। इसीलिए मैं हुकूमत से कहना चाहता हूँ कि जेएनयू में जो कुछ हो रहा है, वह गलत हो रहा है और इस तरह से करने से आप जेएनयू में दाखिल नहीं हो सकते।

माननीय अध्यक्ष : अब आप खत्म कीजिए, आपकी बात पूरी हो गई। राजेश रंजन जी, अब आप बोलिये।

श्री असादुद्दीन ओवैसी : मैडम, मैं अपनी बात यह कहकर खत्म कर रहा हूँ कि आइडियोलोजीस को मत थोपिये, आप हिन्दुस्तान के दस्तूर पर कायम रहिये, हिन्दुस्तान के कंस्टीट्यूशन की बात करिये, जिसमें फ्रीडम ऑफ एक्सप्रेसन है और उन तमाम चैनलों के खिलाफ एवशन लीजिए, जो झूठ बता रहे थे कि हिन्दुस्तान के खिलाफ नारे लगाये गये। शुक्रिया।

श्री राजेश रंजन (मधेपुरा) : अध्यक्ष महोदया, यह देश, यह सभ्यता, यह मनुष्य कभी खतरे में नहीं हो सकता और जाति, धर्म और पंथ कभी खतरे में नहीं हो सकता। राजनीतिक व्यक्ति की सत्ता और वोट जब खतरे में पड़ती है तो यह देश, जाति, धर्म और पंथ को भी खतरे में डाल देती है। मैं बहुत ही विनम्रता के साथ कहूंगा कि पानी के बगैर मछली नहीं रह सकती है, उसी तरह अध्यात्म और हाई मोरल, आदर्श के बिना किसी व्यक्ति का निर्माण नहीं हो सकता।

महोदया, यहां गृह मंत्री जी मौजूद हैं। इसी देश में श्री अब्दुल कलाम साहब, जिनके पास गीता, बाइबिल और कुरान का मिश्रण था, उन्होंने मानव सभ्यता के लिए और राष्ट्र निर्माण के लिए अपने जीवन को न्यौछावर किया और पाकिस्तान में श्री अब्दुल कादिर थे, जिसके पास न तो अध्यात्म था, न तो मानव सभ्यता थी तो उसने अपने ही बनाये हुए परमाणु ऊर्जा को दुनिया में बेव दिया, यही मुत्क है। जब तक मानव का निर्माण नहीं होगा, हम जितनी बात कर लें। हम यहां गाली देने के लिए नहीं आए हैं। हम कन्हैया के गांव गये थे, कन्हैया पहले पटना में पढ़ता था। हम कन्हैया की मां और पिता से मिले, हम जेएनयू भी गये। हम वेमुला के सवाल को लेकर सिर्फ इतना ही कहना चाहेंगे।

महोदया, श्री नरेन्द्र मोदी जी के बारे में अभी बता रहे थे, निश्चित रूप से देशों और विदेशों में उनकी बड़ी चर्चा है और नरेन्द्र मोदी की तारीफ होती है। लेकिन इस गिरफ्तारी पर गृह मंत्री जी कोलम्बिया, इलाहाबाद, केम्ब्रिज जैसी संस्थाओं के 455 एकेडेमिडिशियंस ने जेएनयू विश्वविद्यालय के भीतर आलोचनात्मक सोच, लोकतांत्रिक असहमति, छात्र सक्रियता की राजनीति, मानवता की बहुलता के गले लगाने वाली सोच के साथ उन्होंने इस तरह की घटना की आलोचना की। निश्चित रूप से एक तरफ यदि नरेन्द्र मोदी जी का पूरा देश या दुनिया के द्वारा सम्मान करने की आप बात करते हैं तो वही देश और दुनिया ने इस घटना की बहुत मजबूती के साथ निंदा की है तो वया आप इसे स्वीकार नहीं करेंगे? मेरा सिर्फ यह कहना है कि 100 प्रतिशत टोलरेंस और अहंकार के क्षय के बगैर यह इतिहास है शोषण, शिव, राम, कृष्ण या जिनकी भी बात होती है।

जब बाबा साहब अंबेडकर जी की बात होती है, राम की सबसे ज्यादा आलोचना बाबा साहब अंबेडकर जी ने की थी और शंभूक के वध के खिलाफ बाबा साहब अंबेडकर ने जितनी बड़ी आलोचना की वया हम उसका विरोध कर देंगे? विचारों का सतत् संघर्ष रहेगा। वह भारत विरोधी नहीं हो सकता है। मैं इस सदन के भीतर कह रहा हूँ कि वेमुला आगे भी रहेगा, हम राजनीति करने वाले लोग जिस तरह की राजनीति कर रहे हैं, आजादी से ले कर आज तक कर रहे हैं, उसके कारण यह है। यदि पीओके की बात करते हैं, गांव घर में एक कड़ावत है कि कमज़ोर की बीवी सबकी भौजाई, मज़बूत की बीवी सबकी माँ है। पाकिस्तान पीओके की बात करता है तो मैं वैकैर्या नायडु साहब से आग्रह करूंगा कि पूरा सदन आपके साथ है। आप पाकिस्तान के पीओके पर हमला कीजिए और चीन ने जिस हिस्से को छीना है, उस पर हमला कीजिए और भारत की सरज़मीन को आप वापस लीजिए। आपको कोई नहीं सेकेगा, आपको पूरी ताकत देंगे। ... (व्यवधान)

मैडम, कन्हैया के प्रकरण पर मेरा सिर्फ इतना कहना है कि इस पर पूरी जांच कराई जाए। जो वकीलों ने किया, उस पर भी जांच कराई जाए। कन्हैया को बेरहमी से मारा, उस पर भी जांच कराई जाए। कन्हैया निर्दोष है, मैं व्यक्तिगत तौर पर कह सकता हूँ। कन्हैया पर से देशद्रोह का मुकदमा वापस हो और किसी भी छात्र की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को चैलेंज न किया जाए।

श्री दुष्यंत चौटाला (हिसार) : अध्यक्ष महोदया, जहां आज जेएनयू और हैदराबाद युनिवर्सिटी की चर्चा हो रही है, मैं 18 तारीख का एक वाक्या सदन के बीच में लाना चाहूंगा जो छात्रों से संबंधित है। माननीय एचआरडी मिनिस्टर और गृह मंत्री जी यहां पर मौजूद हैं। रोहतक की एमडीयू युनिवर्सिटी के नेकीराम कॉलेज और जाट कॉलेज के अंदर देर रात आठ बजे सोते हुए छात्रों पर ताटीचार्ज किया जाता है। जहां कानून कहता है कि किसी कैम्पस के अंदर घुसने से पहले प्रिंसिपल से या फिर प्रिंक्टर से अनुमति अधिकारियों को लेनी पड़ती है, वहां पर अमित भाटिया नामक डीएसपी डेढ़ सौ से ऊपर पुलिसकर्मियों को ले कर 40 से 50 निहत्थे युवा साथियों को पीटने का काम करता है। उसके बाद सुबह दोबारा साढ़े 12 बजे केंद्रीय सुरक्षा बल को साथ ले जा कर, उन युवा साथियों को जो अपने अधिकारों के लिए वहां पर एक धरना कर रहे थे, उनको तातियों से खदेड़ने का काम करते हैं। जब पूरा हरियाणा बंद था, उसके बाद डिप्टी कमिश्नर आदेश देते हैं, 19 तारीख की शाम को कि

students have to leave the hostel within five hours otherwise they will be forcefully removed.

माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से पूछना चाहता हूँ कि क्या आज हमने युवाओं को खिलौना बना कर रखा है। जब पूरा देश, पूरा प्रदेश बंद था, न कोई ट्रेन थी, न बस थी, उन युवा साथियों को आदेश दे दिए गए कि आप हॉस्टल छोड़ कर जाओ, नहीं तो आप पर बल प्रयोग किया जाएगा। मैं जेएनयू की बात नहीं करता, दिल्ली पुलिस उसके अंदर नहीं घुस पाई, मैं हैदराबाद की बात नहीं करूँगा कि एक युवा दलित छात्र ने खुसाइड किया, मगर हरियाणा प्रदेश के अंदर जहाँ फिजिकल इंजीनियरिंग युवा साथियों को दी गई, उनको कैवर्स आए, उनकी हैड इंजीनियर आई, उनको ऑस्पिटल तक ले जाने का काम पुलिस वालों ने नहीं किया। मैं इस पर न्यायिक जांच की मांग करूँगा।

श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा) : महोदया, आपने मुझे अत्यंत ज्वलंत विषय पर अपने विचार रखने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

आज देश में जेएनयू और हैदराबाद यूनिवर्सिटी में रोहित के मामले पर चर्चा हो रही है। मैं समझता हूँ कि सभी लोगों का जो विचार आया है, निश्चित रूप से जो राष्ट्रव्यतिरेकी काम करता हो, उस पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। जो उसकी गतिविधि में हो, उस पर भी कड़ी से कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन जेएनयू विवाद में छात्र कन्हैया जो बिहार का रहने वाला है, निश्चित रूप से उसकी जो अरेस्टिंग हुई है, मैं सरकार से जानना चाहता हूँ कि अरेस्ट करने के पहले कोई हकीकत जानने की कोशिश या तहकीकात की गई। देशद्रोह की धारा लगाने से पहले उस निहत्थे छात्र नेता के नारों की जांच की गई? क्या किसी भी नागरिक को अभिव्यक्ति की आजादी नहीं है? क्या संविधान से प्रदत्त अधिकार का हनन नहीं हो रहा है?

महोदया, जेएनयू एक प्रबुद्ध संस्थान माना जाता है। इसका बहुत ही ज्वलंत इतिहास है। देश को जेएनयू जैसे संस्थान पर गर्व है, किंतु सरकार आज इसे बदनाम करने पर तुली है। छात्रों की स्वतंत्रता पर किसी को आघात पहुँचाने की छूट नहीं होनी चाहिए। अगर सरकार की नीति या उसके आचरण की आलोचना करना राष्ट्रवाद से जोड़कर देशद्रोह मान लिया जाएगा, वह भी निहत्थे लोगों द्वारा, तो फिर संविधान के प्रदत्त मौलिक अधिकारों का क्या होगा? आज सरकार की वजह से ही देश की कई यूनिवर्सिटीज में जेएनयू की चिंगारी सुलग रही है।

महोदया, दलित परिवार से रोहित बेमुत्ता आता है। सीएसआईअय (जेआरएफ) द्वारा स्पोर्ट्सशिप भी उसे मिली थी। यूनिवर्सिटी और सरकार के दुलमुल रवैये के कारण 17 जनवरी, 2016 की रात को हॉस्टल के रूम में उसे आत्महत्या करने पर मजबूर होना पड़ा। इस दलित शोधकर्ता को पिछले सात महीने से स्पोर्ट्सशिप नहीं मिली थी। उसके 1 लाख 75 हजार रूपए शेक लिए गए थे। उसके पास फीस देने के लिए पैसे नहीं थे। यूनिवर्सिटी प्रशासन ने अंबेडकर स्टूडेंट एसोसिएशन के पाँच छात्रों को सरपेंड कर दिया था, जिसमें एक छात्र रोहित बेमुत्ता था।

माननीय अध्यक्ष : बैठिए कौशलेन्द्र जी। आपको एक मिनट का समय दिया गया था। वही बातें रिपीट करने से कोई मतलब नहीं है।

महेश मिश्री जी, मैं आपको भी दो ही मिनट दूँगी। आपकी पार्टी का समय है, मगर फिर भी मैं दो मिनट ही आपको दूँगी। आप जल्दी से अपनी बात कहिए।

श्री महेश मिश्री (पूर्वी दिल्ली) : महोदया, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। आज सभी बातें सुनकर मैं बहुत हैरान हूँ। मैं आज यह सुनकर इसलिए हतप्रभ हूँ, क्योंकि मैं वह शख्स हूँ, जो एफआईआर करने के लिए वहाँ पर गया था। एफआईआर करते वक्त मेरे दिमाग में केवल एक ही बात आ रही थी, मैंने यह नहीं सोचा था कि मैं सांसद हूँ या मैं किस पार्टी का हूँ, क्या हूँ, मैंने जब वे देश विरोध के नारे सुने, मुझे जिस तरह का दुःख हुआ, एक मिनट भी न सोचते हुए मैं सीधा गया और एफआईआर की। वह जो गुरसा मेरे भीतर था कि मैं जिस देश में सांसद होता हूँ, यह देश मुझे सब कुछ देता है, इस देश की रक्षा करने के लिए नौजवान अपनी शहादत देते हैं, आज कुछ बातें यहाँ पर मैंने कई लोगों से सुनीं तो ऐसा लगता है कि उस शहादत के साथ क्रूर मजाक किया जा रहा है। मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है, जब रामचन्द्र शनवान लंका से निकले थे तो लक्ष्मण जी ने कहा कि लंका जीत ली, अयोध्या में भरत जी हैं, उनको राज करने दीजिए, हम यहाँ राज करते हैं तो राम जी ने कहा था कि "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"। मुझे यह जन्म देने वाली माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है और उसको मैं प्रेम करता हूँ। आज वही बात मुझे याद आ रही है कि जो नारे वहाँ पर लगे थे, वे नारे लगाने वाले कोई भी लोग हो सकते हैं, कन्हैया हो या एक्स,वाई,जेड कोई भी हो, लेकिन जो नारे लगे थे, वे इस देश के लिए बहुत घातक हैं। वर्ष 1915 में पाकिस्तान जिवे-जिवे का नारा किसी ने कहीं लगाया था और पाकिस्तान अलग हो गया। गलती और साजिश में बहुत बड़ा फर्क है। बार-बार कहा जा रहा है कि गलती हो गई, उनकी गलती हो गई। गलती हो तो माफ की जा सकती है, साजिश कभी माफ नहीं की जा सकती। वे जो नारे लगाने वाले लोग हैं, बहुत भ्रमित किया जा रहा है संसद को, उनकी उम्र छात्रों की उम्र है ही नहीं, वे अथेड उम्र के लोग हैं। वे नौ-नौ साल से वहाँ पर पड़े हुए हैं और वहाँ देश विरोधी कई गतिविधियाँ चलती हैं।

मैं गृह मंत्री जी से आग्रह करना चाहूँगा कि वहाँ पर पूरी तहकीकात की जाए, कई तरह की ऐसी देश विरोधी गतिविधियाँ वहाँ पर चलती हैं। अन्तिम बात मैं यह कहना चाहूँगा कि यह सब कुछ जो हो रहा है, इस देश के अन्दर कई बार ऐसी बातें यहाँ पर की गईं, हकीकत में बात यह है कि यह जो सब कुछ हो रहा है या जिस तरह की आवाजें उठाई जा रही हैं कि हमारी आवाज दबाई जा रही है, हमें बात नहीं करने दिया जाता, हकीकत में बात यह है कि 60 साल जो यहाँ पर इस देश में राज किया गया, इन लोगों को हजम नहीं हो रहा है कि पिछड़ी जाति का एक व्यक्ति प्रधानमंत्री बना है। एक चाय वाला प्रधानमंत्री बना है, गरीबों का मसीहा प्रधानमंत्री बना है, यह इनसे हजम नहीं हो रहा है। यह इसी की पीड़ा यहाँ पर व्यक्त हो गई है।

SHRI C.N. JAYADEVAN (THRISSUR): Hon. Madam Speaker, I am thankful to you for giving me this opportunity to speak on this very important discussion.

Firstly, I want to say that I am a Member of the Communist Party of India and Kanhaiya Kumar is also a Member of the Communist Party of India. He is a leader of the All India Students Federation and he is an elected Chairman of the Jawaharlal Nehru University because he believes in the electoral system. The Maoists do not believe in the electoral system. They say that power grows out of the gun.

Madam, Kanhaiya Kumar is a Member of the Communist Party of India and also a leader of the All India Students Federation. Elections were conducted and he was elected as the Chairman of the Jawaharlal University and he is my brother.

Now, they have put him behind bars. The main reason behind the arrest of Kanhaiya Kumar is the Delhi local MP, who spoke just now. He was behind it. He is against that Chairman because of his ego. He is not invited to the Jawaharlal Nehru University for discussions, seminars and for inaugurations. That is his ego. He wants to smash that Chairman, Kanhaiya Kumar.

Madam, Kanhaiya Kumar belongs to a poor family. He belongs to the third generation of a family of Communist in Bihar, who had made immense sacrifices not only during Freedom Struggle but also continue to fight for people's rights and to defend democracy, secularism and rule of law. But such a man is, now, behind bars; and he is accused that he is not patriotic.

We heard in Kerala that somebody is selling patriotism in Delhi. Is it in RSS office or is it in ABVP office that patriotism is sold? Is it a wholesale business or retail business of patriotism?

HON. SPEAKER: All right. Now, Shrimati Anupriya Patel.

SHRI C.N. JAYADEVAN : We communists know what is patriotism. Kanhaiya Kumar knows what is patriotism...(Interruptions)

HON. SPEAKER: What can I do? You cannot tell the whole story. You have to conclude, now.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Okay, please conclude, now.

SHRI C.N. JAYADEVAN: The internationally reputed Jawaharlal Nehru University has been targeted from the day the BJP Government came to power. The BJP and its sister organizations, RSS and ABVP are preparing ground...(Interruptions)

HON. SPEAKER: It is okay. Now, nothing will go on record except the speech of Shrimati Anupriya Patel

...(Interruptions)â€¡ *

SHRIMATI ANUPRIYA PATEL (MIRZAPUR): Thank you, Madam Speaker, for giving me this opportunity to speak on this very important debate.

'हथी के दाँत खाने के और दिखाने के और' very well stated by Scindiaji. But I fail to understand who was he actually referring to – the NDA or the UPA. In the 10 years of the UPA regime, lots of cases of suicides came up but at that time, my friends from the Congress party, never raised the issue of caste-based oppression and discrimination in our central universities nor did they, at that point of time, see any such institutional murders, which they are referring to, happening within our central universities.

Madam, caste-based discrimination and oppression in our central universities is a reality but this has been in existence for a very long time. It is not something that has come up since the time, the hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi has come to power. It has been in existence for many years; and for much of the period after Independence, it is the Congress party, which has ruled over the country. Had they been so serious and sensitive about this issue of caste based oppression and discriminations in our central universities, then they would have really created a mechanism to sensitise our faculty members in the Central Universities to deal with students coming from varied social backgrounds. They would have also created a legislation to protect the students coming from the marginalized sections of the society from all forms of caste based discrimination and also they would have made efforts to fill up the backlog of the SC/ST/OBC vacancies in the faculties so that we see a social diversity in the caste composition of our faculties in the universities. But they never made such an effort. So, this 'हथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और,' applies more to the Congress Party than to the NDA.

Madam, there has been a lot of hue and cry about sedition.

HON. SPEAKER: Now, please conclude.

SHRIMATI ANUPRIYA PATEL : Madam, please let me speak. This is a very important subject in which I want to speak. I will finish in two minutes.

According to the Supreme Court, 'mere criticism of the Government or comments on the administration, however, vigorous or pungent or even ill-informed does not constitute sedition'. The question then automatically comes to my mind is this. Are we confusing Indian Government with India as a nation? It is because the kind of slogans which were raised in the cultural evening on 9th February within the JNU campus were not against the Indian Government. They were clearly against India as rightly pointed out by Anurag Thakur Ji. And, my friend from the Congress Party, Scindia Ji says that our party strongly condemns these slogans. I do not understand then what was his party Vice-President lending support to, when he went to visit those students who were raising such anti-national slogans, and you ask, "Is it a crime to follow Ambedkar?" Did Ambedkar any time say that you have to raise anti-India slogans?

Madam, people here are misinterpreting the fundamental right of freedom to speech and expression. It does not mean that it is an absolute right and we can raise slogans against our nation. We have to really review our definition and understanding of this fundamental right.

I wish to point out that as far as sedition is concerned, incitement to violence is the essential ingredient of offence of sedition. So, can the House deny today that the kind of slogans which were raised in the JNU campus were not having the potential of raising and giving rise to violence in the nation? I think it is up to the court to decide.

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER (PONNANI): Madam, the universities in the country are really in turmoil, not only in JNU, whether it is Hyderabad Central University or any other university. But who is responsible for this? That is the question. Venkaiah Naidu Ji was explaining in an elaborate way that it was the innocence of the Government. But with all the politeness, Madam Speaker, I wish to ask that, then who is responsible for this? I wish to say that it is the Government and the Government alone is responsible. The Government is responsible for creating such a situation. With all the politeness, I wish to say that it was the teamwork of two Central Ministers along with the Vice-Chancellor who is having a bad record of Dalit harassment, ABVP and BJP functionaries there. Because of this teamwork, such a situation, which is shameful for the nation, has been created. I wish to say that you cannot escape from this sin. What happened there really? The Ministers - I do not want to name any Minister - have shown undesirable interest in that. You are instrumental in creating all these problems. One Minister wrote a provoking letter to the Central Minister. Who authorized you to send this kind of letters? You want to encroach the university's autonomy.

HON. SPEAKER: Now, please conclude.

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER : You are liberal in giving time. I am just concluding.

HON. SPEAKER: I am not liberal today.

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER : So, they are instrumental for this. They have added fuel to the fire. So, they are responsible for creating such a

situation.

Actually, you have to think about the JNU affair also. JNU is like a volcano. You see, you are saying that the students are anti-nationals. What is the evidence with you? Depending upon some photographs and some reports, you are branding the brilliant students as anti-nationals.

HON. SPEAKER: Now, you are repeating. Please conclude.

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER : My case is new. So, what I am saying is, they should not brand the people like this.

Do you think that branding them as anti-nationals is an easy thing as you think? It cannot be tolerated. I would like to tell the Government that the Government should desist from doing this kind of things. The Government is really doing this. The Government is playing with fire....(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Now, Mr. Premachandran. Premachandran Ji, you should also follow the rules.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Madam Speaker, thank you very much.

Madam, we are discussing a very serious and sensitive issue regarding nationalism, patriotism and the unity and integrity of our country. I fully support and endorse the views expressed by the learned colleague in this House, Prof. Sugata Bose, and also I would like to congratulate him for having made such an exemplary speech in the House, which is raising the standards of debate of this House also.

Madam, the two issues, which I would like to highlight, are the Rohith Vemula case and the detention of Kanhaiya Kumar case. These two incidents are manifestations of dissatisfaction and unrest among the people of our country. Why is it so? It is because of the political system of governance that is now prevailing in our country. Due to paucity of time, I am not going into the details. There is a feeling of insecurity among the people, especially, among the Dalits and Backward Communities of the society as well as there is a feeling of unhappiness and insecurity among the minorities and also among the free liberal, independent thinking and progressive people. Those who are so secular are also having a feeling that there is a threat to the secular fabric of our country. That is the political situation prevailing in our country. This is only because of the Government and because of those who are responsible and holding office in the Government. I am not going to elaborate all the statements made during the last 20 months. This feeling of insecurity and dissatisfaction is because of the action of the Government.

I am not quoting the statement of the Haryana Chief Minister. Those who want to eat beef, go to Pakistan. If BJP fails in Bihar, then firecrackers will crack in Pakistan. So, you want to divide the country or you want to polarize the population of our country as national and anti-national and pro-Pakistan and anti-Pakistan. This is there in almost all the issues if you go through so many statements. Then, ban on non-vegetarian foods in the universities, especially in the IITs. This is only a controversial statement.

Regarding review of reservation policy, now Haryana is burning.

HON. SPEAKER: Now, you please conclude.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: Review of reservation policy by the responsible persons, indiscriminate killing of intellectuals and rationalists, appointment of BJP loyalists in the Film and Television Institute of India and so many other higher institutions—all these would go to show that there is a threat to the secular fabric and the minorities, the socially backward Dalit communities are having unrest, unhappiness and dissatisfaction. That is the main reason why this incident is being discussed.

Madam, Shrimati Anupriya Patel was talking here. Prior to her, Mr. Venkaiah Naidu was also speaking. In 2008, 2009, 2010, 2011, 2012 and 2013 also, there were Dalit suicides. Why has this issue risen up? This issue has risen up now because of this apprehension and because of most of the statements made by them. So, my point is, the BJP Government has to review the political philosophy and the way they manage the affairs.

How was the Jadavpur University issue managed by the West Bengal Government? They beautifully handled it. It did not become a national or international issue. Madam Speaker, you may kindly see that now this issue has become an international issue. Who made this as an international issue?

HON. SPEAKER: Now, you please conclude.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : A university issue and then it is being made as an international issue is only because of that.

My last point is that sedition will never hold good. I will make another point. The Delhi Police Chief, Mr. Bassi is there. What are his speeches? He is making political policies. I wonder that one fine morning he was saying he would not oppose the bail.

HON. SPEAKER: Please conclude.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN: So, my point is that the Government has to correct and review the policy and the system of governance which is responsible for this situation in this country.

With these words, I conclude. Thank you very much.

HON. SPEAKER: Shri Kodikunnil Suresh, I am allowing you only because Shri Kharge ji has requested me for it. Please do not take more than two minutes.

SHRI KODIKUNNIL SURESH (MAVELIKKARA): Madam, I am a senior Member, please allow me to speak for five minutes.

HON. SPEAKER: No. I am sorry. I know that you are a senior Member but I am senior to you. Please complete your speech in two minutes only.

SHRI KODIKUNNIL SURESH: Thank you, Madam, for giving me this opportunity to participate in this debate. I would like to remember and honour the sacrifice of Rohith Vemula, a brilliant *dalit* student, who had fought for his education rights. This coincides with the 125th birth celebrations of Baba Sahib Ambedkar and is a disappointing incident that *dalit* and *adivasi* students are not being considered as an integral part of the nation building. With various budget cuts and non-transfer of scholarships, the exclusionary processes are being followed in the higher education.

Madam, I will point out two-three important points. I would like to invite the attention of hon. HRD Minister. I am not going into the politics. I am only placing the issues which our *dalit* students have been facing in the campus.

Institutions of higher education in India have been affected by perpetuating caste based discrimination in a systemic way. As a result of this, education experiences for SC and ST students come through great struggles and at times through costs including cost to live. There are many challenges. The economic conditions of majority of SC and ST students being worse, their accessibility to higher education is restricted. The caste attitude of the privileged communities such as teachers, administration and peers towards students of marginalised communities is a cause for majority of dropouts in higher education.

Majority of *dalit* and *adivasi* students come from rural background and lack necessary social capital. They lack awareness about educational entitlements and government provisions. Even if students are aware of the government provisions, there is a systematic denial from colleges, universities, UGC and Ministries to access basic entitlements like scholarships, hostel, student support, fee reimbursement, etc. Furthermore, majority of faculty as well as administrative positions in institutes of higher education which were supposed to be filled by SC and ST candidates remain vacant even after repeated court orders just because there is a strong resistance from the dominant caste or class in such institutions. There is a huge gap not just in appointments of faculty and staff, but also a number of seats are vacant in admission of SC and ST students especially in specialized courses.

Madam, the allocation in respect of higher education for Scheduled Castes Sub-Plan and Tribal Sub-Plan has been cut short by the Ministry of Human Resource Development. In the previous years, there was a huge amount allocated for spending on the welfare of SC and ST students.

Madam, there is a very strong demand from the *dalit* as well as *adivasi* communities. We need a 'Rohith Vemula Act' similar to the 'Nirbhaya Act'. We request the Government to come up with the Rohith Vemula Act without delay, which may constitute the following things. An anti-discrimination monitoring authority named as Equity Committee in each and every education institution of the country with equal representation of Scheduled Castes and Scheduled Tribes in the body which will be responsible for receiving complaints, holding enquiry and ensuring preventive and protective measures on the complaints of caste and ethnicity based discrimination in educational institutions. ...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Mr. Suresh, please conclude. Hon. Minister may give the reply.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: After a long time, my friend Suresh has spoken on some issues. I congratulate him for it....(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: That is why I allowed him to speak.

SHRI KODIKUNNIL SURESH: Thank you very much.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Madam Speaker, I rise today after four and a half years as a parliamentarian. I am trying to address a gamut of issues before me. In my 20 months as a Minister I have served my country, my position and my people without any prejudice. And, those who lay seize upon my integrity in this very august House need to know the following.

19.00 hours

An idea is created in this country कि एचआरडी मंत्रालय मात्र उनके पत्रों का जवाब देती हैं, जो इस सरकार के मंत्री हैं। आज मैं उनसे कहना चाहती हूँ कि 01.05.2014 से लेकर 23.02.2016 तक सामान्य नागरिकों के 66,230 ग्रीवांसेज मेरे मंत्रालय को प्राप्त हुए और इस अवधि में मैंने लगभग 61,892 समस्याओं का समाधान किया। जिनके समस्याओं का समाधान किया, उनसे यह नहीं पूछा कि तुम्हारा क्या धर्म है, तुम्हारी क्या जाति है, तुमने किसको वोट दिया, उन्होंने इंसाफ के लिए गुहार लगायी और मुझमें जितनी क्षमता थी, मैंने उस न्याय को उन तक पहुंचाने का प्रयास किया। कुछ लोग शायद उपहास उड़ाते हैं और कहते हैं कि यह संघियों की पार्टी है, यह माइनोंडिटी को एक इनसिक्वोर इंवायरनमेंट में रखते हैं। आज मैं उनसे कहना चाहती हूँ कि 12.02.2015 को एक छात्र ने मुझे लिखा कि उनकी स्कॉलरशिप, फेलोशिप नहीं मिल रही है। यह छात्र कश्मीर का था, उसका नाम इकबाल रसूलदर था। मैं यह कह रही हूँ कि मेरे पास डॉक्ट्री एविडेंस है। उनको फेलोशिप नहीं मिल रही थी, उन्होंने गुहार लगायी, एक माह के अंतराल में एक लाख रुपये से भी ज्यादा की उनकी फेलोशिप का न्याय मैंने अपने मंत्रालय के माध्यम से किया। ...(*व्यवधान*) मैं आज आपका ध्यान आकर्षित करती हूँ कि आज इस सदन में कई लोगों ने आरोप लगाये और कहा कि किस अधिकार के साथ आप चिट्ठियां लिखते हैं।...(*व्यवधान*)

Sir, I am coming to the issue. Have patience. You accuse us of intolerance. Be tolerant. Here is my answer, Sir. I am giving my answer. ...(*Interruptions*) Or, do I claim to be a victim of my circumstances and say that since I am married to a micro-minority family and since I am a woman, you disallow me to speak in this House? ...(*Interruptions*) Do not, Sir, play your politics with me. Let me give you an answer today that I have patiently waited for days to give.

मुझसे कहा गया कि किस अधिकार के साथ आप जवाब देती हैं। ...(*व्यवधान*) मेरे पास माननीय सांसद के भी कई पत्र आये हैं। ...(*व्यवधान*)

HON. SPEAKER: All of you have taken her name. Now please listen. You will have to.

...(*Interruptions*)

HON. SPEAKER: Please do not do this.

...(Interruptions)

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : हनुमंथ राव जी मेरी पार्टी के सांसद नहीं हैं। ... (व्यवधान) वह कांग्रेस पार्टी के सांसद हैं। ... (व्यवधान) उन्होंने मुझे पत्र लिखा और कहा कि यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद में न्याय की जरूरत है। आज मैं विनम्रता के साथ सबसे कहना चाहती हूँ कि हनुमंथ राव जी के... (व्यवधान) हंसिए मत। ... (व्यवधान) बहन जी, जब बत्तों का एडमिशन करना होता है तो आप ही विद्दी लिख कर मुझे देती हैं और मैं एडमिशन कराती हूँ। ... (व्यवधान) रंजन जी, मैं पप्पू यादव जी का पत्र दिखा सकती हूँ, केन्द्रीय विद्यालय में किस-किस को एडमिशन चाहिए, मैंने कोटे के बाहर रह करके दिया है। ... (व्यवधान) आप मेरा जवाब सुनिए। ... (व्यवधान)

19.04 hours

(At this stage, Shrimati Ranjeet Ranjan and some other hon. Members came and sat on the floor near the Table.)

हनुमंथ राव जी ने मुझे पत्र लिख कर कहा कि जिस वाइस चांसलर को कांग्रेस की सरकार ने नियुक्त किया है। ... (व्यवधान) उस वाइस चांसलर के कार्यकाल में दलित बच्चों की आत्महत्या हुई। ... (व्यवधान) हनुमंथ राव जी ने मुझसे कहा कि आप न्याय कीजिए। ... (व्यवधान) हमने हनुमंथ राव जी के लिए कितने पत्र यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद को आग्रहपूर्वक लिखे। ... (व्यवधान) आज वह प्रमाण लेकर आपके मध्य आयी हूँ। एक रिमाइंडर हनुमंथ राव, एमपी, कांग्रेस पार्टी, 9 दिसम्बर, 2014, 4 सितम्बर, 2015, 30 सितम्बर, 2015, 6 अक्टूबर, 2015, 20 अक्टूबर, 2015 को पत्र निवेदन हेतु लिखे। ... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: I have allowed you. Please go to your seats.

...(Interruptions)

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : 19 नवम्बर, 2015, 6 जनवरी, 2016, ये सारे पत्र हमने निवेदन हेतु लिखे ताकि वादे वे सांसद कांग्रेस के हों या किसी और पार्टी के हों, जिन उतर की वे हमसे उम्मीद बांधकर बैठे हैं, उस उम्मीद को मैं पूरा करूँ। ... (व्यवधान) आज इस सभागार में मुझ पर आरोप लगाया गया कि किस अधिकार से मैं विद्दी लिखती हूँ। ... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: No, this is not the way.

...(Interruptions)

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : मैं उन कांग्रेस के नेताओं को विनम्रतापूर्वक दस्तावेज दिखाती हूँ। ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप पहले सीट पर जाइए फिर मैं बात करूँगी।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Please go back to your seats first.

...(Interruptions)

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : 5 मई, 2011 को नारायण स्वामी जी, कांग्रेस के नेता, उन्होंने पत्र में लिखा। ... (व्यवधान)

HON. SPEAKER: Please go to your seats and then only I will say something.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: How will I say? No, you will have to go to your seats.

...(Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : आप बहाना मत बनाइए।

â€¦(व्यवधान)

19.06 hours

(At this stage, Shri Mallikarjun Kharge, Shri P. Karunakaran and some other

hon. Members left the House.)

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : अध्यक्ष महोदया, अपना कर्तव्य जिसका मैंने पालन किया, उसके लिए मैं माफी नहीं मांगूँगी। ... (व्यवधान) नारायण स्वामी जी का 5 मई, 2011 का पत्र है। ... (व्यवधान) मेरे नेता नहीं थे। ... (व्यवधान) सरकार में अपने कर्तव्य का पालन कर रहे थे। ... (व्यवधान) नारायण स्वामी जी ने जो पत्र लिखा, उसमें महामहिम राष्ट्रपति जी के नाम का उल्लेख है। ... (व्यवधान) जाइए, जाइए, मत सुनिए जवाब क्योंकि आपकी इच्छा जवाब सुनने की थी ही नहीं। ... (व्यवधान) आपकी नीयत में खोट था, इसलिए आज पीठ दिखाकर जा रहे हैं। ... (व्यवधान) जवाब सुनिए। ... (व्यवधान) सिंधिया साहब, आपने मुझसे कहा कि बैठो-बैठो, सुनो। ... (व्यवधान) अब सुनने की बाड़ी आपकी है, सुनिए। ... (व्यवधान) मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रही थी और मुझे आज सूली पर चढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। ... (व्यवधान) मुझे अमेठी से लड़ने की यह सजा देंगे। ... (व्यवधान) तो आज मेरा जवाब सुनिए। ... (व्यवधान) नारायण स्वामी जी के पत्र में लिखा है --

"Communication received from Members of Parliament specify that such communication should be attended to promptly and acknowledged within 15 days followed by reply within 15 days." ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आपको बिना उत्तेजित हुए जवाब देना है।

â€¦(व्यवधान)

HON. SPEAKER: This is not the way.

...(Interruptions)

SHRIMATI RANJEET RANJAN (SUPAUL): Shame on you!

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI : Shame on you, Madam. You do not have the courage to listen to what I have to say. You just want to do your politics. Hear what I have to say if you have the courage today... (व्यवधान) आज मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि मैं और ओवैसी साहब राजनीति के दो छोरों पर खड़े हैं... (व्यवधान) शायद हम राजनीति की दुनिया में आंख से आंख कभी नहीं मिलाएंगे... (व्यवधान) लेकिन ओवैसी साहब ने मुझे एक पत्र लिखा। ... (व्यवधान) मैंने कोई एहसास नहीं किया, अपने कर्तव्य का पालन किया... (व्यवधान) उन्होंने अपने पत्र में लिखा कि एक ऐरोसिटी हो रही है, लैक्चरर का ऐप्वाइंटमेंट है, मोहतरमा, आप देखिए... (व्यवधान) ओवैसी साहब, आपके पत्र के लिए भी मैंने नहीं बल्कि मंत्रालय ने लिखकर... (व्यवधान) जवाब सुन लीजिए... (व्यवधान) ओवैसी साहब, मैं आपके पत्र का जवाब दे रही हूँ। ... (व्यवधान) वही तो बात है... (व्यवधान) मुझे सूली पर चढ़ाया जा रहा है क्योंकि मेरे विभाग ने पत्र लिखा... (व्यवधान) ओवैसी साहब के पत्र के लिए हमने 17.10.2014, 30.01.2015 को गुजारिश की... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : मंत्री को करना होता है।

â€¦(व्यवधान)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU: Please try to understand that she is not saying that she has done something great. A question was raised as to why the Minister is interfering and why she is writing letters. So, she is explaining it. ... (Interruptions) It is not one person, but a number of people have written letters from all Parties. ... (Interruptions) This is what she is submitting.

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : महोदया, मैं जवाब दे रही हूँ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : आप उतेजित मत होइए।

â€¦(व्यवधान)

SHRI M. VENKAIAH NAIDU : As a mother, she has to follow your advice, but try to understand her pain and agony.

HON. SPEAKER: I can.

SHRI M. VENKAIAH NAIDU : The way she has been cornered also.

HON. SPEAKER: Yes, I can understand it.

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : 10 अगस्त, 2015 को ओमन चांडी, केरल के मुख्यमंत्री, डॉ. शशि थरूर जो कांग्रेस के एमपी हैं, पूर्व एवआरडी मंत्री हैं, उन्होंने भी कई निवेदन भेजे और हमने अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए उस पत्र को आगे बढ़ाया कि जवाब देने में मदद कीजिए। आज यहां पर सौगत बोस नहीं हैं, उन्होंने बार-बार पत्र लिखा, प्रदीप भट्टाचार्य जी ने बार-बार पत्र लिखा कि विश्व भारती जिसकी स्थापना स्वीनड्र नाथ टैगोर ने की, कांग्रेस की सरकार ने एक महिला के ऊपर अत्याचार करने वाले व्यक्ति को वीसी बनाया और न्याय की अपेक्षा इन्होंने नरेन्द्र मोदी जी की सरकार से की। हमने भेदभाव नहीं किया, यह नहीं देखा कि किस पक्ष के नेता ने मुझसे किस आदेश के लिए अथवा निवेदन हेतु मेरे सामने कागज प्रस्तुत किया। आज मुझ पर भेदभाव का आरोप लगाया जाता है, अगर आरोप ही लगाया होता तो जिस दिन मैंने प्रेस कॉन्फ्रेंस की थी, उस दिन मैं भी आरोप लगा सकती थी, एक बच्चे की मृत्यु होती है और उस मृत्यु के ऊपर राजनीतिक दंढ होता है लेकिन देश जानता है कि जिस एविजवयूटिव काउंसिल ने निर्णय से रोहित को बर्खास्त किया गया उस काउंसिल के एक भी मेंबर को एनडीए की सरकार ने अप्वाइंट नहीं किया था बल्कि शूपीए की सरकार ने किया था। उस कमेटी ने यह देखते हुए कि इस फैक्टली में कोई दलित मेंबर नहीं है तो दलित मेंबर को कोऑर्ड किया, चीफ वार्डन स्वयं दलित हैं, उन्होंने बच्चों को समझाया और अपने निर्णय को उन तक पहुंचाया। ... (व्यवधान) मेरा जवाब पूरा होने दीजिए।

SHRI VARAPRASAD RAO VELAGAPALLI (TIRUPATI): But he had objected to the suspension. ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Please take your seat now. Do not give any reply to that.

...(Interruptions)

HON. SPEAKER: Nothing else will go on record, except the Minister's speech.

...(Interruptions)â€¦*

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : मैडम, आज मैं कहना चाहती हूँ कि जब इस घटना के बारे में मैंने सार्वजनिक बयान दिया तो कहा कि इसे जाति की नजर से मत देखो। मैंने एक बच्चे की बात की, दलित छात्र की बात नहीं की। मैं तुलना देती हूँ कि कोई भी मुझ पर उंगली उठाकर कहे कि मैंने जाति के आधार पर न्याय या अन्याय करने का दुस्साहस किया। मेरा नाम स्मृति इरानी है, मेरी जाति बताकर देखिए, नहीं बता सकते। आज मैं इसलिए आक्रोशित हूँ क्योंकि जो जन्म देती है उस पर आप खून का इल्जाम लगाइए तो स्वाभाविक है कि वह अंदर से टूट जाएगी।

SHRI VARAPRASAD RAO VELAGAPALLI : Hon. Minister, do not take it personally.

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: I am taking it personally and I will tell you why. कैसे इस बच्चे का इस्तेमाल किया, उसका आज पूमान देती हूँ, के.सी.आर जी को मैंने सुबह में फोन किया, जैसे ही मेरे पास घटना की सूचना आई, वहां पर उनकी सरकार है, वहां पर तॉ एंड ऑर्डर की सिचुएशन खराब न हो, मेरी मदद कीजिए क्योंकि तॉ एंड ऑर्डर स्टेट का विषय है, मुझसे कहा गया कि साहब अभी बिजी हैं बात नहीं कर सकते। इसके लिए मैंने सार्वजनिक बयान नहीं दिया, मेरा कॉल रिकार्ड पर है, उनकी पुत्री से भी मैंने इसका उल्लेख किया। मैंने मुख्यमंत्री जी के खिलाफ कभी सार्वजनिक बयान नहीं दिया। मैं आज तक उनके कॉल का इंतजार कर रही हूँ लेकिन वह नहीं आया।

SHRI ASADUDDIN OWAISI (HYDERABAD): Madam, I take strong objection to this. ... (Interruptions)

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Sir, allow me to complete what I have to say. मुझे जो जानकारी प्राप्त हुई है उसे ओवैसी साहब, ... (व्यवधान) एक कैबिनेट मिनिस्टर मदद की गुहार लगा रही है, इसे आप चेक कीजिए। ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: The interruptions will not go on record.

...(Interruptions)â€¦*

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : पुलिस ने तेलंगाना हाई कोर्ट में जो दस्तावेज दिया है उसमें क्या लिखा गया है? उसमें यह लिखा गया है कि ... (व्यवधान) पुलिस को सूचना शाम सात बजकर 20

मिनट पर मिलती है। उसमें यह लिखा गया है कि जब पुलिस मौक-ए-वास्ता पर पहुंचती है ... (व्यवधान) And I am quoting it. My friend in Telangana can possibly have access to that document, verify it and if I am wrong, can correct me. पुलिस यह कहती है। When they rushed to the university, they found the room open, dead body removed from the hanging and kept on a table. A hand written suicide note was written which did not blame anybody and specifically stated that nobody is responsible for this act. My request is that this is not my submission but that of the police in a State. (Interruptions)

HON. SPEAKER: She is not yielding. Why are you asking?

...(Interruptions)

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: That is why I am saying. If I am wrong, correct me. ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: What is it?

...(Interruptions)

SHRI A.P. JITHENDER REDDY (MAHABUBNAGAR): Madam, when her phone call had come, I personally was there. He was in a meeting. Immediately, he called the IG (Intelligence) Shri Shivdhan Reddy. He told him to enquire about what has happened. After fifteen minutes, the IG (Intelligence) came and told about all this. He also said that the mob is there. They are not allowing the body to be removed immediately. So, he told them to arrest Shri Dattatreya ji so that the mob can be controlled. After that, he wanted to contact her. He told the same matter to the Prime Minister. When he went and met him, he told him that Shrimati Smriti ji had called up and we have taken action. We have also given instructions to arrest Shri Dattatreya ji so that law and order could be controlled. We had totally helped her. We were with her. You cannot put an allegation on us. Shri KCR has acted in a proper way. We had the elections. We did not put any allegation. ... (Interruptions)

HON. SPEAKER: Please take your seat.

...(Interruptions)

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: It is interesting that in his statement in this very august House, he says, "Arrest Shri Bandaru Dattatreya, if you want to control a mob, not because he is guilty, but arrest him nonetheless because you want to control the mob." ... (Interruptions)

SHRI ASADUDDIN OWAISI: It was because of the letter. ... (Interruptions)

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Let me read the letter. ... (Interruptions)

SHRI ASADUDDIN OWAISI: How can that be possible? ... (Interruptions)

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: Let me read the letter. Let me also read what happened there. Nobody allowed a doctor near this child, to revive this child, to take him to the hospital. Nobody allowed a doctor near him. The police has reported that not one attempt was made to revive this child, not one attempt was made to take him to a doctor. Instead what was done was that his body was used as a political tool, hidden. No police was allowed till 6.30, the next morning. It is not me but the Telangana Police is saying this. When I say that I am pained कि एक बच्चे के दुर्भाग्यपूर्ण, लोग बोलते हैं कि एक बच्चे की मृत्यु पर किस प्रकार से राजनीति हुई, यह उसका प्रमाण है। वहां की पुलिस न्याय करने के लिए सक्षम है, लेकिन साढ़े छः बजे तक कोई भी डाक्टर इस बच्चे के पास नहीं गया, क्योंकि जो आवाज लगा रहे थे, वे न्याय नहीं चाहते थे, राजनीति चाहते थे। किस ने उस बच्चे को डेड डिक्लेयर किया? Who was medically equipped to declare this child dead? How many cases go when an individual tries to hang himself, the vertebra does not break, pulse goes down to 30, 40 and an individual can be revived medically. There are people who are more expert. How many people? Who tried to help this child? My accusation today is this. The people who passed a judgment to have this child disbarred are not people appointed by the BJP led NDA but by the Congress Party. In everybody's political experience, has anyone ever seen Shri Rahul Gandhi going to one spot twice? No, he has never gone. About six hundred students died for the Telangana movement. Did he go once? He did not go once. But in this, he saw a political opportunity. ... (Interruptions) This child in his statement says, no one is responsible for my death. But yet, you seek to use this child for your own political ends. That is the tragedy. ... (Interruptions)

SHRI A.P. JITHENDER REDDY: We never wanted to politicize it.

HON. SPEAKER: What is this happening?

SHRIMATI SMRITI ZUBIN IRANI: People who espoused the cause of free speech and attack this Government, who say that we are anti-minority, anti-dalit, anti-tribal, time and again they have been requested, do not make this and use against them. I am not certifying your patriotism, but do not demean mine. I am not certifying your idea of India, but do not demean mine. And to them I say, Madam Speaker, this is the permission slip from JNU which clearly says that Omar Khalid, one student, wanted to book the venue from 5 o'clock to 7:30 on the 9th. The form asks what is the purpose of booking the venue. He says, poetry reading. The form asks whether any special arrangements are required. He says, electricity for mic. And very well, the university gives him the permission. What transpires later is something many people have question-marked. यह असत्य है, यह असत्य है। तारिक अनवर साहब ने कहा - पहले यूनिवर्सिटी को तो अपनी तहकीकात करने दो फिर पुलिस को आने दो। यूनिवर्सिटी के सुरक्षा विभाग का ब्यौसा 11.02.2016 का है, जिसमें 35 सुरक्षाकर्मी और तीन महिला गार्ड सिग्नेचर्स के साथ अपना बयान देते हैं, कहते हैं - 16.45 पर सुरक्षा टीम मौक-ए-वास्ता पर पहुंची, 35 और 3 यानी 38 लोग, They have given a written response. They are a part of the security of the university, not the police. And they say - भीड़ बढ़ने लगी, छात्र उमर, अनिर्बाण वहीं खड़े रहे, अफजल गुरु, मकसूत भद्र जिंदाबाद, कश्मीर की आजादी तक जंग रहेगी, जंग रहेगी, भारत की बर्बादी तक जंग रहेगी, जिस कश्मीर को खून से सींचा वह कश्मीर हमारा है, हम वया मांगें आजादी, बंदूक से लेंगे आजादी, गो इंडिया गो बैक, इंडियन आर्मी मुर्दाबाद। दो-तीन और लोग मुंह पर कपड़ा लगाए हुए थे। यह कोई वीडियो नहीं है, यह कोई पुलिस नहीं है, यह अर्नब गोस्वामी नहीं है। यह सुरक्षा विभाग, जो सरकार से कोई सरोकार नहीं रखती उसका ब्यौसा है। आफिस आर्डर निकलता है, जवाहर ताल नेहरू यूनिवर्सिटी जिसमें... (व्यवधान) में पढ़ रही हूँ। जय प्रकाश जी, पढ़ रही हूँ। इस आफिस आर्डर में चीफ प्रोक्टर हैं, Deans of all Schools, Deans of all students, Chairpersons of Centres, all Proverbs, all Senior Wardens, Controller of Examinations, Librarian, CMO, Deputy Director (Sport) इन सबके लिए यह पत्र है। इस कमेटी ने, जिसका सरकार से कोई सरोकार नहीं है, यहां कम्युनिस्ट पार्टी के एक महाशय ने कहा कि स्मृति ईरानी ने बड़ी कोशिश की कि अपना वीसी लगाए लेकिन किसी और को लगाया गया, जिसके लिए कोशिश की थी वह भी पदम विनर थे, जिसे कांग्रेस ने सम्मान से सजाया था, हमने नहीं। महामहिम राष्ट्रपति का अधिकार है, उन्होंने वीसी को नियुक्त किया। वहां के टीचर्स हैं, जिन्हें हमने एपॉइंट नहीं किया, उन्होंने यह फरमान दिया। Misrepresentation of proposed event as cultural evening although the objective was to hold a political meeting, forcefully holding the event when the permission to hold was withdrawn, creating a law and order situation on campus, and the *prima facie* Enquiry Committee finds the following individuals to be involved.

The individuals who are named by the Faculty of JNU are Syed Umar Khalid, Anirban Bhattacharya, Ashutosh Kumar, Rama Naga, Anant Prakash Narayan, Kanhaiya Kumar, Aishwarya Adhikari and Shweta Raj. Considering the seriousness of the offence and in order to enable a fair inquiry into the incident, the inquiry committee has recommended that the above mentioned students may be academically suspended from JNU with immediate effect during the pendency of the inquiry. However, they will be allowed to stay in their respective hostels as guests during the period of inquiry.

यह गृह मंत्रालय का फरमान नहीं है, यूनिवर्सिटी की फैकल्टी ने सभी तथ्यों को देखकर अपना निर्णय दिया है। कुछ लोगों ने यह आरोप लगाया है। आरोप लगाना एक सफल लोकतंत्र की निशानी मानी जाती है। इसलिए उनके आरोपों के सामने वह प्रमाण प्रस्तुत करती हूँ जो यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार द्वारा अटैस्टेड है और ये वे रजिस्ट्रार हैं, जिनको हमने नौकरी पर नहीं रखा। इनको पिछली सरकार ने नौकरी दी। यह 22 फरवरी 2013 का पैम्फलेट है। आज मल्लिकार्जुन खड़गे जी बहुत ही पेशनेटली बोल रहे थे, hang everybody including professors. Hang them if they speak against the nation. आज अगर होते तो उनको यह दिखाती। दो प्रोफेसर कैम्पस में हैं, जिन्होंने कश्मीर सॉलिडैरिटी रैली निकाली जब उनकी सरकार थी- to show solidarity with the struggle for freedom in Kashmir and refuse to be a part of the collective conscience of this country.

एक और प्रमाण जो यूनिवर्सिटी से प्राप्त हुआ है। Abolish death penalty, burn effigy of Home Ministry, not Minister. Speak up against the judicial murder and hanging of Yakub Memon. कौन था मुम्बई में? 12 मार्च मेरी मां का जन्मदिन है, इसलिए मुझे आज भी वह दिन याद है। धमाके हुए थे। हिन्दुस्तानी भरे। आतंकवादियों ने मारने से पहले उस हिन्दुस्तानी का न धर्म पूछा, न जाति पूछी। इस पोस्टर में क्या लिखा है? Supreme Court judge, Hindu Fascist State of India. The State was scared of Yakub Memon. Our media is a communal corporate media. We are a murderous republic and our cannibal collective conscience was satiated by hanging Yakub Memon. We must rise against this judicial murder. A call to rise against the Supreme Court which you approach for bail now, a call to rise against the President of India to whom you go and implore and say, न्याय कीजिए। उनको जल्लाद कहने वाले, उनके घर पर जाकर दस्तक देते हैं, वह दरवाजा खोलकर उनका स्वागत करते हैं। यह मेरे लोकतंत्र की ताकत है। एक सज्जन यहां पर नहीं हैं। उन्होंने कहा, I am from the Communist Party. Kanhaiya is my brother. I agree. This is a poster which has the name of this child. I look at this child as a child who has been mobilized as a weapon against the State. This is a child who must not have had an idea that India is not one, but who must have been infested with this thought by those who want to bear arms to overthrow the State. It bears the name of Kanhaiya Kumar, Shahila Rashid and Rama Naga. They are all members of the Student Union. Apart from condemning the hanging of Afzal Guru, they claim it as a nervous attempt by the Congress Government. This is a notice given on the 10th of February, 2016.

On the 9th night, this transpires on the campus. On the 10th, this is a pamphlet which is stuck all across with these signatures. It says that the public meeting was also disrupted for Mahishasur martyrdom day. What is Mahishasur martyrdom day, Speaker?

Our Government has been accused and I miss today Saugata Roy and Sugata Bose in this House, champions of free speech because I want to know whether they would discuss this particular this topic which I am about to enunciate in this House on the streets of Kolkata. I dare them this. Posted on the 4th October, 2014, a statement by the SC, ST, OBC and minority students of JNU; and what do they condemn? Like I said Madam Speaker, this very pamphlet on the 10th February highlights what the Communist leaders call Mahishasur martyrdom day.

Madam, may God forgive me for reading this. Durga Puja is the most controversial racial festival where a fair skinned beautiful goddess Durga is depicted brutally killing a dark skinned native called Mahishasur, a brave self-respecting leader tricked into marriage by Aryans. They hired a sex worker called Durga who enticed Mahishasur into marriage and killed him after nine nights of honeymooning during sleep. Freedom of speech, ladies and gentlemen! Who wants to have this discussion on the streets of Kolkata, I want to know. Whether Rahul Gandhi will stand for this freedom, I want to know. For these are the students. No, they are students. What is this depraved mentality? I have no answers for it. I thought is it only because many leaders say, कि बच्चे हैं, बोल रहे हैं, इन्हें माफ़ करो। But how does this depravity get seeded in the minds of our children?

Unfortunately, the rows of the Congress Party are empty today, Madam Speaker. I have said time and again शिक्षा को रणभूमि मत बनाओ। मैंने बार-बार इस सदन में और दूसरे सदन में हाथ जोड़कर निवेदन किया लेकिन मेरी बात किसी ने नहीं सुनी। I am compelled to say this, Madam Speaker. Are these just slogans? I seek to quote a European philosopher, a Roman at that, who said:

"A nation can survive its fools, and even the ambitious. But it cannot survive treason from within. An enemy at the gates is less formidable, for he is known and carries his banner openly. But the traitor moves amongst those within the gate freely, his sly whispers rustling through all the alleys, heard in the very halls of government itself. For the traitor appears not a traitor; he speaks in accents familiar to his victims, and he wears their face and their arguments, he appeals to the baseness that lies deep in the hearts of all men. He rots the soul of a nation, he works secretly and unknown in the night to undermine the pillars of the city, he infects the body politic so that it can no longer resist. A murderer is less to fear."

अगर आज यहां मैं चाणक्य का वर्णन करती तो लोग कहते कि सैफरन है इसलिए आज एक रोमन फिलोसफर को कोट किया है और मैंने सोचा कि हमारे बच्चे ये बातें कहां से सीखते हैं। मैं आज एक प्रमाण आपके समक्ष सदन में प्रस्तुत करती हूँ जो अभी-अभी मेरे डेस्क पर आया है। यह किताब कक्षा-4 के बच्चों की डिस्ट्री की है। What are our teachers taught?

इस किताब की लेखिका हैं तिस्ता सीतलवाड़। इस किताब को कमीशन करने वाले हैं यूपीए के श्री कपिल सिब्बल साहब। वह यूपीए जिसकी चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया जी हैं। किताब में क्या लिखा है, कक्षा चार के बच्चे को क्या पढ़ाना चाहिए? I quote, Madam:

"In our text and our syllabus we continue to perpetuate the colonial legacy of portraying ancient India as synonymous with Hindu and medieval India past with the Muslim. "

I would like to quote from this book, Madam. श्री अरविन्द सावंत जी महाराष्ट्र से हैं। यह किताब टी गयी डॉन बॉस्को स्कूल, मादुंगा को the school of my colleague, Shri Piyush Goyal. I quote:

"When we teach Shivaji, Akbar, Aurangzeb as responsible educators, animators we need to ask which Shivaji do we take into the classroom. "

ऐसा नहीं है कि सिर्फ शिवाजी जी के खिलाफ लिखा।

"Congress politicians allowed the killings for three days in the Sikh riots. "

That is also taught.

"Hindu, Christian riots in Kanyakumari; how the propaganda of Hindu organizations target Christian minorities". You are teaching this to a child in the Fourth Standard. This is their idea of secular education.

History taught to Standard Sixth and I quote:

"Kashmir is a much demonized land today. That the State militates against the atrocities of the Indian State. "

You teach this to a Sixth Standard child. Are we shocked that when these children go to a university they said that कश्मीर की आज़ादी तक जंग लड़ेंगे।

श्री असादुद्दीन ओवैसी : दीनानाथ बत्रा ने क्या कहा, वह बात भी बताइए।

श्रीमती स्मृति जूबिन इरानी : आप सुन लीजिए ओवैसी साहब।

Scenario 4 on Page 5:

"Orders issued to Delhi schools after the death of Prime Minister Indira Gandhi: Check what a trainee teacher teaching English sail through her period. One of the words given to the children to draft a sentence was the word 'arrive'. Of the several children who raised their hands the one that the teacher chose to read out is a sentence, 'When a Sikh arrived in Delhi he was killed by a Hindu.'"

Scenario 2 and the title is fascinating; 'Calling breeding prejudiced minds'. This, commissioned by the UPA led by the Congress Party, is given to children in the Sixth Standard.

Scenario 3; "Teaching of History in school Boards all over Maharashtra has a single prescribed textbook on Shivaji. Teachers from the schools in Mumbai have expressed great difficulty in controlling emotions. One of them has said, the schools which have an active enrolment of Muslim students, 'I rush through the Chapter on Afzal Khan and Shivaji's confrontation. It is a politically and socially loaded connotation. I cannot meet eye to eye with my Muslims students so I start my chapter with an apology'."

There are many Afzals in my class, says this teacher teaching in Class Sixth.

I begged and pleaded, 'do not make it about us and them'. Our children are not vote banks but nobody heard me.

महोदया, जिस कमेटी ने उन सारी किताबों का निरीक्षण किया, इन किताबों के खिलाफ उस वक्त की सरकार में एनसीईआरटी ने धावा बोलकर कहा कि ये किताबें मत बांटिए, एनसीईआरटी की बात नहीं मानी गयी। वह एनसीईआरटी हमारी नहीं थी, हमारी सरकार की नहीं थी। इस कमेटी ने इन किताबों को और इसके पीछे की पूरी वास्तवता को स्टडी किया। I am compelled to say that one of the Committee members is a Muslim Vice Chancellor appointed to his post as proposed by the Congress Government, an Income Tax Officer who served under the Congress Government and now a Supreme Court lawyer. I did it so that I will not be accused of politicising something which should be a matter of concern for every Indian citizen and every parliamentarian. What do those people say about the books that they read? They said that this Committee fails to understand as to what and whose purpose is this Trust serving by quoting from Pakistani author's writing pertaining to education of Indian students to an impressionable mind of a standard VI student. This Committee was enraged when the name suggested an intention and action – Allah's army in Pakistan and Hindutva hell in Hindustan.

Madam Speaker, I have not shied away from answering any question in this House or the other. My plea is this. Across universities when the Vice Chancellors said that they want to raise their flag proudly, they were condemned. Mr. Gandhi went to Uttar Pradesh and said - सारे के सारे वीसी आरएसएस वाले हैं, शायद उनको पता नहीं है कि आज भी इस सरकार में सेंट्रल यूनिवर्सिटीज के चांसलर्स में से 20 ऐसे हैं, जिनको कांग्रेस ने नियुक्त किया, 16 वाइस-चांसलर्स ऐसे हैं, जिनको कांग्रेस ने नियुक्त किया, आज मैं चुनौती दे सकती हूँ, कांग्रेस द्वारा नियुक्त किया गया एक भी वाइस चांसलर प्रमाण के साथ आकर कहे कि मैंने भगवाकरण किया है तो मैं राजनीति छोड़ दूंगी।

आज यहां सोनिया जी नहीं हैं, उनको नहीं बोल सकती हूँ, इसी सदन में शायद, अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा था कि भारत कोई भूमि का टुकड़ा नहीं है, एक जीता जागता राष्ट्रपुरुष है। अटल जी ने कहा था -यह वंदन की घरती है, अभिनन्दन की घरती है, यह अर्पण की भूमि है, यह तर्पण की भूमि है। इसकी नदी-नदी हमारे लिए गंगा है, इसका कंकड़-कंकड़ हमारे लिए शंकर है। हम जिएंगे तो इस भारत के लिए, मरेंगे तो भारत के लिए और मरने के बाद भी गंगाजल में बहती हुई हमारी अस्थियों को कोई कान लगाकर सुनेगा तो एक ही आवाज आएगी - भारत माता की जय।

पूँन यह उठता है कि जिस अटल बिहारी वाजपेयी जी ने यह कहा, उन्होंने समर्थन किया इंदिरा गांधी जी का, दुर्गा का स्वरूप उन्हें माना है। जब राष्ट्र के वैभव के लिए इंदिरा गांधी जी ने कहा कि जाओ और इंसानियत की रक्षा करो। आज मैंने देखा, they say politics makes strange bed fellows. सुगता बोस जी जब अपना भाषण दे रहे थे, एकेडिमिकली बहुत अच्छा भाषण था, मैं भी सराहना करती हूँ। लेकिन सोनिया जी, राहुल जी, they were like compelled. They should. We all should compliment each other. They shook his hand. I only wished that Dr. Bose was here to give them a book called 'Dead Reckoning' by Sharmila Bose. Who is Sharmila Bose? She is Dr. Bose's sister, a renowned historian. In the 'Dead Reckoning' she wrote that the Bangladesh liberation war was a fallacy and that the Pakistani Army never did anything to the Bangladeshi's that Indira Gandhi went to support. इसलिए आज पूँन यह उठता है कि सत्ता इंदिरा गांधी ने भी खोई थी, लेकिन उनके बेटे ने कभी भारत की बर्बादी के नारों का समर्थन नहीं किया था।

इसलिए मेरा आग्रह है, दुर्भाग्यपूर्ण है, वैकिया जी ने जो कहा कि कई बच्चों की मृत्यु हुई, 2012 में डी रेन्युलेशन बना था यू.जी.सी. का कि एंटी डिस्क्रिमिनेशन ऑफिसर हर यूनिवर्सिटी के कैम्पस में हो। हमने वाइस चांसलर्स की मीटिंग बुलाकर आग्रह किया और उन्होंने स्वीकार किया कि एंटी डिस्क्रिमिनेशन ऑफिसर हर कैम्पस में होगा। हमने ज्युडिशियल कमीशन बनाया। उन बच्चों को तो न्याय नहीं मिला, जिन्होंने पूरा त्याग जब कांग्रेस पार्टी सत्ता में थी, लेकिन हमने पक्षपात की राजनीति नहीं की। हमने कहा कि न्याय हो, जो भी दोषी हो, उसे सूची पर चढ़ाओ। हमने ज्युडिशियल कमीशन बनाया, एहसान नहीं किया, न्याय किया और कोशिश की। यह कोशिश मैं हर दिन करती हूँ।

मेरा सबसे आग्रह है कि अगर हम शिक्षा को रणभूमि बनाएंगे, बच्चों को वोट बैंक बनाएंगे, तो जे.एन.यू. के कुछ भटके हुए छात्र तो क्या नारा देंगे, लेकिन इस देश को बर्बादी की कगार पर वह

राजनीति ले जाएगी, जो एक बच्चे की मृत्यु को भी राजनीतिक अवसर बनाकर इस्तेमाल करती है। इसलिए मेरा हाथ जोड़ कर निवेदन है कि जहां न्याय है, उसे अपना काम करने दो। जहां पुलिस है, उसे वहां अपना काम करने दो।

आज मैं आह्वान करती हूँ कि अगर राहुल गांधी स्वयं मुझे कहते कि स्मृति ईशानी चाहिए, हम दोनों मिलकर जे.एन.यू. के छात्रों से कहें कि जिस भारत की बर्बादी के तुम नारे दे रहे हो, जिस तिरंगे को लहराने में तुम्हें लज्जा आती है, उसी जे.एन.यू. के कुछ छात्र हैं जिन्होंने सरहद पर अपने प्राणों को त्यागा, ताकि तुम आज़ाद हिन्दुस्तान में बर्बादी के नारे दे सको। लेकिन राहुल जी ने ऐसा नहीं किया।

मेरा आप सबसे आग्रह है कि जहां-जहां पर आपको लगता है चुनौती है, आज अपने कंधे पर एस.सी. और एस.टी. के बच्चों के लिए फैकल्टी होने चाहिए, यही निवेदन मैंने सभी वाइस चांसलर्स से किया। I have myself requested to every Vice-Chancellor that listen to all children, to every university which functions under the aegis of Government of India; listen to children for they come with their emotional legacies and their social challenges and it is incumbent upon us to provide them refuge and a productive life. My request is help me build this nation and not destroy it from within.

Thank you.

श्री ए.पी. जितेन्द्र रेड्डी: अध्यक्ष जी, जैसा इन्होंने कहा है, मैंने विस्तार से उनकी बात सुनी है। उन्हें जो विस्तार से बोलना था, वह इन्होंने कहा है। I would like to make one thing clear that we did not politicalise that issue. We were in the midst of elections. जे.एच.एम.सी. के चुनाव चल रहे थे। I was in charge of that Gachboul area when the elections were going on and the university was under me and if we really wanted to provoke the students there when they were giving slogans on BJP, we did not do that but instead we controlled them. Our hon. Chief Minister very categorically gave instructions that law and order should be maintained. If we would have provoked them there, then the officers and all others would have been vandalized. We did not do that. The Government may take a proper report. पोस्टमार्टम रिपोर्ट मंगाकर देखें। Look at the post-mortem report. We came to know about it only after the death incident took place. After that proper action was taken and we controlled the mob there. The allegation that has been put on us is absolutely wrong.

I am saying this only because she has to keep the record straight. Madam, we were out of the scene. We were in the midst of elections and we did not want to side anybody but at the same time, we have really taken care of Shri Dattatreya there. Our Chief Minister has given proper instructions to take care of him.

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): अध्यक्ष जी, सदन में जो चर्चा हो रही है, आपने इस संबंध में मुझे बोलने का निर्देश दिया है। मैं समझता हूँ कि हमारी सहयोगी स्मृति ईशानी ने सदन में माननीय सदस्यों के विचार सुनने के बाद अपनी स्पीच दी है, उसकी जितनी भी सराहना की जाए, वह कम है। मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि स्मृति ईशानी की यह स्पीच संसद के लिए डी आई-ओपनिंग नहीं है, बल्कि मैं समझता हूँ कि सारे देश के लिए आई-ओपनिंग स्पीच है। मैं बैठे-बैठे यही सोच रहा था कि मैं क्या बोलूँ क्योंकि बोलने के लिए कुछ ऐसा शेष नहीं बचा है जिसे मैं सदन के सामने रखूँ।

मैं जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के बारे में जरूर कहना चाहूँगा कि यह हमारे देश की सर्वोत्तम शिक्षण संस्थानों में से एक है। मैं यह मानता हूँ कि यह सेंट्रल आफ एक्सिस है। हमारी सरकार यह कभी नहीं मानती है कि जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी सेंट्रल आफ एंटी नेशनल एक्टिविटीज है क्योंकि समाज के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जो आज अपनी पूंजी भूमिका निभा रहे हैं चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे प्रशासन का क्षेत्र हो, चाहे राजनीतिक क्षेत्र हो जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय ने बहुत ही प्रखर मेधा के धनी लोगों को यहां अपनी जिम्मेदारी निभाने का अवसर दिया है। इस विश्वविद्यालय के बारे में हमारी सरकार की जो धारणा है, उस धारणा को मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूँ। जहां तक छात्रों का सवाल है, छात्र किसी भी विश्वविद्यालय की अथवा किसी भी शिक्षण संस्था की पूंजी होता है, बहुत बड़ी निधि होता है। छात्रों के जीवन के संबंध में भी मैं जानता हूँ क्योंकि मैं भी छात्र रहा हूँ और इस संसद में बैठने वाले सारे के सारे लोग छात्र हैं। छात्र का जीवन बहुत आंदोलनकारी होता है। जुलूम और अत्याचार हो और उसका विशेष हो तो मैं समझता हूँ कि यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की भी एक सीमा होती है और उस मर्यादा की सीमा का यदि कोई अतिक्रमण यदि कोई करता है तो कोई भी जागरूक समाज उसे किसी भी सूत्र में माफ नहीं करेगा।

जो कुछ भी जवाहर लाल युनिवर्सिटी में हुआ है और जो भी कार्रवाई पुलिस के द्वारा की जा रही है, उसमें सरकार की तरफ से हस्तक्षेप नहीं है। सेडिशन का चार्ज लगना चाहिए या नहीं, इस पर बहस हो सकती है। लेकिन मैं समझता हूँ कि हम लोगों को इस संबंध में बहस करने की जरूरत नहीं है। पुलिस जो भी इन्वेस्टिगेशन करेगी, सही करती है तो मैं समझता हूँ कि देश की अदालत जस्टिफाई करेगी। यदि गलत करती है तो फिर सेडिशन का चार्ज अदालत हटा सकती है, उसको सारे आरोपों से बरी कर सकती है। लेकिन उस संबंध में मैं समझता हूँ कि कोई बहस करने का औचित्य नहीं है। सदन को मैं इतना आश्चर्य जरूर करना चाहता हूँ कि किसी भी निर्दोष छात्र को परेशान करने की पुलिस को इजाज़त नहीं दी जाएगी। हम किसी का हेरसमेंट नहीं होने देंगे, इतना मैं सदन को आश्चर्य करना चाहता हूँ।

पटियाला हाउस कोर्ट में जो कुछ भी हुआ है, पुलिस उस संबंध में कार्रवाई कर चुकी है और आगे भी कार्रवाई कर रही है। जो भी उसमें दोषी हैं, वह बख्शे नहीं जाएंगे, यह भी मैं आपके माध्यम से सदन को आश्चर्य करना चाहता हूँ।

मैं इतना जरूर कहना चाहूँगा कि दिनांक 9 फरवरी, 2009 को जो भी नारे जेएनयू कैम्पस में लगाए गए, उससे सारा देश असहमत है। पूरे सदन ने बहुत ही कड़े शब्दों में इसकी निंदा की है। पूरा का पूरा केस इस समय सबजूडिस है। मैं समझता हूँ कि न्यायालय के फैसले की हमें प्रतीक्षा करनी चाहिए।

आज के अवसर पर मैं समझता हूँ कि इससे ज्यादा मुझे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। मेरे संबंध में भी एक-दो माननीय सदस्यों ने कुछ बातें कही हैं। लेकिन मैं सदन में यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि जब भी मैं कुछ बोलता हूँ तो सोच-समझकर बोलता हूँ, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तथ्यों के आधार पर बोलता हूँ, निराधार कभी नहीं बोलता हूँ, बस इतना ही कहना चाहूँगा, क्योंकि हमने भी गोपनीयता की शपथ ली है। इसलिए आज के अवसर पर इससे ज्यादा कुछ न कहते हुए मैं पुनः अपनी सहयोगी श्रीमती स्मृति ईशानी को आज की स्पीच के लिए बधाई देते हुए अपना संबोधन समाप्त करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष : ठीक है, बहुत अच्छा संबोधन है। अब हम शून्यकाल लेंगे, जिसमें केवल 20 लोगों के नाम हैं।

â€¦(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : दुस्रंत जी, अब इस पर कुछ नहीं बोलना है। हम केवल 20 लोगों का शून्यकाल लेंगे, उससे ज्यादा नहीं लेंगे। डा.किरिट सोलंकी, आप बोलिये।

